नई समाजवादी क्रान्ति का उद्घोषक

बिगुल

मासिक समाचार पत्र • वर्ष 4 अंक 4
मई 2002 • तीन रुपये • बारह पृष्ठ

मई दिवस का सन्देश

दो ही रास्ते- लड़ने की तैयारी करो और जीतने के लिए लड़ो! या फिर एक के बाद एक हुकूमती जमातों के हमले झेलते रहो और गुलामी के अंधेरे में घुट-घुटकर मरो!

- सम्पादकीय

अभी यह नयी शताब्दी का दूसरा ही मई दिवस है लेकिन दुनिया भर के मजदूरों ने इस बात का संकेत दे दिया है कि वे डण्डे के जोर पर साधे गये पशुओं और चाबुक की फटकार पर खटने वाले गुलामों जैसी जिन्दगी चुनने के लिए तैयार नहीं हैं, वे लम्बे संघर्षों और अकूत कुर्बानियों से हासिल अपने अधिकारों को एक के बाद एक लगातार छिनते जाने को अब और झेलने के लिए तैयार नहीं हैं। वे इसके लिए तैयार नहीं है कि पूंजीपति नस-नस से रक्त निचोड़ने के बाद उनकी हड्डी तक का पाउडर बनाकर बाजार में बेचता रहे। भुखमरी, तबाही, बेरोजगारी, आकाश पाताल के अन्तर जैसी असमानता, युद्ध और फासिज्म इनके खिलाफ अतीत में भी लड़कर वह समाजवाद का परचम लहरा चुका है। अब वह समझता जा रहा है कि एक बार फिर उसी परचम को उठाकर नये सिरे से लड़ना होगा। समाजवाद की पिछली हार को अन्त मानकर बैठ जाना उन्हें मंजूर नहीं। इसलिए वे फिर जाग रहे हैं, उठ रहे हैं और विश्वव्यापी महासमर के नये चक्र में जूझने के लिए कमर कस रहे हैं।

बरसों बाद यह मंजर सामने आया है कि मई दिवस के मौके पर सिर्फ पिछड़े और गरीब देशों में ही नहीं बल्कि फ्रांस, इटली, जर्मनी, ब्रिटेन और रूस जैसे देशों की सड़कों पर भी लाखों लाख मजदूरों का रेला लाल परचम लहराते हुए सड़कों पर बाढ़ के मानिन्द उमड़ पड़ा। चीन में भी मजदूरों ने नकली समाजवाद के खिलाफ अपने गुस्से का इजहार किया।

इसके करीब एक माह पहले इटली की राजधानी रोम की सड़कों पर मजदूर विरोधी नीतियों के खिलाफ 15 लाख मजदूर सड़कों पर उमड़ पड़े थे। उसके कुछ ही दिनों बाद उन्होंने दो दिनों की हड़ताल में पूरे देश को ठप्प कर दिया था।

पिछले लगभग दो वर्षों के दौरान दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में डब्ल्यू.टी.ओ., आई.एम.एफ, विश्व बैंक और साम्राज्यवादी देशों के भूमण्डलीकरण कुचक्र के खिलाफ अविराम प्रदर्शनों हड़तालों और झड़पों का सिलसिला जारी रहा। अर्जेण्टीना का जनउभार अभी थमा नहीं है। नेपाल, पेरू, फिलिपीन्स, कोलम्बिया, टर्की आदि देशों में क्रान्तिकारी वामपंथी शक्तियों का सशस्त्र संघर्ष लाख कोशिशों के बावजूद कुचला नहीं जा सका है। जिन संघर्षों को दबा दिया जाता है, वे दूनी ताकत के साथ फिर उठ खड़े होते हैं। मेक्सिको का चियापास किसान संघर्ष अभी भी जारी है और यह सबकुछ भविष्य के महज कुछ पूर्व संकेत हैं।

भूगर्भ की महज कुछ हलचलें हैं जो ज्वालामुखी के फिर से जागने के संकेत दे रही हैं। असली मंजर तो शायद कुछ वर्षों बाद सामने आये, पर हाल के वर्षों में कुछ ट्रेलर प्रदर्शित होते रहेंगे।

तय है कि आने वाले दिनों में पूरी दुनिया इतने भारी उथल-पुथल से गुजरने वाली है, जितना कि उसने पहले कभी नहीं देखा। पूंजीवाद के खिलाफ साम्राज्यवादियों के वर्चस्व के खिलाफ यह लड़ाई फैसलाकुन होगी, इसलिए ज्यादा जटिल और कठिन होगी और इसलिए लाजिमी तौर पर इनकी तैयारी की प्रक्रिया भी जटिल, कठिन और लम्बी होगी।

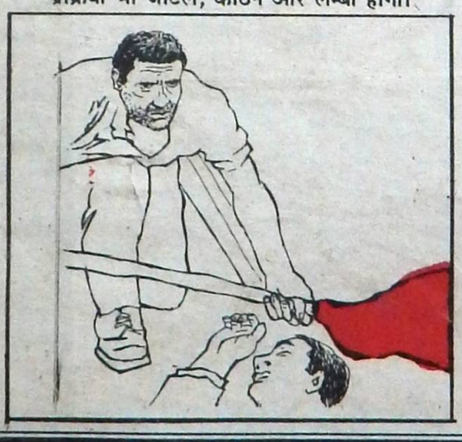

अब जो लड़ाई होगी वह फैसलाकुन होगी!

एक बार फिर, एकदम उन्नीसवीं शताब्दी की तरह, श्रम और पूंजी की ताकतें एकदम आमने सामने खड़ी हैं। फर्क सिर्फ है तो यह कि अब विश्व इतिहास उस दौर में प्रविष्ट हो चुका है कि इन दोनों में से किसी एक के पीछे हटने या आंशिक हार जीत के बाद कुछ विराम ले पाने की गुंजाइशें न के बराबर रह गयी हैं। भूमण्डलीकरण की वर्तमान नीतियां विश्वपूंजीवाद के तरकस का आखिरी तीर है। दीर्घकालिक मंदी के संकट और पूंजी के अजीर्ण रोग से परेशान विश्व के पूंजीपति चौधरियों ने सस्ते श्रम, प्राकृतिक संसाधन और अपने माल के बाजार की तलाश में पूरी दुनिया को मथ डाला है और ज्यादा से ज्यादा मुनाफा निचोड़ने की हर संभव तरकीब आजमाते हुए सर्वहारा वर्ग के इंसान के रूप में जीने की बुनियादी शर्तों को भी छीनने की शुरूआत कर दी है। अब पूंजीवाद को यदि अपने नियमों का पालन करना है तो एकमात्र इसी रास्ते पर चलना है। दूसरी ओर,दुनिया की पचहत्तर प्रतिशत आम मेहनतकश अवाम की आबादी को यदि लगातार पीछे हटते हुए अपने इंसान होने का हक तक नहीं गंवा देना है तो उसे लड़ना ही है। यही एकमात्र रास्ता बचा है। यह तस्वीर अब ज्यादा से ज्यादा साफ होती जा रही है।

तय है कि आने वाले दिनों में पूरी दुनिया इतने भारी उथल-पुथल से गुजरने वाली है, जितना कि उसने पहले कभी नहीं देखा। पूंजीवाद के खिलाफ साम्राज्यवादियों के वर्चस्व के खिलाफ यह लड़ाई फैसलाकुन होगी, इसलिए ज्यादा जटिल और कठिन होगी और इसलिए लाजिमी तौर पर इनकी तैयारी की प्रक्रिया भी जटिल, कठिन और लम्बी होगी। तैयारी के दौरान भी कई बार ठहराव और निराशा के छोटे-छोटे दौर आयेंगे। लेकिन हमें बिना रुके, बिना धैर्य खोये मेहनतकश जनता को क्रान्तिकारी लाइन पर संगठित करने, युद्ध के सेनापति तैयार करने और छोटे-छोटे पूर्वाभ्यासों का सिलसिला जारी रखना होगा। क्योंकि कोई और रास्ता भी नहीं है या..तो समाजवाद या फिर बर्बरता ये दो ही रास्ते हैं। और हम भला भरपूर हौसला क्यों न रखें। दुनिया की अस्सी फीसदी आम जनता

(पेज 6 पर जारी)

भीतर के पन्नों पर

1. मजदूरों पर बरपा पुलिस का कहर-पृ. 3
2. पार्लमेन्ट की जीवनगाथा - पृ. 8
3. गुजरात-2002- पृ. 9
4. पार्टी की बुनियादी समझदारी - पृ. 7
5. दुनिया भर के मजदूरों ने जुझारू ढंग से मनाया मई दिवस -पृ. 12
6. ट्रेड यूनियन नेतृत्व से मजदूरों का सवाल- पृ. 12

होण्डा फैक्ट्री रुद्रपुर में शिफ्टिंग व अवैध तालाबंदी के खिलाफ लड़ाई जारी

मजदूरों के हौसले बुलन्द, क्षेत्र की जनता का व्यापक समर्थन

शासन-प्रशासन जापानी साम्राज्यवादी सरगना होण्डा के टट्टू की भूमिका में

स्थानीय संवाददाता

रुद्रपुर, 3 मई। रुद्रपुर स्थित जेनरेटर निर्माता होण्डा फैक्ट्री के मजदूरों का जापानी साम्राज्यवादी डकैतों के सरगना से जारी संघर्ष अब एक नये मुकाम पर पहुंच गया है। इस आन्दोलन में जहां एकतरफ यहां के मजदूर बड़ी ही योजनाबद्ध तरीके से एक-एक कदम आगे बढ़ा रहे हैं। अपने संघर्ष की धार को पैना करते जा रहे हैं, वहीं प्रबंधन की बौखलाहट बढ़ती जा रही है और शासन-प्रशासन जापानी साम्राज्यवादियों के सामने घुटने टेक चुका है। इलाके के व्यापक जनसमर्थन और इस संघर्ष के जनांदोलन की शक्ल अख्तियार करते जाने के कारण सरकार और उसके प्रशासनिक अमलों में बेचैनी बढ़ती जा रही है।

होण्डा फैक्ट्री की किस्तों में शिफ्टिंग के खिलाफ 'श्रीराम होण्डा श्रमिक संगठन' के नेतृत्व में यहां के मजदूर विगत एकवर्ष से संघर्षरत हैं। यहां के श्रमिक संगठन ने कारखाने के भीतर व्यापक एकता बनाने के साथ ही इलाकाई पैमाने पर मजदूरों कर्मचारियों और व्यापक आम जनता के बीच भी समर्थन जुटाने का प्रयास किया। यही कारण है कि आज यह आंदोलन महज होण्डा श्रमिकों का ही आन्दोलन नहीं रह गयाहैं वरन पूरे क्षेत्र के मेहनतकशों का आन्दोलन बन चुका है। पिछले लगभग दो दो माह से कारखाने में जारी

(पेज 10 पर जारी)

छपते छपते

जन आंदोलन की शुरूआत एवं मजदूरों की एक बड़ी जीत

1. 7 मई को पूरे तराई के इलाके में मजदूरों कर्मचारियों, छात्रों-नौजवानों, बुद्धिजीवियों-स्त्रियों ने काली पट्टी बांधकर एक साथ जोरदार प्रदर्शन किया।

2. कारखाने के 200 मीटर के दायरे में धरना प्रदर्शन न करने का स्टे ऑर्डर हाईकोर्ट से खारिज हो गया।

3. कोर्ट द्वारा कारखाने से कोई मशीन हटाने, किसी तरह की तोड़-फोड़ करने एवं स्थिति में कोई परिवर्तन लाने पर रोक लगा दी है।

बजा बिगुल मेहनतकश जाग, चिंगारी से लगेगी आग!

आपस की बात

ये खत मजदूर भाइयों के नाम

~~यह खत मजदूर भाइयों के नाम~~

आदरणीय मजदूर भाइयो एवं बहनो

मुझे बहुत ही दुखी हृदय के साथ यह खत लिखना पड़ रहा है कि हमारे लोगों की यह हिन्दुस्तानी सरकार सबसे ज्यादा लूट एवं शोषण मजदूर एवं किसान (गरीब) भाइयों का कर रही है। अभी-अभी विधान सभा का चुनाव हुआ है। जिसमें सभी पार्टियों के मुखिया लोग मुहमांगा रकम लेकर प्रत्याशियों को टिकट दिया है। अब जीत जाने के बाद वह लोग उतना रकम (जितना खर्च हुआ) निकालने के चक्कर में पड़ गये हैं। उनका लूटने का सबसे पहला ध्यान गरीब किसान मेहनतकश मजदूर भाइयों के ऊपर केन्द्रित हो गया है। सभी बरसाती मेंढकों (ददू) के जैसे अपने अपने बिल (सुराग) से निकले थे और अब अपने-अपने बिल में समा गये है। इन मेढकों का मालिक वित्त मन्त्री यशवन्त सिन्हा ने भी अपना शोषण करने का ध्यान मजदूर किसानों पर केन्द्रित कर दिया है। जो बजट पेश किया है उसमें हम किसानों पर केन्द्रित कर दिया है। जो बजट पेश किया है उसमें हम मेहनतकश मजदूर एवं गरीब किसान भाइयों का शोषण किया गया है।

मिट्टी का तेल एवं रसोई गैस में एवं रेलवे किराया में जो बढ़ोतरी किया है। इस औद्योगिक शहर लुधियाना में जो हम मेहनतकश मजदूर भाई लगभग 13.14 लाख की तादाद (संख्या) में रहते हैं इनमें हम लोगों जीने का मुख्य आधार मिट्टी तेल है जो की हमें पहले ही 20.25 रुपये प्रति लीटर खरीदना पड़ता था अब और ही महंगा हो गया है।

अतः इन तेलों से उत्तर प्रदेश के एवं विहार के कुछ हिस्सों में तेल से दिया (दीपक) जलाकर गुजर बसर लोग कर रहे हैं इसलिए की वहां पर बिजली की व्यवस्था नहीं है। जबकि वहां पर [illegible] तेल सिर्फ त्योहारों-त्योहारों पर ही दिये जाते हैं सरकारी डिपो द्वारा बाकी महीनों का तेल इस काले अंग्रेजों के चमचे बेलचे द्वारा बेच दिया जाता है ब्लैक में।

तथा शोषण जारी रहता है इस लुधियाना शहर के मालिकों द्वारा मालिक और सरकार आपस में बैठकर तय करते है कि कम से कम श्रमिकों को दो वक्त की रोटी खाने के लिए 20.85 रुपये दिया जाय और यहां आकर 1000,1200 रुपये दे करके काम करवा रहे है। अपना अधिकार मांगने पर थपड़ मार के, गालियां दे करके बिना रुपये दिये भगा देते हैं। मजबूरन हमें डरते हुए यूनियन द्वारा केस करना पड़ता है। कहानी वही सामने आ जाता है कि जितने का मुर्गी नहीं उतने का मसाला। किरत विभाग (लेबर दफ्तर) में बार-बार तारीख पड़ती है मालिक हाजिर नहीं होता है। हाजिर भी कैसे हो किरत विभाग के सभी लेबर इन्सपेक्टर या कर्मचारी अपनी तनख्वाहे बांधे हुए हैं मालिकों से इसलिए मजदूरों का साथ न देकर के मालिकों का पैर पकड़ने के लिए तत्पर रहते हैं।

मार खाने के बाद हमें पुलिस चौकी या थाने जाना पड़ता है मगर वहां पर बिना रिश्वत दिये हमारा रिपोर्ट दर्ज नहीं होता है। यही हाल रेलवे विभाग के भ्रष्ट अधिकारियों का है अगर 170रुपये का टिकट है तो दो सौ रुपये देने पर बकाया रुपया मजदूरों को लौटाया नहीं जाता है। अगर ज्यादा बहस करना चाहते हैं तो वहां पर पुलिस खड़े होते हैं और डन्डे मारकर चौकियों में बन्द कर देते हैं। और आप मजदूरों से 10 रुपये से 100,100 रुपये तक लेकर टिकट कटाते है। एक टिकत कटाने के लिए 4-4 घन्टे लाइन में खड़ा होना पड़ता है।

वही हाल ई.एस.आई. हास्पिटल का है जिन मजदूर भाइयों का डाक्टरी कार्ड बना है उनका रुपयों पहले सिर्फ तनख्वाह से ही काटा जाता था मगर अब टाइम साथ में जोड़कर फिर काटा जाता है इलाज के लिए हमें हास्पिटल जाना पड़ता है वहां पर पता चलता है कि डाक्टर ही नहीं है अगर है भी तो दवाई नहीं है मगर मजबूरन हमें इलाज कराना भी पड़ता है तो मामूली-सा बुखार का दवाई भी बाहर से ही खरीदना पड़ता है। डाक्टर लोग लिख देते है। दवाई बाहर से ले लेना कह देते है।

यही हाल सिविल हास्पिटल का है वहां पर मरीजों को रुपये दवाई के लिए नहीं होने पर मरीजों को बाहर निकाल दिया जाता हैं। एक घटना बिहार का रहने वाला कल्लू नामक मजदूर राधा स्वामी रोड चेत सिंह नगर में रहता था जिसकी मौत चुनावी रैली के दौरान कुछ अज्ञात लोगों के पिटाई द्वारा हो गई जिसका कोई दोसी करार नहीं दिया गया जबकी मुजरिम पकड़ा भी गया था लोगों द्वारा इस मृतक का शव पोस्टमार्टम के लिए सिविल हास्पिटल गया।पोस्टमार्टम करने के बाद वहां के भ्रष्ट अधिकारियों द्वारा आठ सौ 800/रुपये लेने के बाद शव उसके परिजनों को सौंपा गया।

सो मजदूर दोस्तो इन सभी बातों को सक्षम बनाने के लिए हमें मजदूर आवाजों को इकट्ठा करना होगा और शहीद भगत सिंह के बताये गये मार्गदर्शनों पर चलते हुए संघर्ष के लिए हमें बिगुल बजाना होगा।

धन्यवाद

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ

ए.के. सिंह

आदरणीय संपादक

आपके मासिक समाचार पत्र वर्ष 4 अंक 1 में प्रकाशित मजदूर आंदोलन को नई धार देने के लिये ट्रेड यूनियनों में जनवाद बहाल करो! शीर्षक लेख के सन्दर्भ में इस पत्र द्वारा कुछ स्पष्टीकरण देना चाहता हूं। तराई क्षेत्र में जिन दो यूनियनों के सन्दर्भ में जो बात लिखी गई हैं उनमें एक इस्टर इण्डस्ट्रीज इम्पलाइज यूनियन (इंटक) है। जिसके अध्यक्ष श्री दान बहादुर तथा महामंत्री श्री मनराल जी हैं। जो पिछले 11 वर्षों से अपने पद पर हैं। वे कारोबार करके जीवन यापन करते है तथा कम्पनी से निष्कासित हैं। लेखक द्वय श्री किशन लाल/ महेश जोशी जी वे उक्त तथ्य को उद्घोषित करते समय इस्टर इण्डिया इम्पलाइज यूनियन की संग्रामी इतिहास तथा इन दोनों व्यक्तियों की भूमिका को जानने की कोशिश नहीं की है। यूनियन मजदूर वर्ग द्वारा गठित किया जाता है। मजदूर वर्ग से नेता चुना जाता है अगर व्यक्ति ईमानदार तथा कर्मठ होता है तो बार-बार पदासीन होने में कोई बुराई नहीं होता, जनवादी व्यवस्था में भी ऐसा होता आया है। जनवादी सोवियत रूस या चीन जैसे राष्ट्रों में कई उदाहरण है कि एक व्यक्ति पार्टी या देश का सर्वोच्च पद पर कई बार निर्वाचित हो। इस्टर प्रबन्धन तंत्र एक भेड़िये के समान है जो मजदूर वर्ग को शोषण करने का नित्य नया फार्मूला तैयार करता रहता है। मजदूर यूनियन को खत्म करने के लिये सन् 1990 में 18, सन् 1991 में 20 तथा सन् 2001 में 28 संग्रामी साथियों को कारखाने से अलग कर चुका है जिसमें अधिकांश यूनियन पदाधिकारी रहे हैं। ये दोनों व्यक्ति आज भी मजदूर हैं। इनके निष्कासन सम्बन्धित मामला कोर्ट के आधिनस्त है। व्यक्ति का राजनैतिक जीवन उसका अपना व्यक्तिगत मामला है। मजदूर वर्ग का हित साधक किसी राजनैतिक संस्था से जुड़ा हो यह मामला गौण रहता है। मजदूर यूनियन मजदूर हितैषी की होती है। इस्टर इण्डिया इम्पलाइज यूनियन मजदूर यूनियन है।

इस्टर इण्डिया इम्पलाइज यूनियन से पाठक का एक सदस्य के रूप में सम्बन्ध है तथा आपकी जनवादी ट्रेड यूनियनों की तरह इसका संचालन होता है। मजदूर संघर्ष गतिशील रहे इसका मुख्य उद्देश्य है। इस पत्र के माध्यम से श्री किशन लाल/महेश जोशी का आभार जताने की कोशिश कर रहा हूं क्योंकि उन दोनों ने आधी अधूरी ही सही इस्टर इण्डिया इम्पलाइज यूनियन का उल्लेख अपने लेख में किया है।

– एक पाठक

प्रिय भाई

बिगुल का अंक मिल रहा है लगातार। आपके साहस और मेहनत की दाद देता हूं। वैचारिक प्रतिबद्धता और सरोकार के सपने जिंदा रखकर जो कारगार है वह निश्चय ही प्रशंसनीय है। आज भगवाधारियों के डर से बहुत सारे बुद्धिजीवियों ने पाला बदल दिया है या तात्कालिक फायदे के लिए प्रगतिशील आंदोलन एवं मार्क्सवाद के नजरिये को खारिज कर देने की कोशिश बहुत ही खतरनाक है। जबकि सच्चाई है कि इसकी प्रासंगिकता कभी खत्म नहीं होगी।

- महेश अंजुम बोकारा

आप और हम

बन्द गोलाकार घेरे में
दो तरफ आमने-सामने
आप और हम खड़े हैं
बीच में लगा दी गई है
कटिले तारों की बाड़।
आप बुद्धिजीवी हैं
हम श्रमजीवी हैं
आप बुद्धि बेच रहे हैं
हम श्रम बेच रहे हैं
और खरीदार को ...
अपने पेट की चिन्ता है
वह तो आप और हम दोनों को
क्रेता की दृष्टियों से देखेगा।
हमें डांटकर और आपको
सहलाकर .....पुचकार कर
चन्द टुकड़े रोटियां फेंकेगा।
आप और हम
इस कुक्कुर-झपट में फंसकर
गुर्राते, भौंकते, एक दूसरे को
काटते, नोंचते
और वह पूंजीपति ......
दूर खड़ा, मन्द-मन्द मुस्कुरायेगा।

– विजय कुमार सिंह
इस्टर इण्डस्ट्रीज लि., चिप्स प्लांट चारुबेटा, खटीमा, ऊधमसिंह नगर उत्तरांचल प्रदेश।

संयुक्त मजदूर संघर्ष समिति में जनवादी मनोवृत्ति को विकसित करना होगा

तराई की ट्रेड यूनिट तथा मजदूर वर्ग उत्तरांचल प्रदेश का तराई भू भाग पूरे देश में खेती बारी एवं कृषि उपज के लिये प्रसिद्ध है वन-भूमि भी काफी इलाके में फैला है। तराई विकास के इतिहास को देखने पर यह काफी पुराना नहीं लगता। देश की बढ़ती आबादी तथा अन्य भागों से किसान-मजदूर का पलायन इस क्षेत्र में विकास का मुख्य आधार बना। इलाके में आये लोग प्रारम्भिक कष्टों के झेलने के बाद क्षेत्र को मानवीय रहने योग्य बना दिया तो बड़े-बड़े सम्पदाशील लोगों की गिद्ध दृष्टि इस कृषि योग्य क्षेत्र पर लगी। सरकारी गलत नीतियों के फलस्वरूप यहां बड़े-बड़े फार्म बनाये गये। स्वाभाविक है क्षेत्र के खेतीहर मजदूर वर्ग को संगठित होने तथा अपने बलबूते पर खेती करने का अवसर विलुप्त हो गया। क्षेत्र में दलाली-प्रथा का बोलबाला स्वतः उत्पन्न हो गया आद्योगिक इकाईयों के रूप में कृषि उपज से सम्बन्धित उद्योग चीनी मिलों की स्थापना की गईं।

(पेज 4 पर जारी)

बिगुल का स्वरूप, उद्देश्य और ज़िम्मेदारियां

1. 'बिगुल' व्यापक मेहनतकश आबादी के बीच क्रान्तिकारी राजनीतिक शिक्षक और प्रचारक का काम करेगा। यह मजदूरों के बीच क्रान्तिकारी वैज्ञानिक विचारधारा का प्रचार करेगा और सच्ची सर्वहारा संस्कृति का प्रचार करेगा। यह दुनिया की क्रान्तियों के इतिहास और शिक्षाओं से, अपने देश के वर्ग संघर्षों और मजदूर आंदोलन के इतिहास और सबक से मजदूर वर्ग को परिचित करायेगा तथा तमाम पूंजीवादी अफवाहों-कुप्रचारों का भण्डाफोड़ करेगा।

2. 'बिगुल' देश और दुनिया की राजनीतिक घटनाओं और आर्थिक स्थितियों के सही विश्लेषण से मजदूर वर्ग को शिक्षित करने का काम करेगा।

3. 'बिगुल' भारतीय क्रान्ति के स्वरूप, रास्ते और समस्याओं के बारे में क्रान्तिकारी कम्युनिस्टों के बीच जारी बहसों को नियमित रूप से छापेगा और स्वयं ऐसी बहसें लगातार चलायेगा ताकि मजदूरों की राजनीतिक शिक्षा हो तथा वे सही लाइन की सोच-समझ से लैस होकर क्रान्तिकारी पार्टी के बनने की प्रक्रिया में शामिल हो सकें और व्यवहार में सही लाइन के सत्यापन का आधार तैयार हो।

4. 'बिगुल' मजदूर वर्ग के बीच लगातार राजनीतिक प्रचार और शिक्षा की कार्रवाई चलाते हुए सर्वहारा क्रान्ति के ऐतिहासिक मिशन से उसे परिचित करायेगा, उसे आर्थिक संघर्षों के साथ ही राजनीतिक अधिकारों के लिए भी लड़ना सिखायेगा, दुअन्नी-चवन्नीवादी भूजाछोर "कम्युनिस्टों" और पूंजीवादी पार्टियों के दुमछल्ले या व्यक्तिवादी-अराजकतावादी ट्रेडयूनियनबाजों से आगाह करते हुए उसे हर तरह के अर्थवाद और सुधारवाद से लड़ना सिखायेगा तथा उसे सच्ची क्रान्तिकारी चेतना से लैस करेगा। यह सर्वहारा की कतारों से क्रान्तिकारी भरती के काम में सहयोगी बनेगा।

5. 'बिगुल' मजदूर वर्ग के क्रान्तिकारी शिक्षक, प्रचारक और आह्वानकर्ता के अतिरिक्त क्रान्तिकारी संगठनकर्ता और आन्दोलनकर्ता की भी भूमिका निभायेगा।

बिगुल यहां से प्राप्त करें

♦ शहीद पुस्तकालय, डा. दूधनाथ, जनगण होम्यो सेवा सदन, मर्यादपुर, मऊ ♦ मौर्या बुक स्टाल, सआदतपुरा (निकट रोडवेज), मऊनाथभंजन, मऊ ♦ जनचेतना, जाफरा बाजार, गोरखपुर ♦ विजय इन्फारमेशन सेन्टर, कचहरी बस स्टेशन, गोरखपुर ♦ विश्वनाथ मिश्र, नेशनल पी.जी. कालेज, बड़हलगंज, गोरखपुर ♦ जनचेतना, डी 68, निरालानगर लखनऊ ♦ जनचेतना स्टाल, काफी हाउस के पास, हजरतगंज, लखनऊ, (शाम 5 से 8·30) ♦ राहुल फाउण्डेशन, 69, बाबा का पुरवा, पेपरमिल रोड, निशातगंज, लखनऊ ♦ विमल कुमार, बुक स्टाल, निकट नीलगिरि काम्प्लेक्स, ए ब्लाक, इंदिरानगर, लखनऊ ♦ रामपाल सिंह, भारतीय जीवन बीमा निगम, आवास विकास, रुद्रपुर (ऊधमसिंहनगर) ♦ रवीन्द्र कुमार, भारतीय जीवन बीमा निगम, शाखा कार्यालय, पन्तनगर ♦ प्रोग्रेसिव बुक सेंटर, विश्वनाथ मंदिर गेट, बी.एच.यू. वाराणसी ♦ राजीव वर्मा स्टूडेण्ट एजुकेशनल सेंटर, मैनाताली (पुलिस चौकी के पास), मुगलसराय, जिला-चन्दौली ♦ राजेन्द्र प्रसाद, रेणु मेडिकल की गली, मुख्य सड़क, रेणुकूट, सोनभद्र ♦ सत्यम वर्मा, 81, समाचार अपार्टमेंट, मयूर विहार-एक, दिल्ली ♦ ललित सती, एल.आई.सी., फैज रोड शाखा, दिल्ली ♦ नई किरण पुस्तक भंडार, एफ-56, हरकेश नगर, ओखला, नई दिल्ली ♦ डी. के. सचान, एस.एच.- 272, शास्त्रीनगर गाजियाबाद ♦ सुनील कुमार सिंह, सेक्टर-12 बी, 3159, बोकारो इस्पातनगर, बोकारो ♦ गणपतलाल, ग्राम काजी रसूलपुर, पो.-तेघड़ा, बेगूसराय ♦ पीपुल्स बुक हाउस, पटना कालेज के सामने, पटना ♦ समकालीन प्रकाशन (प्रा.) लि. पुस्तक बिक्री केन्द्र, आज़ाद मार्केट, पीरमुहानी, पटना ♦ विमर्श, 22, स्वास्तिक काम्प्लेक्स, रसल चौक ,जबलपुर ♦ नरभिन्दर सिंह, द्वारा डा. सुखदेव हुन्दल, ग्रा/पो. सन्तनगर, जिला-सिरसा ♦ पंकज, प्लाट नं. 33, सेक्टर-15, सोनीपत (हरियाणा) ♦ सुखविंदर द्वारा कॉ0 दशरथ लाल, मकान नं 14, लेबर कॉलोनी, गिल रोड, लुधियाना (पंजाब) ♦ राकेश गोरखा, सरस्वती पुस्तक मंदिर, प्रधान नगर, सिलीगुड़ी, दार्जीलिंग ♦ बुक मार्क, 6, बंकिम चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता ♦ शर्मा बुक स्टाल, थाना रोड, चराली, तिनसुकिया नेपाल ♦ विश्व नेपाली पुस्तक सदन, श्रवनपथ, बुटवल, रुपनदेई, नेपाल ♦ विशाल पुस्तक सदन, बिजुवार बाजार, प्यूठान राप्ती अंचल ♦ विशाल पुस्तक पसल, अस्पताल लाइन, बुटवल, लुम्बिनी, नेपाल ♦ लक्ष्मी नारायण मिश्र, 853, हिरनमगरी, सेक्टर 4, पूजानगर, उदयपुर (राज.)

ई. डब्लू.एस. कालोनी के मजदूरों पर बरपा पुलिस का कहर

बिगुल प्रतिनिधि

लुधियाना के ई.डब्लू.एस. कालोनी में रहने वाले एक मजदूर अमरजीत का 8 साल का बेटा 23 अप्रैल को गायब हो गया। बहुत ढूंढने पर भी उसका कोई पता न चला। स्थानीय पुलिस को सूचना देने पर भी पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। अगले दिन 24 अप्रैल को बच्चे की लाश मिली। जिसके शरीर से गुर्दे और आंखें हत्यारों ने निकाल ली थीं। स्थानीय लोग जब इकट्ठा-होकर रिपोर्ट लिखवाने थाने गये तो पुलिस ने उन्हें बेइज्जत करके भगा दिया, मानो इन्सान नहीं कोई कीड़ा-मकोड़ा मरा हो।

पुलिस के इस रवैये से मजदूरों के सब्र का बांध टूट गया। बड़ी संख्या में मजदूर, कालोनी के निवासी और स्त्रियों ने इकट्ठा होकर लुधियाना-चण्डीगढ़ रोड जाम कर दिया। पुलिस ने लोगों को भगाने के लिए जब लाठी चार्ज किया तो लोगों ने उसका जवाब ईंट-पत्थों से दिया। इससे पुलिस वाले भाग खड़े हुए। फिर वे अन्य थानों से और फोर्स इकट्ठा करके लौटे तथा कई राउण्ड हवाई फायर किये। फिर भी, लोग डटे रहे।

मालूम हो कि लोगों का पुलिस के प्रति गुस्से का यहां का पुराना इतिहास है। लुधियाना में ज्यादातर मज़दूर पूरब से आते हैं, इनकी हैसियत यहां दोयम दर्जे के नागरिकों सी है। इन मजदूरों को सिर्फ मालिकों का ही नहीं बल्कि पुलिस का जुल्म भी निरन्तर झेलना पड़त है। हर आपराधिक घटना पर पुलिस यहां आकर निरपराध मजदूरों को पकड़ ले जाती है फिर पैसे लेकर छोड़ती है। पुलिस वाले रात में पीकर कालोनी में आते हैं और औरतों के साथ अभद्रता करते हैं। बच्चे की हत्या से लोगों का गुस्सा एकदम भड़क गया। उन्होंने पुलिस की दो ट्रकें जला दीं।

लगभग 4 घंटे तक लोगों ने सड़क बंद रखा। उनकी बस यही मांग थी कि बच्चे की हत्या की रिपोर्ट लिखी जाये। पुलिस इतना भी करने को तैयार नहीं थी। इसी बीच स्थानीय विधायक बीच-बचाव के लिए आ गये। विधायक के आश्वासन पर लोगों ने धरना समाप्त कर दिया। जब लोग वापस चले गये तो पुलिस का वहशी रूप फिर प्रकट हुआ। पुलिस ने कालोनी पर हमला बोल दिया, बेरहमी से लोगों को पीटा आर 26 लोगों को धारा 307 के तहत गिरफ्तार करके जेल भेज दिया। पुलिस दहशत के कारण लोग अपने घरों में ताले लगाकर भाग गये हैं। पुलिस का कहना है कि अभी 174 लोग और गिरफ्तार किए जायेंगे। विरोध की हर आवाज को कुचल देने के लिए पुलिस आमादा है।

लोगों का प्रतिरोध एकाएक इतना कमजोर कैसे पड़ गया, जिस हिम्मत से लोग लड़े थे, वह कहां चला गया, इसे समझना होगा। इससे भविष्य के लिए ज़रूरी नतीजे निकलेंगे। आंदोलन के बिखरने का पुलिस ने भरपूर फायदा उठाया और पूरे मामले को उलट दिया। बच्चे की हत्या के जुर्म में उसने उसके दो रिश्तेदारों को फंसा दिया, जबकि बच्चे के माता-पिता भी उन्हें दोषी मानने से इन्कार करते हैं।

इस आंदोलन के बिखरने की वजह लोगों का असंगठित होना है। लोग स्वत:स्फूर्त ढंग से लड़ तो सकते हैं लेकिन बिना संगठन के जीत नहीं सकते। दूसरी बात, जो लोग इस आंदोलन का नेतृत्व कर रहे थे वे किसी न किसी चुनावी पार्टी से जुड़े थे। विधायक के आश्वासन के बाद वे अपने-अपने कारोबार में लग गये। इसलिए जनता पर जुल्म ढाने में पुलिस को किसी प्रतिरोध का सामना नहीं करना पड़ता।

इस आंदोलन की वक्ती हार से बिना हताश-निराश हुए मजदूर साथियों को यह सबक सीखना चाहिए कि एक क्रान्तकारी और जुझारू संगठन के बिना कोई लड़ाई जीती नहीं जा सकती। चुनावी पार्टियों और उनके नेताओं से यह आस छोड़ देनी चाहिए कि उनकी अगुवाई में अन्याय के विरुद्ध संघर्ष किया जा सकता है। मजदूरों के भीतर से ही नेतृत्व तैयार करना होगा जो मुश्किल से मुश्किल हालात में जन आंदोलनों का नेतत्व करने में सक्षम हो।

कण्ट्रोल एण्ड स्विचगियर कम्पनी का मामला

मजदूरों को फौलादी एकता कायम करनी होगी! आर-पार की लड़ाई की तैयारी करनी होगी

(बिगुल प्रतिनिधि)

नोएडा (गौतम बुद्ध नगर)। कण्ट्रोल एण्ड स्विचगियर कम्पनी के मैनेजमेण्ट और प्रशासन की मिलीभगत से यह बात अब साफ हो गयी है कि मजदूरों की मांगों को मैनेजमेण्ट आसानी से मानने वाला नहीं। हालांकि डी.एल.सी. ने 7 व 8 मई को वार्ता के लिए एक बार फिर से तारीख तय की है, लेकिन अब तक चली वार्ताओं के नतीजे को ध्यान में रखते हुए ऐसा लग रहा है कि मजदूरों को आर-पार की लड़ाई के रास्ते पर चलने के अलावा दूसरा और कोई रास्ता नहीं बचा है।

मालूम हो कण्ट्रोल एण्ड स्विचगियर कम्पनी के मजदूरों के फेडरेशन ने आज से तेरह महीने पहले ही मैनेजमेण्ट को पहले से लागू त्रिवर्षीय समझौते फार्मूले के तहत नया समझौता करने के लिए समझौता ज्ञापन सौंपा था। लेकिन बदनीयत मैनेजमेण्ट लगातार टालू रवैया अख्तियार करता रहा और समझौते को लटकाता रहा। मैनेजमेण्ट के रवैये से आजिज मजदूरों ने डी.एल.सी. को अर्जी दी। फिर सांकेतिक रूप से लंच टाइम में नोएडा फेज-एक, फेज-दो व कासना स्थित चारों इकाइयों पर नारेबाजी का कार्यक्रम शुरू किया। इसके बाद तब कहीं जाकर मैनेजमेण्ट के प्रतिनिधि डी.एल.सी. के समक्ष यूनियन से वार्ता करने के लिए राजी हुए। लेकिन यह मजबूरी की रजामन्दी थी। इसके पीछे मैनेजमेण्ट की चाल थी कि मजदूरों को वार्ताओं में उलझाकर समझौते को जहां तक हो सके टाला जाये और मजदूरों की एकता को कमजोर किया जाये।

वैसे मैनेजमेण्ट अपनी 'फूट डालो राज करो' नीति में उसी समय कामयाब हो गया था जब उसने चारों इकाइयों की यूनियनों को मिलाकर बनी फेडरेशन के नेताओं से वार्ता के बजाय अलग-अलग इकाइयों की यूनियन से वार्ता का प्रस्ताव रखा। मजदूर नेताओं ने भलमनसाहत में इस प्रस्ताव को मान लिया जिसका फायदा अब मैनेजमेण्ट उठा रहा है। मैनेजमेण्ट के वार्ता के आश्वासन पर फेडरेशन ने लंच में नारेबाजी का कार्यक्रम भी स्थगित कर दिया था।

भूतपूर्व जज पी.एन.खन्ना के मालिकाने वाली इस कम्पनी की चारों इकाइयों में यूनियनों को मिलाकर फेडरेशन बनाने की शुरुआत उस समय हुई जब मजदूरों को अपनी पहली लड़ाई 'सीटू' के नेतृत्व की गद्दारी के कारण हारनी पड़ी थी। मजदूरों ने अपने अनुभव से यह सीखा था कि चुनावी राजनीतिक पार्टियों से जुड़ी 'सीटू' जैसी यूनियनें दलाल हो चुकी हैं। इसलिए मजदूरों ने अपनी स्वतंत्र यूनियन की नींव रखी और उसके नेतृत्व में लड़कर कई मांगों को हासिल किया, जिसमें त्रिवर्षीय समझौता फार्मूला भी था। मजदूरों के संघर्षों के दबाव में कम्पनी के मालिकान को झुकना पड़ा था, लेकिन वह मजदूरों पर नये सिरे से हमला करने के लिए मौका तलाश रहा था। उसने मजदूरों की एकता तोड़ने के लिए तरह-तरह के हथकण्डे अपनाने शुरू किये। मैनेजमेण्ट में गुण्डा तत्वों की भर्ती की गयी जिससे मजदूरों को डराया-धमकाया जा सके। मजदूरों ने मैनेजमेण्ट की इस चाल का जवाब चारों इकाइयों की यूनियनों का फेडरेशन बनाकर दिया। इसके बाद से मैनेजमेण्ट फेडरेशन में दरार डालकर मजदूरों की एकता तोड़ने की जुगत में लगातार लगा रहा है। डी.एल.सी. के सामने अलग-अलग इकाइयों से वार्ता की पेशकश भी उसकी इसी चाल का हिस्सा है।

फिलहाल कम्पनी का मैनेजमेण्ट किसी भी तरह त्रिवर्षीय समझौता फार्मूले के तहत मजदूरों से समझौता करने के लिए नहीं तैयार है। उसकी मंशा तभी उजागर हो गयी थी जब समझौता ज्ञापन मिलने के बाद समझौता करने के बजाय उसने पहले से मिले अधिकारों में भी कटौती शुरू कर दी गयी। मैनेजमेण्ट ने मजदूरों को मिल रहा वी.डी.ए. (परिवर्तित महंगाई भत्ता) देना बन्द कर दिया है। अब तक हुई वार्ताओं में मैनेजमेण्ट एक ही राग अलाप रहा है कि कम्पनी की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। समझौते के बजाय उल्टे वह मजदूरों पर टार्गेट पूरा न करने का आरोप लगा रहा है। मजदूर नेताओं ने चुनौती दी है कि वह अपना पक्ष साबित करने के लिए तथ्य बताये। लेकिन आज तक मैनेजमेण्ट तथ्य उपलब्ध नहीं करा पाया है। इस टालमटोल से यह अपने आप साफ है कि मैनेजमेण्ट मजदूरों पर झूठी तोहमत लगा रहा है।

पिछली वार्ता में मैनेजमेण्ट ने किसी भी तरह समझौते से मुकरने व मजदूरों की एकता तोड़ने की नीयत से इन्सेण्टिव (प्रोत्साहन) स्कीम लागू करने का लुकमा फेंका जिसे तीन इकाइयों के मजदूर नेताओं ने सिरे से खारिज कर दिया। लेकिन कासना इकाई के प्रतिनिधि ने इन्सेण्टिव स्कीम का विरोध पूरे मन से नहीं किया। इससे मैनेजमेण्ट को निश्चित ही यह सन्देश मिला होगा कि मजदूरों के भीतर दरार है जिसका वह भरपूर फायदा उठाने की कोशिश करेगा।

डी.एल.सी. के समक्ष हुई वार्ताओं से मैनेजमेण्ट का रवैया डी.एल.सी. के सामने भी उजागर हो गया है लेकिन वह मैनेजमेण्ट को समझौते के लिए सीधे निर्देश न देकर मैनेजमेण्ट की तरफदारी ही कर रहा है। इससे मजदूरों के भीतर आक्रोश लगातार बढ़ता जा रहा है। मजदूर 7 व 8 मई को होने वाली वार्ता के इन्तजार में तो हैं लेकिन इसके नतीजे को लेकर बहुत उत्साहित नहीं है।

मैनेजमेण्ट और प्रशासन की इस मिलीभगत को देखते हुए अगली रणनीति पर विचार करने के लिए सी.एस.सी. फेज -एक की यूनियन ने पिछली दो मई को आम बैठक बुलायी। बैठक में यूनियन अध्यक्ष किरण पाल, सचिव समीचन्द, संयुक्त सचिव डी.के. श्रीवास्तव, फेडरेशन के एक पदाधिकारी, नरसिंह पूरन व यूनियन के सलाहकार गजेन्द्र त्यागी के अलावा बिगुल मजदूर दस्ता के साथी अरविन्द ने भी अपनी राय रखी। सभी की यह राय बनी कि मजदूरों को आरपार की लड़ाई की तैयारी करनी ही होगी। संघर्ष की रणनीति 7 व 8 मई की वार्ता के बाद फेडरेशन की आम बैठक के बाद तय करने का फैसला लिया गया। बैठक में यूनियन नेताओं व फेडरेशन नेताओं के बीच सही तालमेल बनाने का सवाल भी उठा जो किसी भी संघर्ष की कामयाबी के लिये जरूरी है।

यह बिल्कुल साफ है कि 7 व 8 मई की वार्ता का नतीजा मजदूरों के पक्ष में होगा इसकी गुंजाइश बिल्कुल नहीं के बराबर है। इसलिए अब फैसला कुन लड़ाई के अलावा मजदूरों के सामने कोई चारा नहीं बचेगा। ऐसे में मजदूरों को बेहद सूझबूझ के साथ अपनी रणनीति बनाकर संघर्ष में कूदना होगा। संघर्ष में कामयाबी मिले, इसके लिए मजदूरों को इन बातों की ओर जरूर ध्यान देना होगा –

यूनियन व फेडरेशन के नेतृत्व को फौलादी संकल्प और जीतने के इरादे से संघर्ष का आह्वान करना होगा। इसके साथ ही नेतृत्व के बीच तालमेल की कमी को भी दूर कर 'एक दिल एक जान' की भावना के साथ नेतृत्व में दरार पैदा करने की मैनेजमेण्ट की कोशिशों का मुंहतोड़ जवाब देना होगा।

आर-पार की लड़ाई का फैसला चारों इकाइयों के मजदूरों की आम सभा में लेना होगा, जिससे संघर्ष नेतत्व द्वारा थोपा हुआ न महसूस हो। यही सच्चा जनवादी तरीका है। जब फैसला लेने में आम मजदूर शामिल होंगे तब वे दिलों-जान से संघर्ष में शिरकत करेंगे।

परमानेण्ट व कैजुअल मजदूरों के बीच मजबूत एकता कायम करनी होगी। संघर्ष की कामयाबी के लिए यह बेहद जरूरी है। चारों इकाइयों को मिलाकर इस समय कम्पनी में लगभग 600 परमानेण्ट, 350 कैजुअल व लगभग 50 अप्रेण्टिस मजदूर काम करते हैं। हालांकि यूनियन ने कैजुअल मजदूरों को परमानेण्ट करने व अप्रेण्टिस मजदूरों के शोषण के खिलाफ पिछले दिनों मैनेजमेण्ट को चिट्ठियां लिखी हैं, लेकिन मजबूत एकता कायम करने के लिए और अधिक ठोस कोशिश की जरूरत है।

संघर्ष को व्यापक बनाने का प्रयास करना होगा। कम्पनी के चारों इकाइयों के मजदूरों की व्यापक एकता के साथ ही संघर्ष को निश्चित कामयाबी की मंजिल तक पहुंचाने के लिए नोएडा की व्यापक मजदूर आबादी के बीच भी ले जाना होगा। उनका समर्थन व सहयोग हासिल करने के लिए ही नहीं बल्कि मजदूरों की व्यापक आबादी में छायी हताशा-निराशा से उबारने व उन्हें संघर्षों की प्रेरणा देने के लिए भी संघर्ष को व्यापक बनाना जरूरी है।

और अन्त में, इस लड़ाई को सिर्फ एक कम्पनी की लड़ाई नहीं बल्कि पूंजी की सत्ता के खिलाफ और नयी आर्थिक नीतियों के खिलाफ देश भर में चल रहे मजदूर संघर्षों की एक कड़ी मानकर आगे बढ़ाना होगा। कण्ट्रोल एण्ड स्विचगियर कम्पनी के मालिकान की अन्धेरगर्दी आज कोई अलग-थलग चीज नहीं है।

देशभर में सभी छोटे-बड़े पूंजीपति आज इसी तरह मजदूरों पर मनमानी कर रहे हैं। सरकार, अदालत, संसद, विधानसभाएं सभी एकजुट होकर इन्हीं की तरफदारी में खड़े हैं। इसलिए, किसी एक कारखाने की लड़ाई आज कोई अलग-थलग लड़ाई नहीं रह गयी है। इसलिए किसी एक कारखाने के संघर्ष को एक व्यापक संघर्ष में बदल देने की आम रणनीति पर हमें चलना होगा।

कण्ट्रोल एण्ड स्विचगियर कम्पनी के मजदूर साथियों ने अगर सूझ-बूझ के साथ इस संघर्ष को आगे बढ़ाया तो निश्चित ही न केवल मगरूर मालिकान को झुकाकर अपनी मांगे मनवाने में कामयाब होंगे बल्कि नोएडा के मजदूर आन्दोलन में एक नयी सुगबुगाहट के प्रेरणास्रोत भी बनेंगे।

जुझारू मजदूरों-कर्मचारियों की शानदार पहल संयुक्त मजदूर संघर्ष मोर्चा, लखनऊ का गठन

एक ऐसे समय में जबकि देश के शासक वर्ग ने नई आर्थिक नीतियों को लागू करने के तीसरे चरण के नाम पर मजदूर वर्ग पर निर्णायक हमला बोल दिया है और मजदूर वर्ग के संयुक्त प्रतिरोध के दमन के लिए फासिस्ट गिरोहों को बेलगाम छोड़ दिया है – लखनऊ के मजदूरों ने एक शानदार पहल की है। वैसे तो शासक वर्ग की इन नीतियों का घातक प्रभाव पूरे देश के मेहनतकश जनता पर पड़ा है, लेकिन उत्तर प्रदेश को तो पूरी तरह इसके प्रयोगस्थली में बदल दिया गया। इस खतरनाक नीति को लागू करने वाली मानवद्रोही फासीवादी राजनीति की जन्मस्थली भी इसी प्रदेश को बनाया गया।

इन नीतियों के चलते पिछले 12 वर्षों में उत्तर प्रदेश में सैकड़ों कल-कारखाने-कार्यालय बन्द किये गये और लाखों लोगों को रोजगार से हाथ धोना पड़ा। इसी दौरान प्रदेश की राजधानी में अपट्रान, स्कूटर्स इंडिया, टेल्को, विक्रम काटन मिल, दवा कारखाना, यू.पी.इंस्ट्रूमेन्टस् तमाम निगम, कार्यालय, अखबार और पचासों छोटे कारखाने बन्द हुए। अपनी आजीविका के लिए शांतिपूर्ण आंदोलन कर रहे मजदूरों को सड़कों पर दौड़ा-दौड़ाकर बर्बरतापूर्वक पीटा गया, स्त्रियों और बच्चों तक को भी नहीं बख्शा गया। मजदूरों-कर्मचारियों के ऊपर हो रहे इस जुल्म और दमन के खिलाफ कोई भी संगठित प्रतिरोध न हो सका। कहने को तो लखनऊ में सभी बड़ी-बड़ी यूनियने और उनके संयुक्त फोरम मौजूद हैं। इनमें से कई के प्रतिनिधि सांसद और विधायक भी है। फिर भी कोई संयुक्त प्रतिरोध की कार्रवाई नहीं हुई। इस अन्याय के पाटे तले पिसते मजदूरों का आक्रोश भीतर ही भीतर सुलग रहा था। ट्रेड यूनियनों के शीर्षस्थ नेतृत्व के 'टोकेनिज्म' और रस्मी कार्रवाईयों से मजदूर-कर्मचारी ऊब चुके थे। अपने अनुभवों से मजदूर-कर्मचारियों और जमीनी स्तर पर कार्यरत संगठनकर्ताओं ने यह समझ लिया था कि बड़े नेताओं की बाट जोहने की जगह उन्हें खुद पहलकदमी लेनी होगी। स्थानीय स्तर पर मजदूर वर्ग को एकजुट करना होगा। इसी व्यावहारिक समझदारी के परिणाम स्वरूप लखनऊ में **'संयुक्त मजदूर संघर्ष मोर्चा'** का गठन किया गया।

उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों उत्तरांचल के मजदूरों-कर्मचारियों ने भी इसी समझदारी के तहत एक संयुक्त मोर्चा का गठन किया था। लखनऊ के मजदूरों को उससे काफी प्रेरणा मिली थी। संयुक्त मजदूर संघर्ष मोर्चा के गठन के समय आम सहमति से एक प्रस्ताव तैयार किया गया। इस प्रस्ताव में मजदूर आंदोलन के राजनीतिक-वैचारिक कमजोरियों, वर्तमान समय की चुनौतियों एवं ठोस कार्य-भारों को स्पष्ट तौर पर रेखांकित किया गया। प्रस्ताव में यह कहा गया है –... **मजदूर वर्ग को सिर्फ आर्थिक सुधार की लड़ाईयों के घेरे में सीमित कर देने से श्रमिक आबादी खंड-खंड में बंट गई है, आज यह बंटवारा जातिगत, क्षेत्रगत और धार्मिक स्तर तक पहुंच गया है। मजदूर आंदोलन की गलत नीतियों और संकीर्ण कार्य पद्धति ने उसे न सिर्फ व्यापक श्रमिक आबादी बन्कि आम जनता के समर्थन और सहयोग से वंचित कर दिया है।**

नई आर्थिक नीतियों के मजदूर विरोधी चरित्र को बेनकाब करते हुए कहा गया है – **श्रम कानूनों एवं औद्योगिक विवाद अधिनियम में संशोधन करके पूंजीपतियों की बर्रता और निरंकुशता को कानूनी मान्यता दी जा रही है। ....मजदूर आंदोलनों और जन आंदोलनों को कुचलने के लिए न सिर्फ बर्बरता कानून बनाये जा रहे हैं बल्कि फासिस्ट और आपराधिक गिरोह भी गठित किए जा रहे हैं।**

विश्व पूंजीवाद के संकटों और पराभव की चर्चा करते हुए कहा गया है – **पूंजी की शक्ति की अजेयता का मिथक तेजी से अटूट रहा है और दुनियां के लुटेरों को बर्बर सैन्यवाद की ओर ढकेल रहा है। खुलेपन और निर्बाध प्रतियोगिता का मंत्रोच्चार करने वाली एकाधिकारी वित्तीय पूंजी खुद पूंजीवाद के विनाश की जमीन तैयार कर रही है।**

आज तक के मजदूर आंदोलन की समीक्षा करते हुए प्रस्ताव में कहा गया है – **अपने राजनीतिक संघर्ष के कार्यभार और अधिकार को संसद में बैठने वाली पार्टियों को सौंपकर निश्चिन्त बैठ गये। इस प्रक्रिया में हमारे भीतर एक राजनीतिक शक्ति होने का अहसास कम हुआ और हमारी वर्गीय चेतना कमजोर पड़ी। ... मिश्रित अर्थव्यवस्था के पूंजीवादी मॉडल को समाजवादी मॉडल मानने का एक वैचारिक भ्रम बना रहा जिसने हमारे संघर्षों की राजनीतिक धार को कुन्द किया और हम अपने ऐतिहासिक कार्यभार को भूल गये। ... असंगठित क्षेत्र के शहरी और ग्रामीण मजदूर आबादी के हकों के लिए संघर्ष की कोई ठोस योजना नहीं ली।** प्रस्ताव में मजदूर वर्ग की एकता के लिए सच्चे सर्वहारा संस्कृति की आवश्यकता पर विशेष जोर दिया गया। प्रस्ताव में कहा गया है कि – **हमारी संस्कृति की धुरी मनुष्य है और पूंजीवादी संस्कृति की धुरी पैसा-मुनाफा है। हमें मजदूर साहित्य-संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए ठोस कार्यभार लेना होगा।**

ट्रेड यूनियनों के गठन में गैर जनवादी तौर-तरीकों की आलोचना करते हुए कहा गया है – **इससे मजदूर संगठनों में नौकरशाही और व्यक्तिवाद को प्रश्रय मिला और ईमानदार कार्यकर्ताओं की इससे दूरी बढ़ी।**

प्रस्ताव के अन्त में आम सहमति से कुछ कार्य-भार तय किया गया। इन कार्यों में – अपने-अपने संस्थानों के संघर्षों में भागीदारी के साथ अन्य संस्थानों के मजदूर संघर्षों में भागीदारी करना, पूंजीवादी नीतियों के खिलाफ मजदूरों में चेतना पैदा करना, छंटनी-तालाबन्दी के शिकार मजदूरों की मदद, असंगठित क्षेत्र के मजदूरों के अधिकारों के लिए संघर्ष, सामाजिक कुरीतियों एवं स्त्रियों के प्रति भेदभाव के खिलाफ संघर्ष, जन आंदोलनों में भागीदारी, गरीब जनता के बीच सामाजिक कार्य एवं सर्वहारा संस्कृति के निर्माण के लिए कार्य मुख्य हैं। शुरुआती स्तर पर सभी घटक संगठनों के प्रतिनिधियों को लेकर एक संयोजक मंडल गठित किया गया। इसमें **बिगुल मजदूर दस्ता** के **ओम प्रकाश सिन्हा, भारतीय खाद्य निगम मजदूर संघ** के **सचिव हाजी मंसीतुल्लाहा, एवरेडी फ्लैश लाइट कम्पनी** मजदूर यूनियन के सचिव शिव सम्पत लाल, **डाक लेखा कर्मचारी संघ** के सहायक महासचिव **आर.पी. सिंह** एवं **मु. मसूद, स्कूटर्स इंडिया बचाओ मोर्चा** के संयोजक आर.एस.यादव, विवेक सनाढ्य, राजकीय मुद्रणालय के मु. मशहूद, पावर ग्रिड कर्मचारी संघ के ए.के. सिंह, रिजर्व बैंक कर्मचारी एसोसिएशन के श्री कान्त अरोड़ा, अभय चौधरी, उ.रे. मेन्स यूनियन (सिग्नल) के मु. साबिर, हीरालाल हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न यूनियनों के जुझारू सदस्यों को आब्जर्वर के रूप में शामिल किया गया। इनमें से प्रमुख हैं एस.एस.हुसैन, एस.एस. वर्मा, वेद प्रकाश, आर एल. पंकज, के.एच. सिद्दीकी, भवननाथ, विजय सिंह, विजय कुमार यादव, राम लाल सिंह, आर. एस. मौर्य, एम.एन.चक एवं अशोक बाजपेई। ओम प्रकाश सिन्हा को मोर्चे का संयोजक एवं. ए.एच. परवेज को कोषाध्यक्ष चुना गया। प्रस्ताव के अंत में यह स्पष्ट किया गया कि **'सुयक्त मजदूर संघर्ष मोर्चा'** का गठन किसी भी रूप में नये यूनियन का गठन नहीं है। पूर्णतः जनवादी पद्धति से गठित यह संयुक्त मोर्चा स्थानीय स्तर पर मजदूर आंदोलनों-संघर्षों को एकीकृत करने, उसे आम जनता के हितों के लिए चलने वाले संघर्षों से जोड़ने और मजदूर विचारधारा और संस्कृति के प्रचार-प्रसार से कामों की शुरुआत करेगा। मोर्चे का गठन 23 मार्च' 2002 की बैठक में किया गया।

आपस की बात

(पेज 2 से आगे)

चावल मिल भी छोटे-बड़े पैमानों पर आई। ट्रेड यूनियन चीनी मिलों में पहले संगठित हुई मगर इन यूनियनों के नेतागण मिल-श्रमिक स्वार्थ को कम अपने स्वार्थ को अधिक देखा। इन यूनियनों को जनवादी होने का अवसर कम मिला तथा पूंजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत मजदूर आन्दोलन कलह का शिकार बनता गया। चावल मिलों के मजदूर कभी संगठित हुए ही नहीं। वे तो असंगठित होकर आज भी किसी प्रकार के आन्दोलन करने की स्थिति में नहीं हैं। राजनैतिक कारणों तथा श्रम के दोहन हेतु काशीपुर से खटीमा तक कालान्तर में एक औद्योगिक क्षेत्र का विकास हुआ। मजदूर वर्ग संगठित हुआ। अलग-अलग ही सही ट्रेड यूनियनों का जन्म भी इस क्षेत्र में हुआ। कारखानों में आन्दोलन हुआ मगर यह आन्दोलन एक कारखाने तक सीमित रहा। पूरे इलाके में श्रमिक सहयोग की भावना इन आन्दोलनों के प्रति श्रमिक-वर्ग में नहीं रही। श्रमिक आन्दोलन सामाजिक आन्दोलन का रूप नहीं ले सका। परिणाम स्वरूप प्रशासन का मालिक वर्ग के गठजोड़ के बल पर तथा एक-एक आन्दोलन लाठी-डण्डों एवं गुंडा गर्दी के बल पर नाकाम होता गया। जनवाद के अभाव में यूनियनें कारखाने के मजदूरों को संगठित तथा जागरूक करने में सफल नहीं रही। आश्चर्य रूप से तराई की यूनियनें अपनी-अपनी राग गाती रहती हैं। उन्होंने कभी इस शोषण तथा मजदूरों के हक के लिये अपनी एकता का प्रयास नहीं करती। इलाके का श्रम-विभाग मजदूरों की हित की बात सोचता ही नहीं। श्रम-कानूनों का खुल्ले आम उल्लंघन मालिक-प्रबंधन की तरफ से किया जाता है मगर श्रम-विभाग चुप्पी साधने के सिवाय कुछ नहीं करता। मालिक पक्ष 'आम का आम गुठली का दाम' चरितार्थ करता रहता है। स्थानीय न्यायालय हड़ताल करने के मौलिक अधिकार पर 200 मीटर प्रतिबंध, स्थानीय परगनाधिकारी 144 धारा, का प्रयोग बेहिचक करते हैं जिनका लाभ अब सारी पूंजीवादी व्यवस्था ले रही है। स्वतंत्र भारत का मजदूर न्यायालय, श्रम विभाग तथा प्रशासन-विभाग द्वारा उपेक्षित रहता है। स्थानीय पुलिस विभाग का पुलिसिया रवैया के विषय में कुछ कहना थोड़ा ही होगा। जनतंत्र के मजबूत स्तम्भ जब धराशाही हो रहे हो तो भारतीय पुलिस विभाग बहती गंगा में हाथ धो ले तो क्या दोष है?

आखिरकार इलाके के मजदूर को भारत सरकार द्वारा बनाये गये श्रम-कानून के तहत न्याय पाने का हक भी नहीं है। कहावत है कि सावन के अन्धे को सब समय हरा-हरा दिखता है। ईस्टर मजदूर हड़ताल हो या श्रीराम होण्डा का तालाबंदी मालिक के अड़ियल रुख के लिये कौन जिम्मेवार है। श्रम-विभाग का श्रमायुक्त जब स्वयं श्रमविभाग के गेट पर खड़ा होकर प्रबन्धतंत्र का स्वागत करेंगे तो प्रबंधन तंत्र उसकी चेतावनी पर क्या ध्यान देगा। इलाके के मजदूर शोषण के विरुद्ध छंटनी के विरुद्ध बोनस के विरुद्ध और कारखाने के पलायन के विरुद्ध आवाज उठाने की हालत में नहीं रखा जा रहा है अभी श्रम संशोधन बिल संसद तक नहीं पहुंचा है। राजनैतिक नेता सदैव अपनी गोटी सेंकने में लगे रहते हैं। सरकार इन लोगों की जामाव से ही बनती है। चुनाव खर्च से वैभव खर्च तक के लिये पैसा चाहिये। मजदूर वोट का मालिक है। उसको किसी न किसी को देना है। वोट उल्लू सीधा करने से प्राप्त हो सकता है। फिर ट्रेड यूनियन के नेता उनके अपने हैं, सगा कभी धोखा देगा नहीं। पैसा बहुमूल्य है प्रबंधन तंत्र उपहार देना कब भूलता। बेरोजगारी का जमाना है, एक गया दूसरा आयेगा। बलि का बकरा मजदूर है। अपना हित भला जग का हित भला। मजदूर अजीबोगरीब हालत में है। एक तरफ रोजी-रोटी दूसरी तरफ हक की लड़ाई।

प्रबंधक तंत्र का साथ दे तो रोजी-रोटी कुछ समय के लिये बचा लेता है मगर शोषण का शिकंजा कसता जा रहा है। यूनियन के तथाकथित संघर्ष में रहता है तो हर बार पराजय मिलता है। 'गद्दार' और 'वफादार' दो श्रेणियों में बंटा मजदूर अन्ततः मालिक पक्ष का परोक्ष एवं अपरोक्ष मदद करता है। यूनियनें जागरूकता के नाम पर मजदूर वर्ग से चन्दा वसूल करती है। उनके हक का संदेश देना, अपनी पद अवनति का कारण समझा जाता है। 'जनवाद' का उल्लंघन कर वर्षों तक पदों पर बना रहना तथा प्रबन्धन के जी हजूरी में समय काटना अपनी शान समझने वाले नेता गण अपनी झोली में झांकने की कोशिश नहीं करते। आन्दोलन की सफलता, असफलता की समीक्षा करना दूर श्रम-विभाग, प्रबन्धतंत्र, तथा राजनैतिक आकाओं के बल पर श्रमिक नेतागण मजदूर सहानुभूति, सहयोग तथा समर्पण की नाव पर सवारी कब तक करेंगे, यह भगवान ही जानता है। इलाके की संयुक्त समिति में लगभग दो दर्जन यूनियनें शामिल हैं। यह एक अच्छा प्रयास है। देखना है कि यह मात्र ट्रेड यूनियन नेताओं का अवसरवादी जमघट है या मजदूर वर्ग एकता तथा जागरूकता का मिसाल बनता है सब कुछ इन नेताओं के हृदय-प्रेम में निहित है तथा भविष्य के गर्त में है। सच्चे अर्थ में इस क्षेत्र के मालिक पक्ष द्वारा अघोषित एकता में ज्यादा एकता-बल दिखता है मगर दुख के साथ वह एकता अभी तक मजदूर में नहीं महसूस हुआ। शिवालय में पुष्प-पत्रक चढ़ा देकर माल शिव-अराधना करने से मंगल कामना पूरी रूढ़वादी समाज में होता है। हक की लड़ाई में तो ऐड़ी-चोटी का जोर तथा समर्पण करने के बाद संघर्षों में विजय श्री मिलती है। संयुक्त समिति के लोग खुले मन से इस तथ्य को स्वीकार कर ले तो वह दिन दूर नहीं कि इलाके का मजदूर आन्दोलन सफल होंगे।

आम मजदूर राहत का सांस लेगा। विभाजन बन्द होगा। मजदूर शोषण मुक्त और खुशहाल होगा। सिर्फ मजदूर को कोसने तथा उनके सहयोग नहीं देने पर उनका अहित या हिंसा के बल पर एकता सूत्र में बांधने की सोच रखने वाली यूनियन कभी सफल नहीं होगी। जनवादी मनोवृत्ति को विकसित करना होगा।

– एक पाठक, खटीमा
ऊधमसिंह नगर, उत्तरांचल प्रदेश।

आज का अन्धेरा मिटकर रहेगा

नोएडा (सेक्टर-8) **कण्ट्रोल एण्ड स्विचगियर कम्पनी लि.** के मालिक भूतपूर्व जज पी.एन.खन्ना के करोड़पति बनने की कहानी भी ठीक वैसी है जैसी दुनिया के हर पूंजीपति की कहानी होती है। कोई भी पूंजीपति मजदूरों के श्रम को हड़प कर ही पूंजी इकट्ठा करता है। मजदूरों का श्रम कानूनी तरीके से भी हड़पा जाता है और कानून को ठेंगा दिखाकर भी। चाहे टाटा, बिड़ला, सिंघानिया, डालमिया, बजाज हों या हमारी कम्पनी के मालिक खन्ना बधु – सबने मजदूरों के खून-पसीने को निचोड़कर ही दौलत इकट्ठा की है। किसी ने ठीक ही कहा है कि हर बड़ी दौलत हराम की होती है।

आज से 54 साल पहले खन्ना परिवार किसी तरह रुखी-सूखी खाकर जिन्दगी गुजारा करता था। किस्मत ने पलटी खायी। किसी तरह पी.एन. खन्ना जज बनने में कामयाब हो गये। फिर क्या था? जज महोदय ने कानून की आड़ में खूब जेब भरी और दलाली खायी। इस दलाली से सबसे पहले 1966 में अपने बेटे के नाम पर नजफगढ़ में फैक्टरी स्थापित करने में कामयाब हो गये। बस फिर क्या था। मजदूरों से सोलह-सोलह घण्टे काम लेकर, उन्हें खाने तक का पैसा न देते हुए बड़ी आसानी से जल्दी ही दूसरी फैक्टरी भी स्थापित हो गयी। इसी शोषण नीति पर चलते हुए आज खन्ना परिवार 15 से अधिक कम्पनियों का मालिक बन बैठा है। मजदूरों की लगन, मेहनत और खून-पसीने की बदौलत आज 300 करोड़ रुपये से अधिक जमा कर चुके खन्ना बन्धुओं ने कभी यह नहीं जानना चाहा कि मजदूर भी उनकी तरह इंसान हैं और उनकी भी कोई जिन्दगी है और उसकी कुछ जरूरते हैं।

खन्ना बन्धुओं की शोषण नीति से दुखी मजदूरों ने बड़े ही साहस व एकता के बल पर श्रम सुविधाएं लागू करवाने के लिए सबसे पहले 1978 में आवाज उठायी एवं संघर्ष शुरू किया। परन्तु 'सीटू' के नेतृत्व को मालिक पक्ष ने खरीद लिया और संघर्ष को कुचल दिया गया। 'सीटू' नेतृत्व के इस कारनामे से सबक लेकर धोखेबाज, दलाल ट्रेड यूनियनों को किनारे करके सितम्बर 1981 में मजदूरों ने **कण्ट्रोल एवं स्विचगियर कम्पनी इम्प्लाइज एसोसिएशन** बनाकर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष शुरू किया और कामयाबी हासिल की। मजदूर ई.एस.आई., पी.एफ., छुट्टी, फण्ड, बोनस, चाय भत्ता, जूते के पैसे, वर्दी, हाउस रेण्ट, टूर एलाउंस, सालाना इंक्रीमेण्ट आदि सुविधाएं लागू करवाने में कामयाब हुए।

लेकिन फिर भी मालिकान ने कई षड्यंत्रों के तहत गुमराह करके आज भी तीन सौ से अधिक मजदूरों को श्रमसुविधाओं से वंचित किया हुआ है। सभी ब्रांचों में यूनियन होने के कारण खन्ना बन्धुओं को यह डर पैदा हो गया कि अब 'हींग लगे न फिटकरी' की नीति के अनुसार मनमाना लाभ नहीं मिल सकता। इसलिए उन्होंने ढूंढ-ढूंढकर विभिन ब्रांचों में मजदूर विरोधी तत्वों को सिर्फ इसलिए ऊंचे पदों पर बिठा दिया। उन्हें यह काम सौंपा गया कि मजदूरों में फूट डालो और संगठन को तोड़ डालो। आज फैक्टरी प्रबन्धकों के पदों पर आधे से अधिक गुण्डे एवं बदमाश बैठे हुए हैं।

यूनियन पदाधिकारियों ने आज से 13 महीने पहले ही प्रबन्धकों को समझौता ज्ञापन सौंपा था। लेकिन प्रबन्धकों ने मजदूरों की खामोशी को कमजोरी समझकर समझौता तो दूर, पहले से मिल रही सुविधाओं, जिसमें प्रमुख रूप से वी. डी.ए. शामिल है अकारण बन्द कर दिया। इसे देखते हुए मजदूरों ने मालिक पक्ष के झूठे वफादारों के षड्यंत्र को भांपकर **कण्ट्रोल एण्ड स्विचगियर इम्प्लाइज फेडरेशन** बनाया है। फेडरेशन ने बड़े ठोस तरीके से अपनी कार्रवाई शुरू की।

मजदूरों की एकता को देखते हुए प्रबन्धक उप श्रमायुक्त के सामने इस बात को मानने के लिए बाध्य हुए कि वे भिन्न-भिन्न इकाइयों में समझौता ज्ञापन पर बात के लिए पहल शुरू करेंगे।

लेकिन उपश्रमायुक्त के सामने मजदूरों से वार्ता के लिए तैयार होना प्रबन्धकों की सोची-समझी चाल साबित हुई। प्रबन्धकों ने एक बार फिर समझौता ज्ञापन पर बात न करके अपना रोना शुरू किया कि कम्पनी की हालत ठीक नहीं है। फिर दूसरी मीटिंग का झांसा देकर चुप्पी साध ली गयी।

कम्पनी के मालिकान अब हर जगह अपनायी जाने वाली पूंजीपतियों की नीति पर चल रहे हैं। उसने डी.एल.सी.एवं प्रशासन से सांठ-गांठ कर ली है। डी.एल.सी. मजदूरों को इंसाफ दिलाने का आश्वासन देकर तीन महीने गुजार चुके हैं। तारीख पर तारीख देकर मजदूरों को गुमराह करने की कोशिश की जा रही है। तारीख पर खुद डी.एल.सी.महोदय गायब रहते हैं। दरअसल, डी.एल.सी. का कोर्ट दलाल कोर्ट बन गया है। डी.एल.सी. महोदय ने मजदूरों के हित में आज तक एक भी फैसला नहीं किया है। ऐसे में उनके फैसले के इन्तज़ार में मजदूर खुद सड़क छाप बन जायेगा।

अब मजदूरों को अपना फैसला स्वयं करने का समय आ गया है। इसलिए जागो साथियो। हौसले बुलन्द हों तो मंजिल कदम चूमती है। जब अंग्रेजी हुकूमत को उखाड़ फेंका गया तो उसमें पूंजीपति या बड़े तबके के लोग लगभग नहीं के बराबर शामिल थे। शामिल थे तो गरीब किसान-मजदूर ही थे। इसलिए आज भी हमें चुप नहीं रहना। अगर हमारी फौलादी एकता बन जाये तो क्या खन्ना, क्या डी.एल.सी– हम बड़ी से बड़ी चुनौती का मुकाबला कर सकते हैं।

आज हम मजदूर-किसानों, गरीब तबके के लोगों का जागना बहुत जरूरी हो गया है। नहीं तो गुजरात के षड्यंत्र की तरह गरीबों को मिटाने का पूंजीपति, सरकारें व दलाल नेताओं का सपना साकार हो जायेगा। गुजरात में गोधरा की आड़ में मानवद्रोही ताकतें, 'गरीब हटाओ नीति पर अमल कर रही है ताकि विदेशी पूंजीपतियों के साथ मिलकर देशी पूंजीपति मनमानी लूट मचाते रहें। यह षड्यंत्र हर पार्टी, हर नेता, हर सरकार के लोगों का खेल है। लेकिन हमें विश्वास है कि देर से ही सही जब एक दिन सड़कों पर गरीब तबका उतर आयेगा तो ये हालात बदलकर रहेंगे, आज का अन्धेरा मिटकर रहेगा।

प्रदीप भण्डारी
नोएडा

रपट

जगह-जगह जोशीले ढंग से मनाया गया मई दिवस

रुद्रपुर में होण्डा फैक्ट्री गेट पर दो-दिवसीय आयोजन

(कुमायूं रिपोर्टर)

रुद्रपुर, 1 मई। **'संयुक्त मजदूर संघर्ष मोर्चा'** के आह्वान पर रुद्रपुर में दो दिवसीय मई दिवस का कार्यक्रम मनाया गया। मई दिवस की पूर्व संध्या पर **श्रीराम होण्डा श्रमिक संगठन** व **'बिगुल मज़दूर दस्ता'** की संयुक्त टोली द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। जबकि बाल कलाकारों ने भी नाटक प्रस्तुत किया। आज दूसरे दिन मई दिवस की परम्परा को याद करते हुए देश में जारी मज़दूर विरोधी नीतियों, श्रम कानूनों में फेरबदल और होण्डा शिफ्टिंग के खिलाफ़ आम सभा और जुलूस का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

होण्डा फैक्ट्री गेट पर आज दिन में आयोजित आम सभा को सम्बोधित करते हुए **मजदूर किसान संघर्ष समिति** के **प्रताप सिंह** ने कहा कि 1886 में शिकागों में जिन मांगों को लेकर मजदूरों का ऐतिहासिक प्रदर्शन हुआ था, व आठ घण्टे काम की मांग थी। आज एक बार फिर उन हकों को छीना जा रहा है। छंटनी-तालाबन्दी के कारण बढ़ती बेरोजगारी से लोग सड़कों पर आ रहे हैं, इसलिए वैश्वीकरण के इस दौर में मज़दूर आबादी को जबर्दस्त संघर्षों के लिए तैयार करना होगा। **आनन्द निशिकावा इम्प्लाइज यूनियन** के मंत्री ओम प्रकाश गंगवार ने कहा कि जापानी लुटेरे हमारे देश में, हमारी ही जमीन पर हमें तबाह करने पर तुले हुए हैं, जिनका हमें एकताबद्ध संघर्ष से मुकाबला करना होगा। **'बिगुल मज़दूर दस्ता'** के **रवि** ने कहा कि आज पूरी दुनिया में एक बार फिर श्रम और पूंजी की ताकतें एकदम आमने-सामने खड़ी हैं। आज के हालात में मौके का पूरा फायदा उठाते हुए देशी-विदेशी पूंजीपतियों ने मेहनतकशों पर पूरी ताकत से हमला बोल दिया है। लम्बे जुझारू संघर्षों के दौरान हमने जो हक और अधिकार प्राप्त किये थे, आज एक-एक करके वे हमसे छीने जा रहे हैं। वे काले कानूनों और दमन के आतंक से हमें रौंद देना चाहते हैं, वे मजहबी फासीवादी कहर से हमारी एका को तोड़ देना चाहते हैं, हमें कुचल देना चाहते हैं। आज मेहनतकश अवाम को इस राजनीति और अर्थनीति को समझना होगा और इसके खिलाफ़ फैसलाकुन लड़ाई के लिए लामबन्द होना होगा।

उत्तरांचल ऊर्जा कामगार संगठन के एम.एन. उप्रेती ने कहा कि जिस निष्ठा, एकाग्रता और जुझारू संघर्ष से हमने तमाम हक हासिल किये थे अब छिने जा रहे हैं। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि जापानियों को हिन्दुस्तान के मेहनतकशों का सामना करने के लिए तैयार रहना होगा। शिफ्टिंग तो किसी भी कीमत पर नहीं हो सकती। **क्रान्तिकारी मजदूर संघर्ष संघ** के **का. मनीन्द्र मंडल** ने कहा कि होण्डा मजदूरों के साथ इलाके के खेत मजदूर- औद्योगिक मज़दूर सभी हैं, इसलिए लड़ाई कामयाब होगी। **क्रान्तिकारी लोक अधिकार संगठन** के **शिवदेव सिंह** ने कहा कि आज जब मज़दूर आन्दोलन कमज़ोर हुआ है, पूंजीपतियों की आक्रामकता बढ़ी है, तो हमें भी अपने संघर्षों को तेज़ करना होगा। अब ट्रेड यूनियन के मठाधीश नेताओं से कोई मुगालता पालने की जरूरत नहीं है। उन्हें अपने वैचारिक एकता पर ही भरोसा करना चाहिए। भूतपूर्व सैनिक रमेश चन्द्र ने कहा कि इस फैक्ट्री में ग़रीबों-मजदूरों का खून गिरा है। जापानी फैक्ट्री लेकर भागना चाहता है, लेकिन हम जापानियों को भगायेंगे। विजयशंकर शुक्ला ने कहा कि आज का दिन क्रान्ति एवं परिवर्तन का प्रतीक दिन है। एक लम्बे अर्से से होण्डा श्रमिक अपनी जायज मांगों के लिए संघर्षरत है, उन्हें भारी जनसमर्थन मिला हुआ है। चिकित्सा-स्वास्थ्य संगठन के डी.के. जोशी ने कहा कि हमें रस्मी लड़ाइयों के बजाय जमीनी और फैसलाकुन लड़ाई लड़नी होगी। उन्होंने होण्डा अध्यक्ष के अख़बारी बयान पर रोष प्रकट करते हुए कड़ी भर्त्सना की। **बीमा कर्मचारी संघ** के **रामपाल** ने कहा कि पूंजी की गुलामी और ज़ोरों-जुल्म के खिलाफ विद्रोह न्यायसंगत है। **श्रीराम होण्डा श्रमिक संगठन** के **बी.सी.पाण्डे** ने कहा कि मई दिवस की 116 साल पुरानी परम्परा को याद करते हुए हमें शहीदों की परम्परा को आगे बढ़ाना होगा और अपनी मुक्ति की लड़ाई को तेज़ करना होगा। **यू.पी. कोआपरेटिव इम्प्लाइज यूनियन** के **संतोष पाण्डेय** ने कहा कि साम्प्रदायिक फासीवादी ताकतों ने इस देश के अमन-चैन को नष्ट कर रखा है। देश की जनता को साम्प्रदायिक दंगों की आग में झोंककर भयानक खून-खराबा करवा रहे हैं। अमेरिका के सामने घुटने टेककर मज़दूर विरोधी नीतियां लागू कर रहे हैं।

संयुक्त मज़दूर संघर्ष मोर्चा के **मुकुल** ने कहा कि यदि 80 फीसदी कामगार हाथ, मुठ्ठियों की शक्ल में ऊपर उठें तो 20 फीसदी लुटेरे हाथ तमाम हथियारों से लैस होने के बावजूद, उनसे पार नहीं पा सकते। सभा को एफ सी आई वर्क्स यूनियन के रवीन्द्र शर्मा, उत्तराखण्ड विद्युत कर्मचारी संगठन के भरत चन्द्र जोशी ने भी सम्बोधित किया।

सभा के बाद गांधी पार्क से डी.एम. कार्यालय तक एक जुलूस निकाला गया। जिसमें **नारी सभा** और **प्रगतिशील महिला मंच** की महिलाओं के साथ ही सैकड़ों की तादाद में लोग शरीक हुए। डी.एम. कार्यालय पर दो अलग-अलग ज्ञापन, एक, देश के प्रधानमंत्री के नाम मजदूर विरोधी नीतियों, श्रम कानूनों में मालिक पक्षीय बदलाव, नौकरियों में कटौती, खेतिहार मज़दूरों के लिए केन्द्रीय कानून बनाने, उत्तरांचल की जसपुर एवं काशीपुर को बन्द कताई मिलें खोले जाने व उत्तरांचल में उचित भूमि प्रबन्धन लागू करने आदि से सम्बन्धित थे। दूसरा ज्ञापन उत्तरांचल के मुख्यमंत्री के नाम था। जिसमें होण्डा फैक्ट्री की शिफ्टिंग रुकवाने, अवैध तालाबन्दी खत्म करवाने, चोरी से मशीनें ले जाने के जुर्म में दोषी प्रबन्धकों को दण्डित करने व होण्डा श्रमिकों को न्याय दिलाने के सन्दर्भ में। ये दोनों ही ज्ञापन **'संयुक्त मज़दूर संघर्ष मोर्चा'** की ओर से खटीमा, काशीपुर, हल्द्वानी व लालकुआं से भी उपजिलाधिकारी के माध्यम से प्रधानमंत्री के पास भेजे गये।

इससे पूर्व कल सायं होण्डा फैक्ट्री गेट पर **अनुराग बाल पत्रिका** के बाल कलाकारों द्वारा व्यंग्य नाटक 'तमाशा', होण्डा श्रमिकों और **बिगुल मज़दूर दस्ता** के कार्यकर्ताओं द्वारा नेताशाही पर आधारित व्यंग्य नाटिका **'देश को आगे बढ़ाओ'** व मई दिवस पर केन्द्रित नाटक **'मई दिवस की कहानी'** की प्रस्तुतियां हुई व क्रान्तिकारी गीत पेश किये गये।

मई दिवस पर अलग-अलग कार्यक्रम खटीमा, काशीपुर, किच्छा, पन्तनगर, लालकुआं, हल्द्वानी में भी मनाए गये।

गजरौला में सभा और रैली

गजरौला (जे.पी.नगर)(बिगुल संवाददाता)। संयुक्त मजदूर संघर्ष समिति के तत्वावधान में इलाके की तमाम औद्योगिक इकाइयों से आये सैकड़ों मज़दूरों ने एक साथ मिलकर मई दिवस का अपना क्रान्तिकारी त्योहार मनाया और एकजुट होकर संघर्ष करने का संकल्प लिया।

स्थानीय इन्दिरा चौक पर आयोजित सभा को संबोधित करते हुए **ए.एस.पी. इम्प्लाइज़ यूनियन** के पूर्व अध्यक्ष उदयपाल सिंह ने कहा कि देशी-विदेशी पूंजीपतियों का गठजोड़ आज मज़दूरों के सभी अधिकारों को छीन लेने और मज़दूर आन्दोलन को कुचल डालने के लिए जितने बड़े पैमाने पर कुचक्र रच रहा है, उसका मुकाबला व्यापक और मज़बूत एकता के आधार पर ही किया जा सकता है। **रौनक आटोमोटिव लि.** के मज़दूर प्रतिनिधि ने इलाके में मालिकों द्वारा श्रम कानूनों की धज्जियां उड़ाने की ओर तथा अब सरकार द्वारा खुलेआम मालिकों के मन मुआफिक नये श्रम कानून बनाने की चर्चा की। **इन्सिलको लि.** के **गंगा शरण सैनी** ने बताया कि मज़दूर आंदोलन की कमज़ोरी के चलते इस क्षेत्र के पूंजीपति लगातार मज़दूरों की छंटनी कर रहे हैं। 'वाम आर्गेनिक' के 125 कर्मचारी और जे.के. फार्मा से 40 मज़दूरों की छंटनी की जा चुकी है। **इन्सिलको** का मैनेजमेण्ट मजदूरों को वी.आर.एस. लेने के लिए ज़ोर-जबर्दस्ती द्वारा दबाव बना रहा है।

श्री एसिड्स के **पदम सिंह** ने कहा कि मई दिवस को रस्म अदायगी बनाने के बजाय हमें अपने संघर्षों को क्रान्तिकारी धारा से जोड़ना होगा। **रौनक आटोमोटिव लि.** के **संजीव चौधरी** ने कहा कि गजरौला क्षेत्र के सभी उद्योगों के मज़दूरों को एक साझा मंच बनाकर संगठित होना चाहिए। **ए.एस.पी. यूनियन** के **रमेश सिंह** ने कहा कि मई दिवस हमें पूरी पूंजीवादी व्यवस्था की गुलामी से मुक्ति के लिए लड़ने का सन्देश देता है। **श्री एसिड** के यूनियन अध्यक्ष धर्मवीर सिंह ने देश को दंगों की आग में झोंककर

आज घोषणा करने का दिन
"हम भी हैं इंसान"
हमें चाहिए बेहतर दुनिया
करते हैं ऐलान
घृणित दासता किसी रूप में
हमें नहीं स्वीकार
मुक्ति हमारा अमिट स्वप्न है
मुक्ति हमारा गान॥

सैकड़ों बेगुनाहों का बर्बर कत्लेआम करने वाली साम्प्रदायिक शक्तियों के विरुद्ध जुझारू एकता का आह्वान किया और कहा कि ये ताकतें मेहनतकशों को बांटने की साजिश द्वारा पूंजीवाद की सेवा कर रही हैं।

इसके पूर्व सभा की शुरुआत बच्चों की टोली द्वारा क्रान्तिकारी गीत के गायन से हुई। सभा के बाद इन्दिरा चौक से चौपला चौराहे तक मज़दूरों क एक रैली निकाली गयी और उनके जोशीले नारों से पूरा माहौल सरगर्म हो गया।

लुधियाना में चार संगठनों द्वारा संयुक्त आयोजन

लुधियाना (बिगुल संवाददाता)। **अखिल भारतीय नेपाली एकता समाज** की पहलकदमी पर लुधियाना में सक्रिय सभी क्रान्तिकारी, प्रगतिशील संगठनों का आह्वान किया गया कि स्थानीय स्तर पर वे मई दिवस एक साथ मनाये, लेकिन कुछ संगठनों के संकीर्णतावादी रवैये के चलते यह प्रयास सफल नहीं हो सका।

लेकिन **अखिल भारतीय नेपाली एकता समाज, बिगुल मज़दूर दस्ता लोक एकता संगठन** और **स्टील आलमारी-फर्नीचर-मज़दूर संघ** ने एक साथ मिलकर मई दिवस मनाया। लुधियाना के मालिक मई दिवस की छुट्टी नहीं करते। इसके बावजूद उपरोक्त संगठनों से जुड़े मज़दूर लेबर कालोनी में कार्यक्रम स्थल पर पहुंचे। इस अवसर पर आयोजित सभा को अ.भा. नेपाली एकता समाज के **के.डी.जोशी** बिगुल मज़दूर दस्ता के सुखविंदर, स्टील आलमारी-फर्नीचर मज़दूर संघ के **कामरेड प्रभाकर** और लोक एकता संगठन के निर्मल सिंह ने सम्बोधित किया। सभा का संचालन **कामरेड दशरथ** ने किया। **बिगुल मज़दूर दस्ता** के साथी **नागेन्द्र** और **कामरेड दशरथ** ने क्रान्तिकारी गीत प्रस्तुत किये। उपरोक्त संगठनों की ओर से प्रकाशित मई दिवस का पर्चा बड़ी संख्या में लुधियाना के औद्योगिक इलाकों में बांटा गया।

पूँजी की गुलामी और जोरो-जुल्म के खिलाफ विद्रोह का आह्वान

(बिगुल संवाददाता)

नोएडा (गौतम बुद्ध नगर)। इस औद्योगिक नगरी में मजदूरों की बीच मई दिवस की क्रान्तिकारी विरासत और मजदूर वर्ग के ऐतिहासिक मिशन की याद दिलाने के लिए **बिगुल मजदूर दस्ता** ने मजदूर बस्तियों और कारखाना क्षेत्रों में कई नुक्कड़ सभाओं का आयोजन किया और व्यापक पर्चा वितरण किया।

पहली नुक्कड़ सभा **खोड़ा कालोनी (सेक्टर-62)** स्थित **लेबर चौक** पर हुई। यहाँ सैकड़ों मजदूरों की सभा को सम्बोधित करते हुए साथी अरविन्द ने कहा कि मई दिवस मजदूरों का क्रान्तिकारी त्यौहार है। यह छुट्टी और आराम का दिन नहीं है। इस दिन तमाम देशों के मेहनतकश वर्ग-चेतना की दुनिया में प्रवेश करने का जश्न मनाते हैं। इस दिन तमाम मजदूर अपने कारखाने के मालिक के शोषण उत्पीड़न या सिर्फ तनख्वाह-बोनस -भत्ते की बात नहीं करते बल्कि पूँजी के जुवे से समूचे मजदूर वर्ग और समूची मानवता को आजाद कराने का संकल्प दुहराते हैं।

साथी अरविन्द ने चुनावी पार्टियों से जुड़ी मजदूर यूनियनों और ट्रेड यूनियन दलालों को फटकारते हुए कहा कि इन्होंने मई दिवस को एक ऐसे कर्मकाण्ड में बदल डाला है जो शिकागो के शहीद मजदूर साथियों की कुर्बानी को कलंकित करता है और मजदूरों के बीच कोई प्रेरणा नहीं पैदा करता। उन्होंने कहा कि इन यूनियनों और नेताओं की गद्दारी का मतलब यह नहीं कि मजदूर हताश होकर संघर्षों से ही नाता तोड़ लें। उन्होंने देशी-विदेशी पूंजी की नयी गुलामी के खिलाफ नये सिरे संगठित होने और संघर्षों के रास्ते पर चलने का आह्वान किया।

इस सभा के बाद कार्यकर्ताओं का जत्था स्थित **कन्ट्रोल एण्ड स्विचगियर कम्पनी लि०** के मेन गेट पर आयोजित सभा में पहुंचा। यहाँ सभा के पहले मजदूरों ने यूनियन को पुराने झण्डे को बदलकर नया झण्डा लगाया। ''मई दिवस के शहीद अमर रहें'', ''दुनिया के मजदूरो एक हो'', ''इंकलाब जिन्दाबाद'', ''सारी सत्ता मेहनतकश को'' आदि नारे लगाने के बाद सभा शुरू हुई। **बिगुल मजदूर दस्ता** कि साथी अजय ने सभा में कहा कि जब तक सत्ता की बागडोर मेहनतकशों के हाथ में नहीं आयेगी तब तक मजदूर अब इंसानी की जिन्दगी जीने का हक भी नहीं हासिल कर सकता।

उन्होंने कहा कि कई दिवस के शहीदों को याद करते हुए हमें देशी-विदेशी पूँजी के राज को उखाड़ फेंकने के रास्ते पर कदम बढ़ाना ही होगा। सभा को यूनियन अध्यक्ष किरणपाल, संयुक्त सचिव डी. के. श्रीवास्तव ने भी सम्बोधित किया और समूचे नोएडा के मजदूरों को एक झण्डे के नीचे एकजुट होने का आह्वान किया। सभा में यूनियन कोषाध्यक्ष प्रदीप भण्डारी सहित तमाम कार्यकारिणी सदस्य और आम मजदूर मौजूद थे। सभा का संचालन यूनियन के सचिव रामो चन्द ने किया। शाम के समय **बिगुल दस्ता** के कार्यकर्ताओं ने **खोड़ा कालोनी (फेज-तीन)** के साप्ताहिक बुध बाजार में नुक्कड़ सभा का आयोजन किया और व्यापक चर्चा वितरण किया। दिन भर के मई दिवस अभियान में **बिगुल मजदूर दस्ता** के अजय, अरविन्द, राम सिंह, राम पाल तिवारी, देश राज व लेखराज ने प्रमुख रूप से शिरकत किया।

दिल्ली

दिल्ली में मई दिवस पर सोटू एटक और ऐक्टू द्वारा संयुक्त रूप सेआयोजित रैली एवं सभा में **बिगुल मजदूर दस्ता** के क्रार्यकर्ताओं ने पर्चे बाँटे। रैली शाम पाँच बजे रामलीला मैदान से शुरू होकर टाउनहाल तक पहुँची जहाँ सभा का आयोजन किया गया।

इस आयोजन में बाँटे गये पर्चे में लिखा गया था कि ''वोटों के सौदागरों द्वारा अपना-अपना उल्लू सीधा करने के लिए ट्रेड यूनियन आन्दोलन को खण्डों में बाँटकर दर्जनों दुकानें सजा लेने के खिलाफ बहादुरी से व्यापक मजदूर एकता की आवाज उठानी होगी। हमें संगठित-असंगठित, अस्थायी-स्थायी आदि के आधार पर बनी आपसी दूरियों को खत्म करना होगा। हमें जाति-धर्म और इलाके नाम पर की जाने वाली फूट की साजिशों को नाकाम कर देना होगा। मजदूर आपसी फूट और बँटवारों की बहुत कीमत चुका लिये । अब और नहीं।''

पर्चे बाँटने के इस अभियान में **सुरेन्द्र प्रताप, ललित सती, मनीष कुमार** और **एतकाद अहमद** शामिल थे।

संयुक्त मजदूर संघर्ष मोर्चा, लखनऊ द्वारा सभा

नव गठित संयुक्त मजदूर संघर्ष मोर्चा के आह्वान पर लखनऊ में विभिन्न कारखानों , कार्यालयों के मजदूरों - कर्मचारियों की एक आम सभा हुई। मई दिवस की तैयारियों के सिलसिले में पूरे नगर में मोर्चे की ओर से पर्चे बांटे गये और पोस्टर लगाया गया था। लखनऊ शहर में मजदूरों-कर्मचारियों द्वारा एक संयुक्त सभा मोर्चे के नेतृत्व में हुई। यह सभा पटेल पार्क, हजरतगंज में शाम 5 बजे से शुरू होकर रात्रि 9 बजे तक चली। कई उद्योगों के मजदूर जुलूस की शक्ल में नारे लगाते हुए लम्बी दूरी तय करके सभा में शामिल हुए। विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों ने सभा को संबोधित किया।

भारतीय खाद्य निगम मजदूर संघ के सचिव हाजी मसीतुल्लाह ने कहा कि हमें संगठित और असंगठित क्षेत्र के मजदूरों का फर्क मिटाकर समस्त मजदूर वर्ग के हितों के लिए लड़ना होगा। इसी संगठन के आर0एस0 मौर्य ने कहा कि हमें श्रम विरोधी नीतियों क विरुद्ध) अपनी आवाज देश की राजधानी तक पहुंचाना होगा। **नेशनल फेडरेशन ऑफ पोस्टल इम्प्लाइज के संगठन महासचिव हेमन्त कुमार** ने कहा कि हमें सिर्फ आयोजनों तक सीमित नहीं रहना है। हमें एक नये संघर्ष के लिए संकल्प लेना होगा।

स्कूटर्स इंडिया बचाओ मोर्चा के संयोजक नेमजदूरों-कर्मचारियों को उनके ऐतिहासिक मिशन की याद दिलाते हुए कहा कि हमें वर्ग विहीन समाज की स्थापना के लिए लड़ना होगा। **कवयित्री कात्यायनी** ने मजदूर आंदोलन में स्त्रियों की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि शेष आधी आबादी को साथ लिए बिना आंदोलन आगे नहीं बढ़ सकता। **एवरेडी फ्लैश लाइट कम्पनी मजदूर** यूनियन **के सचिव शिवसम्पत लाल** ने कहा कि आज हमें चुनावी पार्टियों से जुड़े नेताओं के पीछे चलने की जगह राजनीतिक संघर्ष की बागडोर अपने हाथ में लेना होगा। **बीमा कर्मचारी संघ, लखनऊ डिवीजन के शाखा अध्यक्ष विवेक सनाढ्य** ने मजदूर आंदोलन की क्रान्तिकारी परम्परा की चर्चा करते हुए कहा कि आज देश में एक सशक्त

(पेज 6 पर जारी)

(पेज 1 से आगे)

लड़ने की तैयारी करो और जीतने के लिए लड़ो! ...

बीस फीसदी लोगों के सनक के हाथों इस दुनिया को तबाह हो जाने देगी इसकी सम्भावना काफी कम है, यह तय है। यदि हम धीरज, साहस और लगन के साथ तैयारी करेंगे तो विजय जनवक्ष की ही होगी। हमारे देश में भी और पूरी दुनिया में भी।

अपने बच्चों के लिए रौशन दिनों की चाहत भला किस दबे कुचले मेहनतकश के दिल में नहीं होती? जब उन्हें लगेगा कि वर्तमान उन्हें भविष्य के नाम पर सिर्फ और सिर्फ अंधेरे की विरासत ही सौंपने वाला है तो उठ खड़े होंगे और अपने वर्तमान को बदलकर अपनी नियति के निर्माता बन जायेंगे।

तैयारी की नई शुरुआत-हमारा रास्ता

मई दिवस के इस मौके पर हमें इस व्यावहारिक सवाल पर सोचना ही होगा कि शुरुआत कहां से की जाये।

पहली बात तो यह कि हमें अपनी एका लगातार मजबूत बनानी होगी और लगातार इसके आधार का विस्तार करना होगा। अलग-अलग कारखानों, सेक्टरों और विभागों के मजदूर और कर्मचारी जब तक अपने मालिकान और मैनेजमेण्ट से अलग-अलग लड़ते रहेंगे तबतक एकजुट मालिकान पूंजी, डण्डा और हुकूमत की ताकत के बूते उन्हें शिकस्त देते रहेंगे। हमें एक होकर, हर क्षेत्र के कामगारों की लड़ाई को अपनी साझी लड़ाई बनाकर लड़ना होगा। इसके लिए हमें अलग-अलग इलाकों और फिर पूरे देश के पैमाने पर एक जुझारू मोर्चा संगठित करना होगा।

दूसरी बात जो मई दिवस के विरासत से खास तौर पर जुड़ी हुई है, वह यह कि हमें केवल वेतन, बोनस, पीएफ और विभिन्न रियायतों के लिए ही लड़ने में मशगूल रहने के बजाय अपने एक-एक बुनियादी राजनीतिक अधिकार के लिए जमकर लड़ना होगा। राजनीतिक हकों की लड़ाई सभी मालिकान और उनकी राज्यसत्ता के खिलाफ होती है, इसलिए यह व्यापक एकता बजाती है। हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि मजदूरों के संघर्षों का मकसद महज कुछ रियायतें हासिल करना ही नहीं। बल्कि एक ऐसे ढांचे का निर्माण करना है जिसमें सारी सत्ता वास्तव में मेहनतकश हाथों में हो।

तीसरी बात हमें वोटों के सौदागरों, पूंजीवादी पार्टियों के दुमछल्लों और चुनावी वामपंथी मदारियों द्वारा अपना-अपना उल्लू सीधा करने के लिए ट्रेड यूनियन आन्दोलन को खण्डों में बांटकर दर्जनों दुकानें सजा लेने के खिलाफ बहादुरी के व्यापक मजदूर एकता की आवाज उठानी होगी। हमें संगठित-असंगठित, स्थायी-अस्थायी के आधार पर बनी आपसी दूरियों को खत्म करना होगा। हमें जाति, धर्म, और इलाके के नाम पर मजदूरों के बंटवारे की साजिशों को नाकाम कर देना होगा।

चौथी बात हमें रस्मी लड़ाइयों के बजाय फैसलाकुन लम्बी लड़ाई का व्यापक व्यावहारिक ठोस प्रोग्राम बनाना और उस पर अमल करना होगा। चुनावी धंधेबाजों से गांठ जोड़े हुए ट्रेड यूनियनों के शीर्ष नौकरशाह नेता अपनी नाक बचाने के लिए पिछले बारह वर्षों से निजीकरण की नीतयों के खिलाफ हवाई गोले छोड़ रहे हैं और कुछ बन्द कुछ प्रदर्शन आदि की रस्म अदायगी कर रहे हैं। अब समझने को कुछ बाकी नहीं रहा। मजदूर आन्दोलन को इन्हें किनारे हटाकर अपना नया इंकलाबी नेतृत्व तैयार करना होगा।

पांचवी बात जो दूरगामी तौरपर सबसे बुनियादी है हमें नई मजदूर क्रान्ति का हरावल दस्ता तैयार करने के लिए आम मेहनतकशों के रोजमर्रे के जीवन और संघर्षों के बीच लगातार हर संभव तरीके का इस्तेमाल करते हुए उनकी क्रान्तिकारी राजनीतिक शिक्षा के काम को जारी रखना होगा, उन्हें वर्ग सचेत एवं जुझारू बनाना होगा, फिर सबसे उन्नत चेतना वाले जुझारू मजदूरों को मजदूर क्रांति के स्वरूप, रास्ते, रणनीति आदि की शिक्षा देकर नेतृत्वकारी टुकड़ियों का विकास करना होगा। हमें ज्यादा से ज्यादा तादाद में ऐसे मध्यवर्गीय युवाओं के बीच से भी क्रान्तिकारी भरती करनी होगी जो अपने वर्गीय आधार को तोड़कर सर्वहारा वर्ग से जुड़ सकें और पेशेवर (पूरावक्ती) क्रान्तिकारी संगठनकर्ता अथवा सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में काम कर सकें। इसके साथ ही हमें आम जनता के हर उस हिस्से को सर्वहरा वर्ग केसाथ संयुक्त मोर्चे में शामिल करने के लिएहर चन्द कोशिश करनी होगी जो साम्राज्यवाद और पूंजीवाद के जुए तले पिस रहा है।

साम्प्रदायिक फासीवाद की चुनौती और हमारे फौरी कार्यभार

"हिन्दुत्व की प्रयोगशाला" में धार्मिक कट्टरपंथी संघ परिवारियों ने और भाजपाई फासिस्टों की सरकार ने अल्पसंख्यकों के अब तक के सर्वाधिक सुसंगठित नरसंहार को अंजाम दिया है। हिन्दुत्व के ठेकेदारों ने धर्म के नाम पर हत्या और बलात्कार के ऐसे नये-नये तरीके ईजाद किये हैं कि लगता है कि हिटलर के पाशविक गुण्डों का एक बार फिर भारत भूमि पर अवतार हो गया है। लाखों बेघरों को अब भी उनके घरों में वापस नहीं लौटने दिया जा रहा है उनकी आर्थिक घेरे बंदी की जा रही है और यहां-वहां दंगों का सिलसिला लगातार जारी है। अभी जो गुजरात में हुआ है उसी विनाशक खूनी खेल को देश के पैमाने पर खेलने की तैयारी जारी है। चाहे सत्ता में रहें या बाहर, हिन्दुत्वादी फासिस्ट इसके लिए एकदम आमादा है।

इतिहास बताता है कि ये फासिस्ट भस्मामासुर पूंजीवादी व्यवस्था की ही दोगली, बीमार, उन्मादी औलादें हैं। इनसे शांति की दुहाई देकर, चुनाव में हराकर या मोमबत्तियां जलाने-मानव श्रृंखला बनाने जैसी रस्मी कार्रवाइयों से नहीं निपटा जा सकता। सिर्फ एकजुट लड़ाकू मजदूर ही अपनी लौह मुष्टि से फासिस्ट मंसूबों को चकनाचूर कर सकते हैं। अब बहुत हो चुका, अब फासीवाद विरोधी जुझारू लोक प्रतिरोध मोर्चा गठित करने का काम हमें अविलम्ब शुरू कर देना होगा, क्योंकि कल बहुत देर हो चुकी रहेगी।

हमें एक एक मेहनतकश को यह बताना होगा कि हुकूमती जमातों का बस एक ही धर्म है लूट और अत्याचार का धर्म। मुट्ठीभर लुटेरो के एजेण्ट चुनावी मदारी हमारे पिछड़ेपन का लाभ उठाकर धर्म का खेल खेलते रहे और इसी खेल के एक हद से गुजर जाने के बाद फासीवाद का राक्षस मजबूत होकर सामने आया है। भारत का हिन्दू कट्टरपंथी फासीवाद इस देश और पूरी दुनिया की वित्तीय पूंजी का चाकर हैं इसका पहला दुश्मन क्रान्तिकारी मजदूर आन्दोलन है। अल्पसंख्यकों को लक्ष्य बनाकर यह उन्माद पैदा करता है, जन एकजुटता को तोड़ता है और फिर मेहनतकशों की क्रान्तिकारी राजनीति को अपना निशाना बनाता है।

इसलिए, आज सबसे महत्वपूर्ण फौरी काम यह आ गया है कि बिखरी हुई तमाम क्रान्तिकारी ताकतें, कम से कम इस एक मसले पर एकजुट होकर जुझारू मोर्चा बनायें

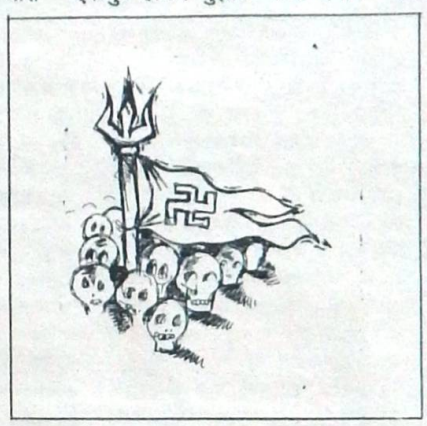

और अपनी पूरी ताकत एक साथ जोड़कर फासिस्टों का मुकाबला करें। इसके बाद, दूसरा काम यह होगा कि मोर्चा फासीवाद के खिलाफ आम जनता में व्यापक मुहिम चलाकर फासिस्टी मंसूबों को चकनाचूर करने के लिए मेहनतकशों को जागृत, शिक्षित और संगठित करें। इस तरीके का मोर्चा गठित होते ही जो भी सच्चे, बहादुर और जुझारू धर्मनिरपेक्ष मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी होंगे वे रस्मी कार्रवाइयों में लगे कुलीन बुर्जुआओं और चुनावी हित के लिए भाजपा का विरोध करने वाले बुर्जुआ दलों का पिछलग्गूपन छोड़कर मज़दूर वर्ग के साथ आ खड़े होंगे।

हम इस देश की सभी क्रान्तिकारी ताकतों से, पूरा जोर देकर दिल की गहराइयों से, अधिकतम सम्भव आग्रहपूर्ण अपील करते हैं कि अपने तमाम मतभेदों पर भले ही हमारी बहसें अभी लम्बी चलें, भले ही हम अपने अलग-अलग प्रयोग जारी रखों, भले ही हमारी राजनीतिक-सांगठनिक एकता की मंजिल अभी दूर हो, लेकिन यदि हम वास्तव में सर्वहारा क्रान्तिकारी हैं तो संयुक्त कार्रवाई के तौर पर पहला और आसन्न काम यह बनता है कि हम धार्मिक कट्टरपंथ विरोधी संयुक्त मोर्चे पर तत्काल एकजुट हो जायें और फासिस्टों का आमने-सामने मुकाबला करने के लिए तैयारियों में भिड़ जायें। गुजरात के विनाश को ये शैतान देशव्यापी महाविनाश की भूमिका बनाना चाहते हैं। यदि हम आज नहीं चेते तो कल इतिहास हमें गुनहगार ठहरायेगा। दीर्घकालिक कामों के लिए फौरी कामों की उपेक्षा या तो मूर्ख करते हैं या फिर भगोड़े। क्रान्तिकारी ऐसा नहीं करते। नकली वामपंथियों, तीसरे मोर्चे के सामाजिक जनवादियों और कांग्रेसियों को अपना काम करने दें। हम अपने काम में जुट जायें। ये सभी चुनावी मदारी धार्मिक कट्टरपंथी फासीवाद को अपनी-अपनी चुनावी गोट लाल करने के खेल से मजबूत बनाने के अपराधी हैं। फासीवादी हिरण्यकश्यपु का पेट तो सर्वहारा नृसिंह को ही फाड़ना होगा।

याद करें हम, पंजाब में खालिस्तानी कट्टरपंथियों का जान पर खेलकर, बहादुराना लड़ाइयां लड़कर और बेहिसाब कुर्बानियां देकर असली मुकाबला करने का काम तो वहां के क्रान्तिकारी वामपंथियों ने ही किया था। भाकपा, माकपा वाले तो उस समय कमाण्डो के साये में थे और घरों में दुबके थे। अब एक बार फिर, पूरे देश के पैमाने पर वही करना पड़ सकता है। साथियो! क्या हम तैयार है?

(पेज 5 से आगे)

मई दिवस पर मजदूरों का आह्वान..

मजदूर आंदोलन की आवश्यकता है। हमें आगे बढ़ने का साहस करना होगा। **रिजर्व बैंक कर्मचारी यूनियन के संयुक्त सचिव श्री कान्त अरोड़ा** का कहना कि मजदूर आंदोलन की कमजोरी के चलते देश में प्रतिक्रियावादी शक्तियां ताकतवर हो गई हैं। यह बेहद खतरनाक हैं। हमें इनके खिलाफ लड़ने की ठोस योजना लेनी होगी। **डाक यूनियन के पूर्व सर्किल सेक्रेटरी राम लाल सिंह** का कहना था कि हमें न सिर्फ नई आर्थिक नीतियों के खिलाफ लड़ना होगा बल्कि उसकी सहभागिनी फासीवादी राजनीति का मुकाबला करना होगा। **एच.ए.एल. कर्मचारी यूनियन के अशोक बाजपेई** ने कर्मचारियों-मजदूरों के अधिकारों परसरकार के हमलों पर आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा कि हमें इसके खिलाफ लड़ने की एक कारगर रणनीति तैयार करनी होगी। **यू.पी. रोडवेज कर्मचारी यूनियन के के.के. शुक्ला** ने गुजरात नरसंहार पर सरकार की कड़ी आलोचना करते हुए फासीवादी राजनीति के दोगले चरित्र को उजागर किया।

सभा को **स्कूटर्स इंडिया कामगार यूनियन के सोहन लाल, ललित कला केन्द्र के एस.एस. हुसैन, डाक लेखा कर्मचारी संघ के सहायक महासचिव आर.पी. सिंह, सर्किल सचिव भवन नाथ, मु.मसूद, के.एच. सिद्दीकी, बीमा यूनियन के ए.एच. परवेज, खाद्य निगम मजदूर संघ के विजय कुमार यादव, विजय सिंह, सरकारी प्रेस के मु.मशहूद, रिजर्व बैंक के अभय चौधरी** ने भी संबोधित किया। सभा के अधयक्ष **सी.बी. सिंह** ने मजदूरों की इस पहलकदमी की सराहना करते हुए कहा कि आज इस सभा से उनके भीतर बहुत उम्मीद पैदा हुई है। मजदूर वर्ग अपने क्रान्तिकारी मिशन को भूला नहीं है। उन्होंने हर स्तर पर सहयोग का वायदा किया। सभा का संचालन ओम प्रकाश सिन्हा ने किया।

मर्यादपुर

"मई दिवस दुनिया भर के मजदूरों का मुक्ति दिवस है, इसी दिन शिकागो के मजदूरों ने आठ घंटे काम, आठ घंटे आराम व आठ घंटे मनोरंजन की मांग को लेकर लड़ाई लड़ी थी। अमानवीय शोषण के खिलाफ अपने मानवीय अधिकारों का झण्डा बुलन्द किया था और अपनी शहादत दी थी। उन शहीदों का सीधा संदेश था कि मेहनतकश वर्ग जब तक शोषण की व्यवस्थाओं का खात्मा कर अपनी मुक्ति हासिल नहीं कर लेता तब तक उसकी समस्याओं का कोई अन्त नहीं है।" उपरोक्त बातें **देहाती मजदूर किसान यूनियन, नौजवान भारत सभा** और **बिगुल मजदूर दस्ता** द्वारा संयुक्त रूप से मई दिवस पर आयोजित सभा को सम्बोधित करते हुए नौजवान भारत सभा के डॉ. जसवन्त ने कही। नौजवान भारत सभा के श्री नन्दलाल ने कहा कि, आज हमारे देश का शासक वर्ग, साम्राज्यवादियों का जूनियर पार्टनर बन कर मेहनतकशों की खुली लूट कर रहा है, मेहनतकश जनता को मरने के लिए सड़कों पर धकेल रहा है। मेहनतकशजनता अपनी एका कायम न कर सके इसलिए उसे साम्प्रदायिक हिंसा की आग में झोंक रहा है। दमनकारी कानून बनाकर उनके सारे अधिकारों को छीन रहा है। श्री **नन्दलाल** ने कहा कि मजदूर वर्ग ही शासकों के इन साजिशों का माकूल जवाब दे सकता है, सभी मेहनतकशों को अपनी एक जुटता कायम करते हुये शासकों की हर कोशिशों को नाकाम करना होगा और अपनी मुक्ति का लक्ष्य हमेशा अपने सामने रखना होगा। सभा को सम्बोधित करते हुए श्री **राम प्यारे सिंह** एडवोकेट ने कहा कि, फासिस्ट राजग गठबन्धन और समूचे शासक वर्ग की सहमति से आज देश के मझोले व छोटे किसानों को अपनी जगहों जमीन से उजड़ने को बाध्य कर रहा है, वह मुट्ठी पर कुलंको, साहूकारों के मुनाफे को बनाये रखने की नीति पर चल रहा है। ऐसी हुकूमतों का जनद्रोही चरित्र आज सबके सामने है। अब उनका खात्मा करने के अलावा मजदूर वर्ग के पास और कोई रास्ता नहीं है। इस अवसर पर आयोजित सभा को नेशनल पी.जी. कालेज के डॉ. **विश्वनाथ मिश्र** ने व श्री **पी.एन. सिंह** ने भी सम्बोधित किया, सभा का संचालन **देहाती मजदूर-किसान यूनियन के हरिहर यादव** ने किया।

गोरखपुर

"मई दिवस वह दिन है जब तमाम देशों के मेहनतकश वर्ग-चेतना की दुनिया में प्रवेश करने का जश्न मनाते हैं, इंसानों के हाथों इंसान के शोषण व दमन के खिलाफ अपनी लड़ाकू एकजुटता का इजहार करते हैं, करोड़ों मेहनतकशों को भूख और गरीबी की जिन्दगी से आजाद कराने की प्रतिज्ञा करते हैं।" ये बातें आज राजकीय पालीटेक्नीक गेट के सामने नुक्कड़ पर आयोजित सभा में **बिगुल मजदूर दस्ता** के श्री **आदेश कुमार** ने कही। श्री आदेश कुमार ने कहा कि, आज पूरी दुनिया में एक बार फिर श्रम और पूंजी की ताकतें एकदम आमने-सामने खड़ी हैं। महान मजदूर क्रांतियों की फिलहाली पराजय के चलते पूंजी की शक्तियों ने मेहनतकश जनता पर पूरी ताकत से हमला बोल दिया है। जुझारू संघर्षों और कुर्बानियों से हासिल एक-एक हक छीना जा रहा है। काले कानूनों और दमन के आतंक से हमें रौंदना चाह रहे हैं। मज़हबी फासीवादी कहर से हमारी एका को तोड़ना चाह रहे हैं। इसके खिलाफ हमें एकजुट होकर संघर्ष करना होगा। जीवन बीमा निगम मण्डल कार्यालय में आयोजित सभा में बोलते हुए नारी सभा की सुश्री **मीनाक्षी** ने कहाकि, निजीकरण उदारीकरण की नीतियों को एक सेक्टर के मजदूर अकेले नहीं पलट सकते, इसके लिए सभी मेहनतकशों को इलाकाई एकजुटता कायम करनी होगी और मिलकर लड़ना होगा। मई दिवस के इस अवसर पर बिगुल मजदूर दस्ता ने रेलवे कारखाना, बैंक व बीमा कार्यालयों, बिजली विभाग के कार्यालयों, सिंचाई विभाग, लोकनिर्माण विभाग व अन्य विभागों में मई दिवस के ऐतिहासिक व आज के दौर पर लिखे नारों की पोस्टरिंग की। 'मई-दिवस का आह्वान' नामक पर्चा बांटा और भिन्न-भिन्न आफिसों व नुक्कड़ों पर सभायें की।

विशेष सामग्री

(पन्द्रहवीं किश्त)

पार्टी की बुनियादी समझदारी

अध्याय - 6

पार्टी का केन्द्रीकृत नेतृत्व

एक क्रांतिकारी पार्टी के बिना मजदूर वर्ग क्रांति को कतई अंजाम नहीं दे सकता। लेनिन ने इस बात को बार-बार जोर देकर कहा था। स्तालिन और माओ ने भी बराबर इस बात पर जोर दिया और बीसवीं सदी की सभी सफल सर्वहारा क्रान्तियों ने भी इसे सत्यापित किया।

लेनिन ने सर्वहारा वर्ग की क्रान्तिकारी पार्टी के सांगठनिक उसूलों का निर्धारण किया और इसी फौलादी सांचे में बोल्शेविक पार्टी को ढाला। चीन की पार्टी भी बोल्शेविक पार्टी की ही उत्तराधिकारी थी। सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के दौरान, समाजवादी समाज में वर्ग-संघर्ष का संचालन करते हुए माओ के नेतृत्व में चीन की पार्टी ने अन्य युगान्तरकारी सैद्धान्तिक उपलब्धियों के साथ-साथ लेनिनवादी सांगठनिक सिद्धान्तों को भी और आगे विकसित किया।

सोवियत संघ और चीन में पूंजीवाद की पुनर्स्थापना के लिए बुर्जुआ तत्वों ने सबसे पहले यही जरूरी समझा कि सर्वहारा वर्ग की पार्टी का चरित्र बदल दिया जाये। हमारे देश में भी संसदीय रास्ते की अनुगामी नामधारी कम्युनिस्ट पार्टियां मौजूद हैं। भारतीय मजदूर क्रांति को सफल बनाने के लिए भारत में भी सर्वहारा वर्ग की एक सच्ची क्रान्तिकारी पार्टी खड़ी करने का काम सर्वोपरि है।

इसके लिए बेहद जरूरी है कि मजदूर वर्ग यह जाने कि असली और नकली कम्युनिस्ट पार्टी में क्या फर्क होता है और एक क्रान्तिकारी पार्टी कैसे खड़ी की जानी चाहिए।

इसी उद्देश्य से, फरवरी, 2001 अंक से हमने एक बेहद जरूरी किताब 'पार्टी की बुनियादी समझदारी' के अध्यायों का किश्तों में प्रकाशन शुरू किया है। इस अंक में पन्द्रहवीं किश्त दी जा रही है। यह किताब सांस्कृतिक क्रान्ति के दौरान पार्टी-कतारों और युवा पीढ़ी को शिक्षित करने के लिए तैयार की गयी श्रृंखला की एक कड़ी थी। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की दसवीं कांग्रेस (1973) में पार्टी के गतिशील क्रान्तिकारी चरित्र को बनाये रखने के प्रश्न पर अहम सैद्धान्तिक चर्चा हुई थी, पार्टी का नया संविधान पारित किया गया था और संविधान पर एक महत्वपूर्ण रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी थी। इसी नई रोशनी में यह पुस्तक एक सम्पादकमण्डल द्वारा तैयार की गयी थी। मार्च, 1974 में पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, शंघाई से इस पुस्तक के प्रथम संस्करण की 4,74,000 प्रतियां छपीं। यह पुस्तक पहले चीनी भाषा से फांसीसी भाषा में अनूदित हुई और 1976 में प्रकाशित हुई। फिर नार्मन बेथ्यून इंस्टीच्यूट, टोरण्टो (कनाडा) ने इसका फांसीसी से अंग्रेजी में अनुवाद कराया और 1976 में ही इसे प्रकाशित भी कर दिया। प्रस्तुत हिन्दी अनुवाद मूल पुस्तक के इसी अंग्रेजी संस्करण से किया गया है।

- सम्पादक

पार्टी का संविधान अपेक्षा करता है कि "राज्य संस्थाएं, जन मुक्ति सेना और मिलिशिया, मजदूर यूनियनें, गरीब और निम्न-मध्यम किसान सभाएं, नारी संघों, कम्युनिस्ट युवा लीग, रेड गार्डस, बाल रेड गार्डस और दूसरे क्रांतिकारी जनसंगठनों सभी को पार्टी के केन्द्रीकृत नेतृत्व को जरूर मानना चाहिए।" इस केंद्रीकृत नेतृत्व को मजबूत बनाना और सर्वहारा वर्ग की अग्रिम पंक्तियों में इसकी क्रांतिकारी भूमिका को पूरी तरह से प्रभावी बनाना – यही इस बात की बुनियादी गारण्टी है कि हमारा समाजवादी उद्देश्य और भी बड़ी जीतें हासिल करेगा। सभी कम्युनिस्टों को अपने पार्टी-बोध को मज़बूत बनाना चाहिए, सचेतन तौर पर पार्टी के केंद्रीकृत नेतत्व के अधिकार को मानना चाहिए।

पार्टी को सभी मामलों में नेतृत्व देना चाहिए; यह एक महत्वपूर्ण मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त है

सौ साल से भी पहले, मार्क्स व एंगेल्स ने पेरिस कम्यून के अनुभव का समाहार करते हुए स्पष्ट तौर पर बतलाया था: **"सम्पत्तिधारी वर्गों की इस सामूहिक शक्ति के विरुद्ध मजदूर वर्ग, एक वर्ग के रूप में, सम्पत्तिधारी वर्गों द्वारा बनाई गई सभी पुरानी पार्टियों से अलग, अपने आप को एक राजनीतिक पार्टी में संघटित किए बगैर नहीं लड़ सकते।"** रूसी क्रांति का नेतृत्व करते हुए लेनिन ने पार्टी के निर्माण और इसकी नेतृत्वकारी भूमिका को बहुत महत्व दिया था। 1905 में अपने लेख, "विद्रोह के लिए एक जुझारू समझौता," उन्होंने लिखा था: **"स्वतंत्र, समझौता न करने वाली सर्वहारा वर्ग की मार्क्सवादी पार्टी में हीं हम समाजवाद की जीत की एकमात्र प्रतिज्ञा को और जीत की ऐसी राह को देखते हैं जो बुलमुलपन से सबसे अधिक मुक्त है।"** अक्टूबर क्रांति की विजय के बाद, एक उचित समय पर सर्वहारा की तानाशाही के अनुभव का समाहार करते हुए, लेनिन ने एक बार फिर जोर देकर कहा: **". ... (सरकार की) सभी राजनीतिक और आर्थिक गतिविधियां मजदूर वर्ग की वर्ग सचेत अगुआ-कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा पथ-प्रदर्शित होती हैं।"** पार्टी-निर्माण से सम्बन्धित मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त हमें सिखाता है कि: पार्टी का नेतृत्व, सर्वहारा क्रान्ति में जीत हासिल करने के लिए सर्वहारा अधिनायकत्व को स्थापित और मजबूत करने और वर्गों के उन्मूलन के अंतिम उद्देश्य की पूर्ति के लिए, एक बुनियादी और अपरिहार्य शर्त है। सर्वहारा पार्टी के नेतृत्व में सर्वहारा वर्ग और व्यापक जनता द्वारा बुर्जुआ वर्ग व अन्य शोषक वर्गों के विरुद्ध छेड़े गए लम्बे संघर्ष में पार्टी को लगातार अपने केंद्रीकृत नेतृत्व को मजबूत करते रहना चाहिए।

पार्टी के केंद्रीकृत नेतृत्व का सशक्तीकरण हमेशा से ही अध्यक्ष माओ की शानदार धारणाओं में से एक रहा है। कृषि क्रांति के दौरान, अपनी महान रचना **पार्टी में भ्रांतिपूर्ण विचारों को सही करने के बारे में** उन्होंने लाल सेना और जन आंदोलनों का नेतृत्व करने में पार्टी के अनुभव का एक गम्भीर समाहार प्रस्तुत किया और स्पष्ट रूप में बताया कि पार्टी के केंद्रीकृत और एकीकृत नेतृत्व को कैसे मजबूत बनाया जाय। जापान के खिलाफ प्रतिरोध-युद्ध के दौरान, उस समय संघर्ष में मौजूद स्थिति और पार्टी के भीतर के दो लाइनों के संघर्ष के अनुभवों के आधार पर, अध्यक्ष माओ ने स्वयं कई महत्वपूर्ण दस्तावेजों का मसौदा तैयार करने में अगुआ भूमिका निभाई। इन दस्तावेजों में "पार्टी स्पिरिट के सशक्तीकरण पर प्रस्ताव", "जापानी-विरोधी आधार क्षेत्रों में पार्टी नेतृव को एकीकृत करने और विभिन्न संगठनों के बीच सम्बन्धों के सामान्यीकरण पर प्रस्ताव" और "नेतृत्व के तरीकों के सम्बन्ध में कुछ निर्णायक प्रश्न", जिसमें केंद्रीकृत पार्टी नेतृत्व को लागू करने के सिद्धान्तों को समझाया गया है, जैसे दस्तावेज भी हैं। इन प्रस्तावों में उन्होंने साफ तौर पर कहा था: "आधार क्षेत्रों में पार्टी नेतृत्व के केंद्रीकृत और एकीकृत चरित्र को प्रत्येक आधार क्षेत्रों में एक एकीकृत पार्टी कमेटी द्वारा व्यक्त होना चाहिए, जो हर चीज में अगुआई करे।" मुक्ति-युद्ध के दौरान अध्यक्ष माओ की रिपोर्टों की एक व्यवस्था स्थापित करने के बारे में, पार्टी की कमेटी व्यवस्था को मजबूत बनाने के बारे में और पार्टी कमेटियों की कार्य प्रणाली, जैसी रचनाएं पार्टी के केन्द्रीकृत नेतृत्व को सुनिश्चित करने के लिए एक ठोस कार्य दिशा, अवस्थिति और व्यवस्था मुहैया कराती हैं। अध्यक्ष माओ ने एक बार फिर जोर दिया: **"अगर क्रांति होनी है, तो एक क्रान्तिकारी पार्टी जरूर होनी चाहिए, बिना एक पार्टी के जो मार्क्सवादी-लेनिनवादी क्रान्तिकारी सिद्धान्त पर और मार्क्सवादी-लेनिनवादी शैली में बनी हो मजदूर वर्ग और व्यापक जनता को नेतृत्व देकर साम्राज्यवाद और उसके कुत्तों को हराना असंभव है।** (माओ त्से तुङ, **संकलित रचनाएं**, खण्ड-4, "दुनिया की क्रान्तिकारी ताकतें एकजुट हों, साम्राज्यवादी हमले का विरोध करो", p. 284, अंग्रेजी संस्करण) समाजवादी क्रांति के दौरान अध्यक्ष माओ ने पार्टी के सदस्यों को और शिक्षित किया ताकि वे अपनी पार्टी की अवधारणा को मजबूत कर सकें और इसके केंद्रीकृत नेतृत्व का सम्मान और उसकी रक्षा करें। 1957 में **जनता के बीच अन्तरविरोधों को सही ढंग से हल करने के बारे में** लेख में उन्होंने **"खुशबूदार फूलों"** को **"जहरीली खरपतवार"** से अलग करने के लिए सिद्धान्त के तौर पर एक राजनीतिक कसौटी दी: **"शब्दों और कार्यों... कम्युनिस्ट पार्टी" के नेतृत्व को मजबूत बनाने में मदद करना चाहिए न कि त्यागने या कमजोर करने में।"** महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के दौरान, अध्यक्ष माओ ने अच्छे समय में एक बार और पार्टी के केंद्रीकृत नेतृत्व के सशक्तीकरण के दौरान अर्जित अनुभव का समाहार किया और ल्यू शाओ ची, लिन पियाओ और उनके ही जैसे उचक्कों के अपराधों की तीखी आलोचना की जिन्होंने पार्टी के नेतृत्व को गुप्त रूप से तोड़ा-फोड़ा। अध्यक्ष माओ के केन्द्रीकृत नेतृत्व के सिद्धान्त ने पार्टी निर्माण के मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त को और समृद्ध और विकसित किया है, और हमें यह दिखलाया है कि पार्टी के केंद्रीकृत नेतृत्व का कैसे सम्मान करें और उसे बचाएं।

हमारी पार्टी एक सर्वहारा पार्टी है। यह सर्वहारा वर्ग के उन्नत तत्वों से बनी है और एक ऊर्जस्वी हरावल संगठन है जो सर्वहारा वर्ग और क्रान्तिकारी जनता को वर्ग-शत्रुओं के खिलाफ संघर्ष में रास्ता दिखलाती है। हमारी पार्टी कंवल कोई सर्वहारा जन संगठन नहीं है बल्कि सर्वहारा के संगठन का उन्नततम रूप है। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का बुनियादी कार्यक्रम बुर्जुआ वर्ग व अन्य सभी शोषक वर्गों को उखाड़ फेंकना, बुर्जुआ वर्ग की तानाशाही के स्थान पर सर्वहारा वर्ग की तानाशाही को स्थापित करना और पूंजीवाद पर समाजवाद की विजय दर्ज करना है। पार्टी का अंतिम लक्ष्य कम्युनिज्म की प्राप्ति है। पार्टी का बुनियादी कार्यक्रम और अंतिम लक्ष्य केंद्रित रूप में सर्वहारा और अन्य मेहनतकश वर्गों के लोगों की अभिलाषाओं और इच्छाओं को अभिव्यक्त करते हैं। वे ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया को सुनिश्चित रूप से अभिव्यक्त करते हैं। इसके हिरावल चरित्र और गौरवशाली जिम्मेदारी जो इसके कन्धों पर है की वजह से ही हमारी पार्टी व्यापक जनता के सबसे बड़े हिस्सों के हितों का प्रतिनिधित्व करने के काबिल है, और यही चीज चीनी जनता के क्रांतिकारी उद्देश्य में इसकी नेतृत्वकारी स्थिति और भूमिका को निर्धारित करती है।

हमारी पार्टी मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ त्से-तुङ विचारधारा को सैद्धान्तिक आधार मानती है जो इसके विचारों का पथ-प्रदर्शन करता है। यही चीज उसे सामाजिक विकास के वस्तुगत नियमों को पकड़ने और चीनी क्रांति की वर्तमान वास्तविकता और इतिहास को ठीक ढंग से समझने और इसके जरिए, हमारे समाज के प्रधान वर्ग-सम्बन्धों का एक वैज्ञानिक विश्लेषण जारी रखने, सही कार्यदिशा और यही राजनीतिक सिद्धान्तों को विस्तार देने, और सर्वहारा वर्ग और व्यापक क्रान्तिकारी जनता को बुर्जुआ वर्ग और दूसरे शोषक वर्गों, और "वामपंथी" और दक्षिणपंथी दोनों प्रकार के अवसरवाद पर विजय प्राप्त करने तक ले जाने के काबिल बनाती है, ताकि समाजवादी क्रांति को अंत तक चलाया जा सके।

हमारी पार्टी स्वयं अध्यक्ष माओ द्वारा संगठित और शिक्षित हुई है। यह एक महान, गौरवशाली और सही पार्टी है। क्रांतिकारी संघर्षों के लम्बे वर्षों के दौरान, हमारी पार्टी प्रशिक्षित हुई है और इसे हर तरह की कठिन स्थितियों और जटिल संघर्षों की कसौटी पर परखा गया है और इसने कभी विकसित होना, बढ़ना, और देश के हर हिस्से की जनता का समर्थन और भरोसा जीतना बंद नहीं किया है। अपने ही अनुभव से जनता के व्यापक हिस्सों ने गहराई से इस बात को समझा है कि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के मजबूत नेतृत्व के बिना, बिना उस बुनियादी समर्थन के जो चीनी कम्युनिस्टों ने दिया, साम्राज्यवाद, सामंतवाद और नौकरशाह पूंजीवाद के "तीन बड़े पर्वतों" को उखाड़ फेंकना असंभव होता। इतिहास ने पूरी तरह से यह प्रदर्शित कर दिया है कि पार्टी द्वारा प्रदत्त नेतृत्व सर्वहारा वर्ग के लिए क्रांति में जीत हासिल करने की बुनियादी गारण्टी है।

हमारी पार्टी के अन्दर ही इस मुद्दे पर दो लाइनों के बीच एक तीखा संघर्ष हमेशा से ही चला आया है, कि पार्टी का नेतृत्व कायम रखा जाय या नहीं। विभिन्न अवसरवादी कार्यदिशाओं के सरदारों ने हमेशा से ही पार्टी के केन्द्रीकृत नेतृत्व का विरोध करने के लिए हर तरीका इस्तेमाल किया है और उन्होंने इसे कमजोर बनाया है और इसके दमन की हद तक भी गए हैं। ल्यू शाओ ची ने यह भ्रांति फैलायी कि "क्रांति को नेतृत्व की अपरिहार्य रूप से आवश्यकता नहीं होती" और यह दावा किया कि कम्युनिस्ट पार्टी व अन्य संगठनों के बीच संबंध एक "पूरक सम्बन्ध" था यानी पार्टी "केवल सहायता कर सकती है न कि नेतृत्व", और उसने खुले तौर पर इसकी नेतृत्वकारी भूमिका को नकार दिया। बुर्जुआ कैरियरवादी और षड्यंत्रकारी लिन पियाओ ने एक ओर "कई केन्द्रों और कोई केन्द्र नहीं" के सिद्धान्त को बढ़ावा दिया ताकि अध्यक्ष माओ के नेतृत्व वाली पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के सही नेतृत्व को नकारा जा सके, और दूसरी ओर उसने पूरा जोर लगाकर यह विचार फैलाया कि जनांदोलन तो "स्वाभाविक तौर पर उपयुक्त" थे, ताकि उनमें पार्टी के नेतृत्व का विरोध किया जा सके। पार्टी में दो लाइनों का संघर्ष यह दिखलाता है कि यह प्रश्न कि पार्टी के नेतृत्व को सशक्त और मजबूत किया जा रहा है या, उल्टे उसे कमजोर और नष्ट किया जा रहा है, वह महत्वपूर्ण कसौटी है जो असली मार्क्सवाद को पाखण्डी वाले से अलग करता है और दो लाइनों के संघर्ष का एक महत्वपूर्ण पहलू है। जहां तक ल्यू शाओ ची, लिन पियाओ और ऐसे ही दूसरे अपराधियों का सवाल है हमें उनके घातक प्रभाव को खत्म करने और पार्टी के केन्द्रीकृत नेतृत्व का और सचेतन तौर पर सम्मान करने और उसकी रक्षा करने के काबिल बनने के लिए, उनके खिलाफ गहराई के साथ क्रांतिकारी आलोचना की शुरुआत करनी चाहिए।

क्रमशः

मई दिवस के महान सर्वहारा शहीदों में से एक योद्धा पार्सन्स की जीवन गाथा

अदालत में अचानक सन्नाटा छा गया। क्या जज, क्या वकील, क्या पुलिस, क्या अहलकार, क्या पूंजीपति, क्या गुण्डे सभी की आंखे खुली की खुली रह गयी। औरतें, मजदूर नेता तथा वहां उपस्थित लोग परेशान हो उठे। मज़दूर हित की बात सोचने वाले जहां दुखी थे, वहीं हाकिमों की समझ में नहीं आ रहा था कि इतनी आसानी से कोई 'मौत को मौसी' कैसे कह सकता है? मगर वह अदालत में हाजिर होते ही गरज उठा-'मैं अपने बेकसूर कामरेडों के साथ 'इंसाफ' के सामने हाजिर हुआ हूं।

कौन था वह योद्धा जिसने अचानक सारे अमरीकन समाज को अचंभित कर दिया? यह था छोटे कद का दुबला पतला अमरीकन मजदूर जमात का लोकप्रिय प्यारा नौजवान नेता 'अल्बर्ट पार्सन्स'। यह वह क्रान्तिकारी योद्धा था जो 1886 की मई की घटनाओं के बाद, सरकारी साजिश को भांपते हुए भूमिगत हो गया था तथा जिसे अमरीका की सारी पुलिस, गुप्तचर विभाग तथा गुण्डे पूरा जोर लगाने के बाद भी गिरफ्तार नहीं कर पायी। सरकारी तथा बुर्जुआ अखबार जिसे "शैतान" के नाम से पुकारते थे तथा रोज ही उसे फांसी दिये जाने की पुरजोर वकालत करते थे। – ऐसा यह योद्धा आज खुद ही फांसी के फंदे को चूमने के लिए अदालत में आ धमका। क्यों? इस बाबत उसने अपने एक संग्रामी साथी से कहा- 'मैं जानता हूं, मैंने क्या किया है, वह मुझे मार देंगे। पर मेरे लिए मेरे बेकसूर साथी सजा भुगतेंगे, यह जानकर मेरे लिए बाहर रहना नामुमकिन हो गया था।' ऐसा था वह महान मई दिवस का बांका शहीद पार्सन्स, जिसे फांसी का फंदा भी उसे अपने साथियों से अलग न कर सका। एक पत्रकार ने सच लिखा है कि-'उसके मन में न दुख था न पश्चाताप! उसके उदार हृदय के सामने समाज ही उस कटघरे में खड़ा है न कि वह।

पार्सन्स का बचपन

पार्सन्स का जन्म 1848 में हुआ। यह वह समय था जब पूंजीवादी व्यवस्था गंभीर संकटों की लपेट में आकर डगमगा रही थी, जब मजदूर वर्ग अपनी किस्मत का खुद मालिक बनने के लिए मैदानी जंग में कूद पड़ा था। जब विश्व के मंच पर मजदूर वर्ग के वैज्ञानिक सिद्धांत मार्क्सवाद का जन्म हो रहा था। उसी समय मजदूरों के महान नेता **कार्ल मार्क्स** ने कम्युनिस्ट घोषणापत्र में यह नारा दिया था- **"दुनिया भर के मजदूरों एक हो जाओ! तुम्हारे पास खोने के लिए अपनी जंजीरों के सिवा कुछनहीं है, मगर जीतने के लिए पूरा संसार है।"**

पार्सन्स के पिता इसाई-धर्म के कट्टर पादरी थे। उनकी माता एलिजाबेथ और सारा परिवार कट्टर धार्मिक बंधनों में जकड़ा हुआ था। रिवाज के मुताबिक यह पादरी परिवार काले लोगों को बंधआ बनाकर घर में रखता और काम करवाता था। पार्सन्स अभी पांच वर्ष का ही था कि उसके माता-पिता की मौत हो गयी। इस कारण पार्सन्स अपने भाई के पास चला गया, जहां उसका पालन-पोषण ऐथर नाम की एक गुलाम नीग्रोदासी ने किया। यह काफी सूझ-बूझ वाली महिला ममता की देवी थी। उसने पार्सन्स को काले लोगों की नरक जैसी जिन्दगी के बारे में ऐसी बातें बताई कि पार्सन्स का बाल मन तड़प उठा। यही कारण था कि तब अमीर तथा कट्टर पादरी का यह बच्चा हमेशा-हमेशा के लिए मजदूर वर्ग का संग्रामी साथी बन गया। अपनी इस ऐथर मौसी से पार्सन्स बहुत प्रभावित था, उसने अनेकों बार सरेआम कहा कि-'ऐथर मेरी नजदीकी मित्र थी और उससे ही मुझे मां का प्यार मिला।'' उस समय किसी इसाई पादरी के पुत्र का एक गुलाम काली औरत को ऐसा अधिकार देना 'धर्म का अपमान' तथा 'बगावत' समझा जाता था।

छोटी उम्र में बड़ी उपलब्धियां

पार्सन्स की जिन्दगी कोई फूलों की सेज नहीं थी। जन्म से मौत तक के 38 सालों के जीवन में उसे कई मुश्किलों तथा दुख तकलीफों ने घेरा। मगर वह किसी भी मुश्किल कठिनाई से न डरता हुआ उनका सामना करता और सफल होता। इसी कारण उसको मजदूर साथी तथा मेहनतकश उसे प्यार से 'विजयी पार्सन्स' कहते। वह अभी ग्यारह साल का था जब उसने सोच समझकर सुख व आराम की जिन्दगी का त्याग कर 'डेली न्यूज' में नौकरी कर ली। उसने दो साल ही नौकरी की थी कि अमेरिका में गृह युद्ध शुरू हो गया। अमेरिका के 60 मजदूरों ने मिलकर के 'नेशनल लेबर यूनियन' का गठन किया और महान सिल्विस के नेतृत्व में गृहयुद्ध में हथियारबंद दस्ते भेजने शुरू कर दिया। हालांकि पार्सन्स उस समय किसी संगठन का सदस्य नहीं था लेकिन उसने युद्ध में हिस्सा लेने को ठान लिया। लेकिन मुश्किल यह थी कि तेरह वर्ष का बच्चा युद्ध में हिस्सा नहीं ले सकता, पर वह अपने फैसले पर अड़ा रहा और उसने घुड़सवारी तथा निशानेबाजी के ऐसे-ऐसे करिश्में दिखाये कि उसे 'घुड़सवार दल' में भरती कर लिया गया। पूरे साल जंग में करतब दिखाने के बाद पार्सन्स वापस आया तो बिल्कुल बदल चुका था। यह सत्रह साल का नौजवान सूझ-त्याग और बराबरी का जिन्दा मिसाल था।

काले लोगों का मसीहा

ऐथर मौसी के प्रभाव तथा प्रेरणा से प्रेरित पार्सनस ने सबसे पहले काले (नीग्रो) लोगों के अधिकारों के लिए काम करना शुरू किया। उसने काले लोगों को इन्साफ, आजादी तथा मुक्ति के लिए जागरूक करना शुरू किया। इसी मकसद से उसने एक पत्रिका निकालनी शुरू की। उसने काले लोगों की झुग्गियों को अपना घर बना लिया। पार्सन्स की कार्रवाईयों से गोरे जुनूनी चिढ़ गये। उन्होंने पार्सन्स को मौत के हवाले करने की कई योजनाएं बनाईं लेकिन बेखौफ पार्सन्स अपनी राह पर आगे बढ़ता रहा। पार्सन्स के इन प्रयासों से पूरे अमरीका में काले लोगों का आंदोलन खड़ा हुआ, उन्हें उनकी गुलामी से मुक्ति मिली और उन्हें भी इन्सान समझा जाने लगा। इन्हीं कारणों से पादरी पुत्र पार्सन्स हब्सियों, कुचले हुए अंग्रेजों, रेड इंडियनों और नीग्रो लोगों का मसीहा बन गया।

संग्रामी प्रेम विवाह

संग्रामी राह पर चलते हुए ही पार्सन्स की एक मैक्सीकन लड़की लूसी से मुलाकात हुई। रंग, कौम, देश व धर्म अलग-अलग होने के बाद भी दोनों के विचार एक थे। जिन्दगी को सुन्दर बनाने का सपना एक था। शोषित उत्पीड़ित लोगों के लिए मर मिटने का जज्बा एक था और इसी संग्रामी एकता ने धर्म, कौम तथा रंग की खोखली दीवारों को तोड़कर उनके इस साथ को विवाह में बदल दिया। वह बेहद गरीब थे, उनके पास गुजारे के लिए कुछ भी नहीं था, वह कई-कई दिन भूखे रहते, फटे-पुराने कपड़े पहनते पर उन्हें इस जीवन से कोई शिकायत न थी। वह सिर्फ क्रान्तिकारी आन्दोलनकर्ता ही नहीं थे बल्कि उनके अंदर ज्ञान हासिल करने की तीखी तड़प भी थी। वह एक-दूसरे के प्रेम, हौसला तथा प्रेरणाके स्रोत थे। उन्होंने जीवन भर एक दूसरे को सच्चा प्यार किया।

वर्गीय चेतना तथा मजदूर आंदोलन की ओर

मार्क्स, एंगेल्स तथा मॉर्गन की रचनाओं ने उनकी जिन्दगी को एक मोड़ दिया। उन्होंने जाना कि काले तथा अन्य मेहनती लोगों की मुक्ति मजदूर वर्ग की मुक्ति के साथ जुड़ी हुई है। उन्होंने जाना कि मेहनती लोगों के पैरों में पड़ी भूख, दुख तथा गुलामी की जंजीरे तब तक नहीं टूटेंगी जब तक कि पूंजीवादी व्यवस्था का समूल नाश नहीं किया जाता उन्होंने समझा कि मजदूरों के मुरझाये चेहरों तथा अनगिनत झुग्गियों में तब तक खुशियों की बहार नहीं आ सकती, जब तक मजदूर वर्ग समाजवाद के जरिए अपनी किस्मत का आप मालिकनहीं बन जाता। इस ज्ञान को हासिल करने के बाद वे मजदूर आंदोलन से जुड़ने के लिए शिकागो आ गये।

1876 में पार्सन्स "सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी तथा नाइट आफ लेबर" मजदूर संगठन में शामिल हो गये। पार्टी का **लक्ष्य पूंजीवादी समाज** को बदलकर **समाजवादी समाज** की स्थापना करना था, और इस मकसद के लिए वे पूरी तरह मजदूर वर्ग तथा मजदूर संघर्षों के साथ एकरूप हो गये। इस दौर में अमेरिकन मजदूर संघर्ष अपने चरम पर था। मीटिंगो, रैलियो, प्रदर्शनों, हड़तालों, घेरावों की बाढ़ आ गयी। इस आंदोलन को कुचलने के लिए पुलिस के अत्याचार ने सभी रिकार्ड तोड़ दिये। पूंजीपतियों ने छंटे हुए बदमाशों की **पिंकरटेन** नाम की एजेंसी में संगठित कर दिया। जहां पुलिस की गोलियों ने मजदूरों का लहू बहाया, वहीं **पिंकरटेन** गुण्डा गिरोह ने पीठ पीछे से हड़ताल तोड़ने के लिए भड़काऊ रोल अदा किया। और मजदूर नेताओं के अगवा करने और मार भगाने की काली करतूतें करता रहा। जेलें, लाठियां तथा शहादतें हर रोज की घटनाएं बन गयीं मगर यह जबरदस्त मजदूर आंदोलनों का रोक न सका। शिकांगो के मजदूर आंदोलन में पूंजीवादी राज्यसत्ता को हिलाकर रख दिया। **स्पाइस** तथा **पार्सन्स** इस आंदोलन के नेता थे। पार्सन्स ने इस आंदोलन को आगे और आगे बढ़ाने के लिए दिन रात एक कर दिया।

पार्सन्स ने शिकांगो में सबसे पहली यूनियन संगठित की। अधयक्ष पार्सनस के नेतृत्व में इस यूनियन में मजदूर एकता तथा संघर्ष के लिए सही तथा जानदार भूमिका अदा की। इस संगठन की क्रान्तिकारी भूमिका नेअन्य व्यवसाय के मजदूरों का ध्यान भी अपनी ओर खींचा। जहां कहीं भी संगठन और संघर्ष की जरूरत होती वह वहां सलाह मशवरे के लिए हाजिर होता।

पार्सनस ने इस समय भी महान रेलवे की हड़ताल की अगुवाई की। यह हड़ताल मजदूर आंदोलन को जगाने वाली थी। शुरू में कोई असली संगठन नहीं था, लीडर भी नाममात्र के थे। मगर इसने पार्सनस को एक समझदार प्रखर क्रान्तिकारी नेता के तौर पर स्थापित कर दिया।

शुरू में एक रेल पटरी के मजदूरों ने काम छोड़ा, फिर दूसरी फिर तीसरी। तथा इस तरह देश को सबसे बड़ी हड़ताल का सामना करना पड़ा। पार्सन्स ने इस हड़ताल की सफल लीडरशिप देने के लिए दिन रात एक कर दिया। वह एक से दूसरे मुहल्ले, कस्बे तथा शहर में घूमता रहता। उसे खाने-पीने नहाने धोने का भी समय नहीं मिलता। वह जगह-जगह मजदूरों को संबोधित करता कि साथियो! मैं तुम्हारे साथ इन्साफ तथा बेइंसाफी के लिए बात करना चाहता हूं। मानवीय अधिकारों के बारे में नहीं, मानवीय आशाओं के बारे में। क्योंकि अधिकार हमारे पास है ही क्या, मगर आशायें बहुत है।'' रेलवे मजदूर उसे सांस रोककर सुनते और निर्देश मुताबिक संघर्ष चलाते। उसकी इन बहादुराना कोशिशों से तीस वर्ष का पार्सन्स पूरे अमेरिका में चर्चित हो गया। अखबार उसे "मारकिन कम्यून नेता" तथा मजदूर **विजयी पार्सन्स** कहने लगे।

दूसरी ओर मालिकान आग बबूला हो उठे, रेलवे हड़ताल के दौरान ही लंबी पूछताछ और मारपीट के बाद एक पुलिस अधिकारी ने पार्सन्स को धमकाया कि 'उसका टैक्सास के एक गलीज, बागी हरामी का, शिकागो में आकर गड़बड़ पैदा करने का आखिर मतलब क्या है? और तुम्हारा जीवन खतरे में है। ट्रेडवीरडो के लोग यहां बैठे हैं वह तुम्हें बिजली के खंभे के साथ बांधकर जलाये बिना नहीं छोड़ेंगे, अगर भला चाहते हो तो शहर छोड़कर भाग जाओ मगर पार्सनस के लिए यह कोई पहली मौत की धमकी नहीं थी। **पिंकरटेन** के गुंडे पहले ही उसे मारने के मनसूबे बनाये बैठे थे। मगर मालिक यह नहीं जानते थे कि पार्सन्स जैसे योद्धाओं को धमकियों से डराया नहीं जा सकता है, न ही शहर छुड़वाया जा सकता है। वह अपना जीवन खतरे में डालकर भी मजदूरवर्ग के क्रान्तिकारी संघर्ष को नेतृत्व देने के लिए समर्पित रहा। पार्सन्स अमेरिकन मजदूर वर्ग का हरदिल अजीज नेता बन गया। शिकांगों से पांच सौ मील तक ऐसा कोई मजदूर संघर्ष नहीं होगा जिसमें पार्सन्स ने सीधे-सीधे हिस्सा न लिया हो।

इसी दौर में **'आठ घण्टे काम का दिन'** आन्दोलन के लिए ट्रेड यूनियन ने एकजुट होकर पार्सन्स को सारे मध्य पश्चिम में भेजा। वह जगह-जगह मजदूरों को काम के घण्टे आठ हो के लिए संघर्ष का आहवान करता। पार्सन्स का यह दौरा मजदूर आंदोलन के लिए प्रेरणा स्रोत बना। फिर वाशिंगटन में होने वाले नेशनल कांफ्रेंस में पार्सन्स को शिकागो से डेलीगेट बनाकर भेजा गया, वहां उसे ऊपरी कमेटी में चुना गया, उसे वाशिंगटन में रहते हुए राष्ट्रीय स्तर पर मजदूर आंदोलन में तालमेल बिठाना तथा आठ घण्टे आंदोलन के लिए आधार तैयार करना था।

पार्सन्स मार्क्सवादी बन गया

वाशिंगटन में पार्सन्स ने बहुत कुछ देखा, समझा, सोचा तथा विचार किया। नतीजतन अब वह एक मजदूर नेता से आगे बढ़कर कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी (समाजवादी) नेता बन गया। एक परिपक्व तथा समझदार अन्तरराष्ट्रीयतावादी। उसने अपनी लेबर पार्टी से नाता तोड़ लिया जो वोट सियासत के जरिये ही समाजवाद लाने का प्रयत्न कर रही थी। उसने पादरी नेता शिलिंग से कहा, **"आप एक आदमी से दिन में 12 घण्टे काम लेते हो, पर जीवित रहने के लिए उसे जो कुछ चाहिए, उसका आप उसे आधा ही देते हो। आप चाहते हैं कि वह वोट ध्यान तथा ईमानदारी से दे। मैं आपको बताना चाहता हूं कि अगर उसके बच्चे भूखे मर रहे हैं तो हैरानी की बात नहीं कि वह अपना वोट बेचे और हल सिर्फ एक ही है कि मेहनतकश लोग उठे और सभी कारखाने स्कूल तथा अदालतें अपने हाथ में ले लें।**

पार्सन्स मेहनतकशों के अन्तरराष्ट्रीय मजदूर संगठन में शामिल हो गया। उसने अपना पूरा समय आठ घण्टे काम के आन्दोलन तथा समाजवादी आंदोलन को अर्पित कर दिया। इसी उद्देश्य से उसने अन्तरराष्ट्रीय मजदूर संगठन के पहले साप्ताहिक अखबार **'खबरदार'** की नींव रखी और उसका संपादक बना। इस अखबार के माध्यम से मजदूर आंदोलन को सही दिशा दी, समाजवादी सिद्धान्तों, विचारों, उद्देश्यों का जोरदार प्रचार किया। मार्क्स के अगुवाई में **अन्तराष्ट्रीय मजदूर संगठन** तथा सिलविस की अगुवाई में **नेशनल लेबर यूनियन** 1866 से ही **"आठ घण्टे काम का दिन"** के लिए संघर्ष कर रहा था, पर इस मांग की भारी स्वीकृति अमेरिका से 1880 के बाद ही मिला। पार्सन्स की समझदारी, हिम्मत और अगुवाई के कारण मजदूर संगठन की एकता फौलाद की तरह **मजबूत** होती गई पार्सन्स के मजदूर **संगठन की** मेम्बरशिप 1880 में सिर्फ 28,000 थी, जो 1885 मेंएक लाख तथा 1886 में यह बढ़कर सात लाख तक पहुंच गई।

काम के घण्टे आठ का आंदोलन एक से दूसरे फैक्टरी, शहर, राज्य से होते हुए पूरे अमेरिका में जंगल की आग कीतरह फैल गया। आंदोलन को कुचलने के मालिकों ने लाठी, गोली, जेल, छंटनी तक का सहारा लिया, मजदूर बस्तियां उजाड़कर आंदोलन को तोड़ने की कोशिश की। पर आंदोलन दबने के बजाय बढ़ता ही गया। शिकागो इस आंदोलन का प्रमुख केन्द्र था तथा पार्सन्स एक प्रमुख नेता। आठ घंटे काम के इस आंदोलन ने पूंजीवादी राज्यसत्ता की नींव हिलाकर रख दी। मालिकान पार्सन्स तथा स्पाइस के खिलाफ जेहर घोल रहे थे तथा इन्हें मार डालने के मंसूबे बना रहे थे। बुर्जुआ अखबार इन दोनों महान नेताओं को खत्म कर देने को ललकार रहे थे।- **शिकागो मेल** चिल्लाया "इस शहर में दो बड़े शैतान आवारा घूम रहे हैं। देखने में भलेपर गड़बड़ फैलाने की इच्छा करते हुए यह कायर आदमी हैं। इनमें से एक का नाम पार्सन्स है दूसरे का स्पाइस... अमन भंग होने पर इनको ऐसा सबक सिखाओ कि अन्य लोगों के लिए मिसाल बन जाये। **शिकागो टाइम्स** ने लिखा-'इन यूनियन नेताओं पर हथगोले से हमला करना जायज है। ऐसा करने से उन्हें सही सबक मिलेगा, जिसको देखकर हड़ताली भी सुधर जायेंगे।" मगर यह शूरवीर लुटेरों के हर हमले का मुकाबला करते हुए मजदूर आंदोलन के लिए हर कुरबानी करने को तैयार थे।

- मेजर, लुधियाना

(शेष अगले अंक में

कविता

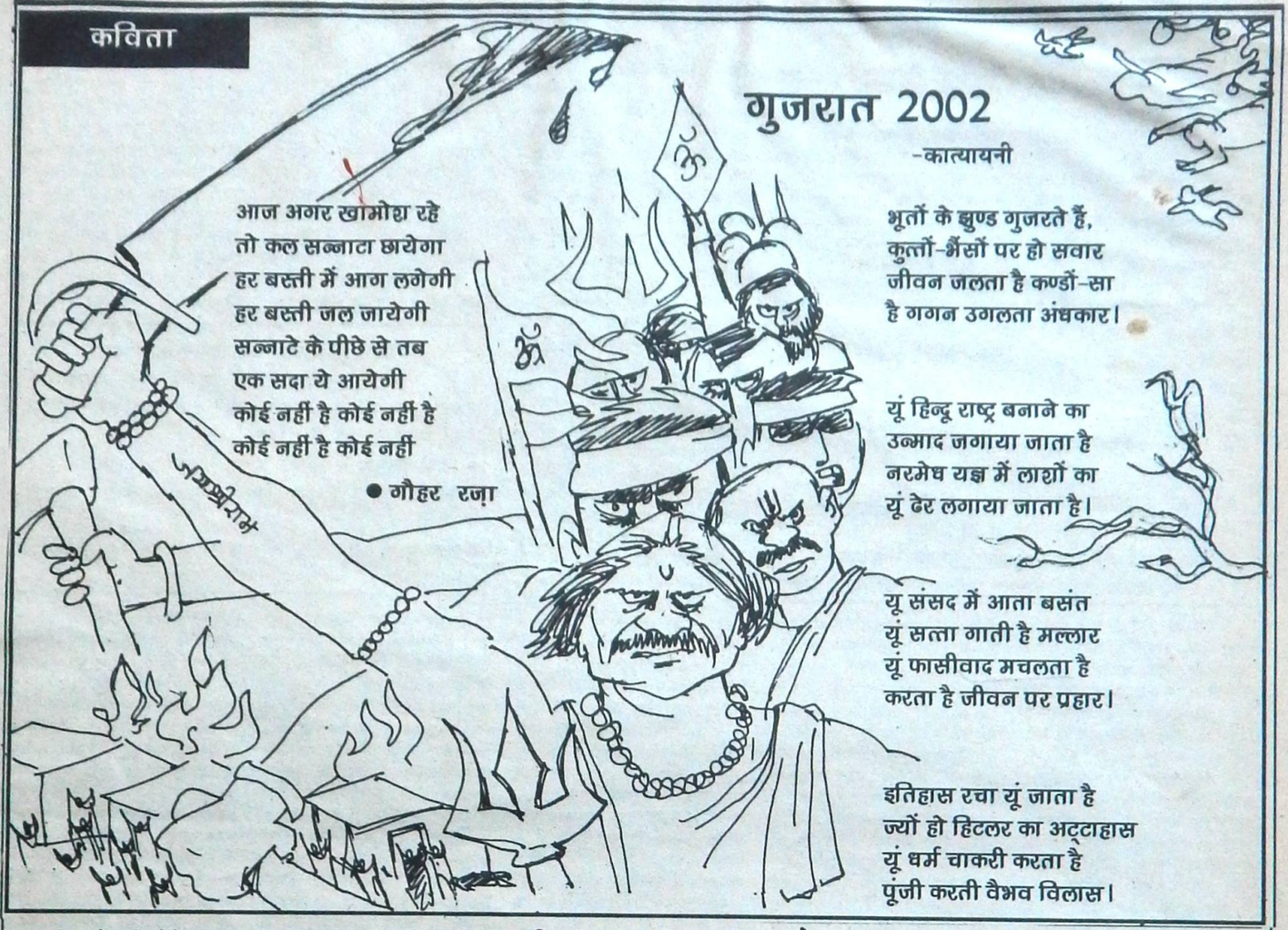

गुजरात 2002

-कात्यायनी

भूतों के झुण्ड गुजरते हैं,
कुत्तों-भैंसों पर हो सवार
जीवन जलता है कण्डों-सा
है गगन उगलता अंधकार।

यूं हिन्दू राष्ट्र बनाने का
उन्माद जगाया जाता है
नरमेध यज्ञ में लाशों का
यूं ढेर लगाया जाता है।

यू संसद में आता बसंत
यूं सत्ता गाती है मल्लार
यूं फासीवाद मचलता है
करता है जीवन पर प्रहार।

इतिहास रचा यूं जाता है
ज्यों हो हिटलर का अट्टाहास
यूं धर्म चाकरी करता है
पूंजी करती वैभव विलास।

यह दुनिया असहनीय है! इसे बदलना ही होगा!!

○ दुनिया के सभी लोगों की सभी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए सालाना 40 अरब डालर धन और चाहिए, जबकि सिर्फ यूरोप में शराब पर सालाना 1 खरब 5 अरब डालर खर्च होते हैं और सिगरेट पर 50 अरब डालर खर्च होते हैं।

○ पूरी दुनिया में सालाना नशीली दवाओं पर 4 खरब डालर खर्च होते हैं। तथा हथियारों और सेना पर 7 खरब 80 अरब डालर खर्च होते हैं।

○ पूरी दुनिया में सभी लोगों को भोजन और बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराने के लिए सालाना 13 अरब डालर धन और चाहिए जबकि यूरोप और अमेरिका में सिर्फ पालतू पशुओं के भोजन पर सालाना 17 अरब डालर खर्च होते हैं।

○ दुनिया में सभी बच्चों की बुनियादी शिक्षा के लिए सालाना 6 अरब डालर धन और चाहिए जबकि सिर्फ अमेरिका मे पाउडर-क्रीम आदि प्रसाधनों पर सालाना 8 अरब डालर खर्च होते हैं।

○ दुनिया के सभी लोगों को साफ पानी और शौचालय की सुविधा देने के लिए सालाना 9 अरब डालर धन और चाहिए जबकि यूरोप में प्रति वर्ष सिर्फ आइसक्रीम पर 11 अरब डालर खर्च होते हैं।

○ पूरी दुनिया में 4 खरब 35 अरब डालर सिर्फ विज्ञापनों पर खर्च होते हैं। इसमें बिक्री संबंधी अन्य कार्यों (कमीशन आदि) को जोड़ दें तो सालाना खर्च 10 खरब डालर तक पहुंच जाता है।

○ गरीब व पिछड़े (एशिया, अफ्रीका, लातिन अमेरिका के देश) देशों में 88 करोड़ लोग भूख से त्रस्त हैं। इन देशों के एक अरब 45 करोड़ लोगों में खून की कमी है। एक अमीर देश के एक बच्चे से पूरे जीवन में जितना उपयोग होगा और जितना प्रदूषण होगा, वह पिछड़े देश में पैदा होने वाले 30 से 50 बच्चे के बराबर होगा। पिछड़े देश में रहने वाले तीस प्रतिशत लोगों को साफ पानी उपलब्ध नहीं है।

○ दुनिया के बीस प्रतिशत बच्चे पांचवी कक्षा तक नहीं पहुंच पाते। दुनिया के 70 देशों में जहां एक अरब लोग रहते हैं, उपभोग आज 25 वर्ष पहले से कम है। दुनिया के सबसे गरीब महाद्वीप अफ्रीका में एक औसत परिवार का उपभोग पिछले 25 वर्षों में 20 प्रतिशत कम हो गया है। पिछले तीस वर्षों के दौरान सौ देशों की आर्थिक स्थिति में गिरावट आई है।

बोलते आंकड़े चीखती सच्चाइयां

○ पूरी दुनिया में 1 अरब 40 करोड़ लोगों को पीने का साफ पानी नहीं मिलता। 88 करोड़ लोगों को आधुनिक चिकित्सा सुविधाएं नहीं मिलती। दुनिया के 1 अरब लोग अपनी न्यूनतम बुनियादी आवश्यकताएं पूरी नहीं कर पाते।

○ दुनिया के सबसे गरीब 20 प्रतिशत लोगों तक दुनिया की कुल आय का मात्र एक प्रतिशत पहुंच पाता है जबकि सबसे अमीर 20 प्रतिशत लोग इसका 86 प्रतिशत हिस्सा हड़प जाते हैं। दुनिया के सबसे अमीर तीन लोगों के पास जितनी सम्पत्ति है वह गरीब देशों में रहने वाले दुनिया के 60 करोड़ लोगों की वार्षिक आय के बराबर है।

○ दुनिया के गरीब देशों के भीतर गैरबराबरी पर भी एक नजर डालें। 55 गरीब देशों में ऊपर के बीस प्रतिशत लोगों और नीचे के बीस प्रतिशत लोगों की आय में अन्तर दस गुना से भी ज्यादा है। 9 गरीब देश ऐसे हैं जहां यह अन्तर बीस गुना से भी ज्यादा है।

○ दुनिया के 97 प्रतिशत पेटेण्ट औद्योगिक देशों के पास है। वैज्ञानिक अनुसंधान पर दुनिया के कुल खर्च का मात्र 4 प्रतिशत हिस्सा पिछड़े देशों में खर्च होता है।

तो ऐसी है यह दुनिया! घोर अन्याय, लूट, असमानता, दमन, युद्ध, तबाही से भरी हुई! इसका कारण क्या है? मुनाफे की हवस, पूंजी की लूट। यह कमेरों का नर्क है और लुटेरों का स्वर्ग! यही है विश्व पूंजीवाद की सारी तरक्की का लेखा जोखा! मेहनतकश साथियों! क्या इस दुनिया को जितनी जल्दी हो सके, तबाह नहीं कर दिया जाना चाहिए। हां, हमें बिना रुके इस व्यवस्था को बदल देने के काम में लग जाना होगा। यही मजदूर वर्ग का ऐतिहासिकमिशन है। एक ही रास्ता है मजदूर क्रान्ति और जो दूसरा रास्ता है वह बर्बरता के महाविनाशी दलदल की ओर जाता है।

"अरबों मेहनतकश लोगों पर अपनी सत्ता जमाये रखने और श्रम का निरंकुश शोषण करने की अपनी स्वतंत्रता को कायम रखने के लिए दुनिया के पूंजीपति पूरा जोर लगाकर फासिज्म का संगठन कर रहे हैं।...

जिन्होंने भी फासिस्टों की परेडें देखी हैं वे जानते हैं कि ये परेडें उन नौजवानों की होती हैं जिनकी रीढ़ें रोग से सूजी हुई हैं, किन्तु जो बीमार आदमियों के उन्माद से जीवित रहना चाहते हैं और जो ऐसी किसी भी चीज को अपनाने के लिए तैयार रहते हैं जो उनके विषाक्त रक्त की सड़ांध को बिखरने की उन्हें आजादी देती है। इन हजारों कान्तिहीन और रक्तहीन चेहरों में स्वस्थ और चमकते चेहरे दूर से ही नजर आ जाते है क्योंकि उनकी संख्या इतनी नगण्य है। निश्चय ही ये थोड़े से चमकते हुए चेहरे सर्वहारा वर्ग के सचेत दुश्मनों के हैं या दुस्साहसी टुटपूंजियों के हैं जो कल तक सोशल डेमोक्रेट थे या छोटे व्यापारी थे और अब बड़े व्यापारी बनना चाहते हैं और जिनके नोट जर्मनी के फासिस्ट नेता किसानों और मजदूरों के हिस्से की लकड़ी या आलू उन्हें मुफ्त में देकर खरीद लेते हैं होटलों के हेडवेटर चाहते हैं कि वे अपने-अपने रेस्तरा के मालिक हों, छोटे चोर चाहते हैं कि शासन बड़े चोरों को लूटपाट और चोरी करने की जो छूट देता है वह उन्हें भी दी जाय- ऐसे लोगों की पांत में से फासिज्म अपने रंगरूट भरती करता हैं फासिस्टों की परेड एक साथ ही पूंजीवाद की शक्ति और उसकी कमजोरियों की परेड होती है।

"हमें आंखें बंद नहीं कर लेनी चाहिए: फासिस्टों की जमात में मजदूरों की संख्या भी कम नहीं है- ऐसे मजदूरों की संख्या जो अभी तक क्रान्तिकारी सर्वहारा की निर्णयकारी शक्ति से बेखबर हैं। हमें अपने आप से यह तथ्य भी नहीं छिपाना चाहिए कि संसार का उपजीवी-पूंजीवाद-अभी भी काफी मजबूत है, क्योंकि मजदूर और किसान अभी भी उसके हाथ में हथियार और भोजन देते जाते हैं। इस विप्लवी जमाने का यह सबसे क्षोभजनक और शर्मनाक तथ्य है।

मक्सिम गोर्की: सर्वहारा का मानववाद (1934)

(पेज 1 से आगे)

मजदूरों के हौसले बुलंद..

अवैध तालाबन्दी और कारखाना परिसर से दो सौ मीटर क्षेत्र में धरना-प्रदर्शन पर न्यायालय के स्थगनादेश के बावजूद मजदूर न केवल मजबूती से डटे हुए हैं वरन उनकी पैनी दृष्टि प्रबंधकों की हर चाल को नाकाम करने के लिए लगी हुई है।

होण्डा प्रबन्धकों ने विगत 7 मार्च को मजदूरों के लिए गेट बंद करके कारखाने से तमाम मशीनें उखाड़ दी हैं और वह उसे यहां से निकालने को हरचंद कोशिशें करके जब थक गया तो उसने चोरी से मशीने पार करने की जुगत भिड़ाई। मजदूर पहले से ही संशकित थे। उन्होंने कारखाने में पहले से तैयार जनरेटर ले जाने वाले कंटेनर की चेकिंग बढ़ा दी। इस संदर्भ में विगत 23 अप्रैल की रात गेट पर भारी पंगा हुआ। मजदूरों ने कंटेनर रोक दी। अगले दिन देखते ही देखते दो ट्रक पीएसी सहित भारी मात्रा में पुलिस बल व प्रशासनिक अमला आ धमका। लेकिन महिलाओं समेत तमाम मजदूरों व स्थानीय नागरिकों के व्यापक दबाव के कारण सील तोड़कर गाड़ी चेक हुई। नगर मजिस्ट्रेट को यह कहना पड़ा कि गाड़ियां मजदूरों द्वारा निरीक्षण के बाद जाएंगी और सायं 6 बजे के बाद कोई गाडी नहीं जाएगी।

अगले दिन 25 अप्रैल को नगर मजिस्ट्रेट ने अपने रिस्क पर एक और कंटेनर बाहर तो कर दिया लेकिन अगले कुछ घण्टे बाद ही मजदूरों की आशंका सच साबित हुई। रात लगभग 9 बजे बिजली गायब थी, घुप्प अंधेरा था, तेज आंधी चल रही थी कि अचानक कारखाने से दो ट्रक, त्रिपाल से ढंके हुए बाहर निकलते दिखलाई दिये। मजदूरों ने दौड़कर उसे रोका। टार्च की व्यवस्था हुई और त्रिपाल हटाकर जब लोगों ने भीतर देखा तो तमाम फुटकर सामानों के बीच पैक की हुई कोई चीज दिखलाई दी। चेक हुआ तो वह मशीन का इलेक्ट्रिक कंट्रोलर था। गाड़ी रोक दी गयी। थाने में तहरीर भेजी गयी लेकिन स्वीकार नहीं हुई। डीएम से वार्ता हुई, उन्होंने सुबह देखने को कहा। पूरी रात अंधड़, पानी, ओलावृष्टि के बीच मजदूर ट्रक की रखवाली करते रहे। खबर सुनने के साथ आनन्द निशिकावा कारखाने के मजदूरों सहित भारी मात्रा में स्थानीय जनता एकत्रित हो गयी। आक्रोशित लोगों ने सुबह प्रबंधकों/ अधिकारियों को घेरकर फैक्ट्री में जाने से दो घंटे तक रोक रक्खा। इस घटना के घटने के ही भारी मात्रा में पुलिस पीएसी के साथ उपजिलाधिकारी व पुलिस क्षेत्राधिकारी पहुंच गये। काफी तनावपर्ण स्थिति बनी रही। प्रबंधकों ने प्रशासनिक अधिकारियों को भरमाने का काफी प्रयास किया, लेकिन अन्ततः प्रबंधकों की चोरी पकड़ी गयी। इसके पश्चात दिन भर की रस्साकशी के बाद शाम को ही उक्त ट्रक अन्दर जा सका। इस घटना के बाद से फैक्ट्री में पुलिस के साथ पीएसी भी तैनात हो गयी। पूर्व की भांति प्रबन्धकों पर कोई भी कानूनी कारवाई नहीं हुई उल्टे मजदूरों के खिलाफ कुछ और केस दर्ज हो गये।

इधर राज्य के श्रम मंत्री से लेकर श्रम सचिव, डी एम, श्रमायुक्त आदि की मध्यस्थता में कई बार त्रिपक्षीय वार्ताएं हुई, स्थगित हुई फिर हुई लेकिन सब बेनतीजा साबित हुईं। सारी स्थितियां साफ होने के बावजूद मुख्यमंत्री से लेकर जिला प्रशासन तक यह कहकर कन्नी काट रहे हैं कि जापान का मामला है क्या करें? स्थितियां बेहद तनावपूर्ण हैं लेकिन शासन प्रशासन जनान्दोलन भड़क उठने के डर से जबर्दस्ती शिफ्टिंग करवाने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा है।

दूसरी तरफ, होण्डा श्रमिक व्यापक इलाकाई एकता बनाते हुए आन्दोलन को लगातार आगे बढ़ाते जा रहे हैं। 16 अप्रैल को राष्ट्रव्यापी हड़ताल के दिन रुद्रपुर में एक विशाल रैली निकाली गयी। जिसमें खटीमा, किच्छा, लालकुआं, पन्तनगर, हल्द्वानी आदि क्षेत्रों से भी श्रमिकों ने भागीदारी की। नारी सभा के नेतृत्व में महिलाओं की भी भागीदारी काफी अच्छी रही। उस दिन मुख्यमंत्री के नाम संबोधित लगभग सात हजार हस्ताक्षरों से युक्त ज्ञापन जिलाधिकारी को सौंपा गया। उसी दिन मजदूर विरोधी नीतियों के खिलाफ भी एक ज्ञापन प्रधानमंत्री के पास भेजा गया। रुद्रपुर व किच्छा में सैकड़ों की तादाद में मशाल जुलूस निकाला गया। क्रमिक अनशन में अन्य कारखानों व सामाजिक संगठनों के लोगों के अलावा महिलाएं भी बैठीं।

आन्दोलन के इस दौर मे प्रचार के अलग-अलग फार्म प्रयोग में लाये जा रहे हैं। अब तक का सबसे आकर्षक फार्म था होर्डिंग प्रचार। इसके तहत हस्तलिखित बड़े से होर्डिंग नुमा पोस्टर को दो मजदूर कंधे पर उठाकर चलते थे और पीछे ढोल मजीरे के साथ गीत गाते नारे लगाते, पर्चे बांटते,सहयोग जुटाते लोगों की टोलियां चलती थीं।

अब तक हजारों की संख्या में व्यक्तियों, संगठनों, जनप्रतिनिधियों आदि द्वारा मुख्यमंत्री वगैरह का पत्र/ ज्ञापन भेजे जा चुके हैं, और भेज जा रहे हैं। इसका जबर्दस्त रूप से दबाव बना हुआ है। उधर लम्बे आन्दोलन के लिए जनसमर्थन के साथ ही आर्थिकसहयोग और गांवों से अनाज आदि का सहयोग लगातार मिल रहा है। युद्ध के मैदान में आमने-सामने सेनाएं सजी हुई है। एक तरफ बहुराष्ट्रीय कम्पनी है जिसके पास पूंजी की ताकत है, जिसके पक्ष में सरकार और उसका पूरा प्रशासनिक अमला हैं और दूसरी तरफ श्रम की ताकत है, व्यापक मेहनतकश अवाम हैं ऐसी विकट स्थिति में जनान्दोलन ही एकमात्र रास्ता है। होण्डा के वर्गसचेत श्रमिक इसे जानते हैं और वे जनान्दोलन खड़ा करने की दिशा में बढ़ रहे है।

इसी क्रम में आज **'श्रीराम होण्डा श्रमिक संगठन'** ने एक प्रेस वार्ता के माध्यम से होण्डा प्रबंधन द्वारा लगातार फैलाए जा रहे भ्रमजाल का खुलासा किया, इस जापानी साम्राज्यवादी कम्पनी के लट की बानगी रक्खी और अपनी लम्बी लड़ाई की रूपरेखा से अवगत कराया। पत्रकारों से बात करते हुए संगठन के अध्यक्ष रामचन्द्र शर्मा एवं मंत्री अमर सिंह ने बताया कि शिफ्टिंग का मुद्दा श्रमिकों के हित से सीधे जुड़ा हुआ है। यदि वर्तमान शिफ्टिंग हो जाती है तो कारखाने का बन्द होना निश्चित हो जायेगा। इससे कारखाने से जुड़े 1005 परिवारों सहित पूरे इलाके की आम जनता एवं राज्य के विकास पर बहुत बुरा असर पड़ेगा। इसके साथ ही इससे जुड़ी पांच इंसेलरीज भी बंद हो जायेंगी। उन्होंने बताया कि श्रमायुक्त के सामने वार्ता के दौरान प्रबन्धन फर्जी वायदे करता है लेकिन लिखित रूप से कुछ भी नहीं देता। प्रतिनिधियों ने बताया कि हमारे आन्दोलन को इलाके की आम जनता का वास्तविक एवं सक्रिय समर्थन प्राप्त है।

इस चुनौती का मुकाबला हम जनशक्ति के बल पर करेंगे। देश के अन्य हिस्सों से होण्डाग्रुप के मजदूरों एवं मजदूर संगठनों का सहायोग भी इस आन्दोलन को प्राप्त हो चुका है। क्षेत्र के विभिन्न यूनियनों संगठनों द्वारा गठित **'होण्डा बचाओं संघर्ष समिति'** ने एक निर्णायक आंदोलन की रूपरेखा तैयार की है। व्यापक जनसमर्थन के बल पर इसे जोरदार तरीके से चलाया जायेगा ताकि जापानी लुटेरों और उनके जूनियर पार्टनरों की मंशा को नाकाम किया जा सके।

- चोरी से मशीन ले जाते प्रबन्धन को मजदूरों ने रंगे हाथों पकड़ा, आक्रोशित मज़दूरों ने मशीन रोका, प्रबन्धन पर कोई कानूनी कार्रवाई नहीं हुई।
- श्रमिकों की ओर से अब तक पुलिस ने कोई रिपोर्ट दर्ज नहीं की जबकि प्रबन्धन के झूठे आरोपों पर मज़दूरों पर कई केस दर्ज।
- श्रमिकों ने दो घण्टे तक प्रबन्धकों को कारखाने में जाने से रोका। भारी मात्रा में पुलिस/पी ए सी तैनात।
- वार्ताओं के सभी दौर अनिर्णित। जापानी साम्राज्यवादियों के सामने श्रम विभाग, जिला प्रशासन, पुलिस सबकी घिग्घी बंधी।

मजदूरों ने पकड़ा जनान्दोलन का रास्ता

- 16 अप्रैल को राष्ट्रव्यापी हड़ताल के दिन शिफ्टिंग के खिलाफ जबर्दस्त रैली, लगभग सात हजार हस्ताक्षरों से युक्त ज्ञापन मुख्यमंत्री को भेजा गया।
- रुद्रपुर-किच्छा में शानदार मशाल जुलूसें निकलीं।
- क्रमिक अनशन में अन्य यूनियनों-संगठनों के अलावा महिलाएं भी बैठीं।
- कंधे पर होर्डिंग लादे, ढोल-मजीरे के साथ नये तरीके से प्रचार अभियान

होण्डा प्रबन्धन! सच्चाई छुप नहीं सकती ...

साम्राज्यवादी डकैतों द्वारा देश की मेहनती जनता और पूंजी का दोहन कितनी विधियों से होता है, आम जन तो इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता। होण्डा प्रबंधन के अनुसार यह **जनरेटर फैक्ट्री भारत में उसके कुल कारोबार के एक पान के खोखे** के समान है। तो महज इस "पान के खोखे" से कितना लूट कर ले जाता है, इसकी एक बानगी और उसके झूठ-सच की एक तस्वीर प्रस्तुत है:

1. *होण्डा प्रबन्धन विगत तीन वर्षों से मुनाफे में लगातार गिरावट की मूल वजह एल्युमिनियम मशीन शाप के लिए बर्रल बाहर से मंगाने के से है।*

यदि इसी बात को मान लिया जाए तो फिर इस शिफ्टिंग के बाद जब पूरी मशीनरी इस प्लांट में बाहर से आने लगेगी तब तो मुनाफे में गिरावट और ज़्यादा होने लगेगी! वैसे प्रबन्धन का यह तथ्य भी झूठ के खंभों पर खड़ा है। प्रबन्धन के बैलेंस शीट के आधार पर ही यह बात प्रमाणित हो जाती है कि मुनाफे की कमी की मूल वजह अवमूल्यन (डिप्रेसियेशन) और टैक्स है। वर्ष 1998-99, 1999-2000-2001 में फैक्ट्री का कुल मुनाफा क्रमशः 31 करोड़ 11 लाख रुपये, 30 करोड़ 65 लाख रुपये और 31 करोड़ 32 लाख रुपये (अब तक का सर्वश्रेष्ठ) था। इन्हीं वर्षों में सरकारी टैक्स क्रमशः 6 करोड़ 20 लाख रुपये, 6 करोड़ 15 लाख रुपये व 7 करोड़ 25 लाख रुपये तथा अवमूल्यन (यह प्रबन्धन के हाथ का खेल है) 4 करोड़ 21 लाख रुपये, 4 करोड़ 36 लाख रुपये व 4 करोड़ 78 लाख रुपये था। इसी वजह से प्रबन्ध द्वारा प्रस्तुत शुद्ध लाभ (घटते हुए) क्रमशः 20 करोड़ 70 लाख रुपये, 20 करोड़, 14 लाख रुपये से 19 करोड़ 29 लाख रुपये पर पहुंच गया।

वैसे यदि जापानी होण्डा द्वारा महज जनरेटर कारखाने से ले जाए जाने वाले वार्षिक मुनाफे पर नज़र दौड़ाएं तो न केवल यह लगातार बढ़ रहा है वरन भयानक तस्वीर सामने आती है। यह जापानी साम्राज्यवादी कम्पनी वर्ष 1999-2000 में जापान से विभिन्न मैटेरियल आदि की खरीद में 28 करोड़ 1 लाख 79 हजार रुपये व नगद विदेशी मुद्रा से गाइडेंस, रायल्टी, विदेश भ्रमण आदि के नाम पर 2 करोड़, 66 लाख 68 हजार रुपये व विविध मामलों(!) में 1 करोड़ 79 लाख 92 हजार रुपये कुल 32 करोड़ 48 लाख 39 हजार रुपये और वर्ष 2000-2001 में मैटेरियल आदि की खरीद में 41 करोड़ 77 लाख 54 हजार रुपये, गाइडेंस, रायल्टी, विदेशी भ्रमण के नाम पर 3 करोड़ 35 लाख 27 हजार रुपये तथा विविध मामलों में (!) 2 करोड़ 41 लाख 45 हजार कुल मिलाकर 47 करोड़ 54 लाख 26 हजार रुपये लूट कर ले गया। अब यदि शुद्ध मुनाफे को इसमें जोड़ दें तो जनरेटर बनाने वाले छोटे कारखाने से ही होण्डा वर्ष 1999-2000 में 52 करोड़ 62 लाख 39 हजार रुपये और वर्ष 2000-2001 में 66 करोड़ 83 लाख 26 हजार रुपये इस देश से जापान ले गया। यदि इसमें कुछ अन्य चीजें भी जोड़ दी जाएं तो यह आंकड़ा और बढ़ जाएगा।

प्रबन्धन कहता है देश को निर्यात से मिलने वाली विदेशी मुद्रा की क्षति भी होगी!

अब जरा एक नज़र होण्डा जनरेटर के आयात/निर्यात पर डालें। इस कम्पनी द्वारा जनरेटर निर्माण में जापान से सामग्री मंगाने और दूसरे मदों में विदेशी मुद्रा सन् 1999-2000 में रु. 32 करोड़, 48 लाख 39 हजार और सन् 2000-2001 में 47 करोड़ 54 लाख 26 हजार देश से बाहर चला गया जबकि जनरेटर के निर्यात से 1999-2000 में रुपये 25 करोड़ 14 लाख 37 हजार और 2000-2001 में रुपये 30 करोड़ 7 लाख 37 हजार प्राप्त हुआ।

2. इस प्रकार महज पिछले वर्ष (2000-2001) देश से होण्डा कम्पनी जनरेटर इकाई से 17 करोड़ 46 लाख 89 हजार रुपये की पूंजी बाहर चली गयी। जबकि वर्ष 1999-2000 में देश से बाहर जाने वाली पूंजी इसकी आधी यानी 8 करोड़ 34 लाख 2 हजार रुपये थी।

शिफ्टिंग के मुद्दे में प्रशासन पर प्रबंधन की भाषा बोलने का आरोप

पी.यू.डी.आर. की होंडा हड़ताल पर छान-बीन रिपोर्ट 'शिफ्टिंग साइट्स' जारी

● मोहन राजपूत रुद्रपुर

नागरिक अधिकारों को समर्पित देश की जानी मानी संस्था **पीपुल्स यूनियन फार डेमोक्रेटिक राइट्स** (पी.यू.डी.आर.) ने अपनी छानबीन रिपोर्ट में होंडा फैक्ट्री में मशीनों की शिफ्टिंग श्रमिकों के अहित में बताते हुए प्रबंधन पर अक्सर श्रमिकों का उत्पीड़न करने का आरोप लगाया है। रिपोर्ट में श्रम सचिव व जिलाधिकारी को श्रमिकों के बजाय प्रबंधन की भाषा बोलने के लिए आड़े हाथों भी लिया गया है।

संस्था ने 'शिफ्टिंग साइट्स' नाम से जारी बारह पृष्ठ की अपनी रिपोर्ट में प्रबंधन की मंशा तथा मजदूरों की व्यथा बयां की है। ज्ञातव्य है कि संस्था के तीन सदस्यों ने इस माह के पहले सप्ताह में रुद्रपुर आकर यह रिपोर्ट तैयार की है कि इस रिपोर्ट को तैयार करने के लिए उन्होंने श्रमिकों, उनके नेताओं, प्रबंधन व प्रशासन से मुलाकात करके तमाम मुद्दों की छानबीन की थी। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रबंधन बीते कई माह से फैक्ट्री की एल्युमिनियम शॉप को यहां से नोएडा स्थानांतरित करने की योजना बना रहा था लेकिन अपनी इस योजना को बीती 25 फरवरी को क्रियान्वित करना प्रारंभ कर दिया। जब श्रमिकों ने एकजुट होकर प्रबंधन की इस योजना का विरोध किया तो प्रबंधन ने इस शॉप के 34 श्रमिकों को स्टील, पेंट, अल्टीमेटर शॉप में स्थानांतरित कर दिया जहां श्रमिक पहले से ही खाली बैठे थे।

रिपोर्ट में कहा गया है कि श्रमिकों के विरोध करने पर प्रबंधन ने उन पर दबाव बनाने के लिए राज्यपाल द्वारा फैक्ट्री में हड़ताल पर पाबंदी लगाये जाने वाला आदेश सार्वजनिक कर दिया जबकि यह आदेश राज्यपाल से बीते नवंबर माह में ही प्राप्त कर लिया गया था। प्रबंधन ने सोची समझी योजना के तहत इस आदेश को उचित समय आने पर सार्वजनिक करने के मंसूबे के तहत दो माह तक दबाये रखा। यही नहीं बीती पांच मार्च को प्रबंधन ने 70-80 अतिरिक्त सुरक्षा कर्मी बुला लिये और उनके जरिए श्रमिकों को धमकाना प्रारंभ कर दिया। अगले दिन जब श्रमिकों ने एल्युमिनियम शॉप की शिफ्टिंग के विरोध में वहां पहुंचकर जबरन काम करना शुरू किया तो प्रबंधन ने 32 श्रमिकों की सेवा समाप्त कर दी। रिपोर्ट में कहा गया है कि 7 मार्च को उप श्रमायुक्त की मध्यस्थता में हुई प्रबंधन व श्रमिकों की वार्ता में प्रबंधन अगली सुबह से श्रमिकों को काम पर लिए जाने के लिए तैयार हो गया। लेकिन प्रबंधन ने अगली सुबह गेट पर एक घोषणा पत्र चस्पा कर दिया। इस पर श्रमिकों से फैक्ट्री में प्रवेश से पूर्व हस्ताक्षर करने के लिए कहा गया था। इस घोषणा पत्र में श्रमिकों के लिए लिखा गया था कि उन्होंने अवैध हड़ताल में शामिल हुए हैं तथा वह शिफ्टिंग तथा 32 कर्मचारियों की सेवा समाप्ति का विरोध नहीं करेंगे। इस घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर करने के पश्चात ही श्रमिकों को गेट के भीतर घुसने की अनुमति दी गई थी। लेकिन श्रमिकों ने इस घोषणा पत्र को अवैध बताते हुए उस पर हस्ताक्षर करने से इंकार कर दिया।

रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि एल्युमिनियम शॉप को प्रबंधन नोएडा शिफ्ट करने पर श्रमिकों का किसी किस्म का अहित न होने और फैक्ट्री पर प्रतिकूल असर न होने की बात कर रहा है जबकि हकीकत है कि इस शॉप के चले जाने पर टूल रूम, स्पेयर पार्टस, स्टोर, आउट प्लांट क्वालिटी व अन्य शॉप बुरी तरह प्रभावित होंगी। फैक्ट्री के अनुभवी श्रमिक इस शॉप को फैक्ट्री की रीढ़ बताते हैं। उनका कहना है कि यदि अल्युमिनियम शॉप शिफ्ट हो गई तो प्रबंधन एक रणनीति के तहत श्रमिकों की संख्या तो कम करेगा ही साथ ही उसे भविष्य में फैक्ट्री को बंद करके अन्यत्र शिफ्ट करने में आसानी हो जाएगी। संगठन ने अपनी रिपोर्ट में फैक्ट्री की स्थापना से लेकर अभी तक के श्रमिक आंदोलनों को प्रबंधन द्वारा कुचलने के असफल मंसूबों के बारे में भी विस्तार से बताया गया है।

इस रिपोर्ट में प्रशासन व श्रम विभाग को बुरी तरह आड़े हाथों लिया गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि जिलाधिकारी से बात करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि वह जिले के एक **सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी न होकर होंडा फैक्ट्री प्रबंधन के सदस्य हों।**

जिलाधिकारी का कहना है कि **एल्युमिनियम** शॉप के श्रमिकों को अन्य शॉप में स्थानांतरित किया गया है। उन्हें शिफ्टिंग से कोई खतरा नहीं है।

जहां तक श्रमिकों के फैक्ट्री में प्रवेश का सवाल है श्रमिकों को फैक्ट्री में घुसने से प्रबंधन नहीं रोक रहा है बल्कि श्रमिक ही प्रबंधन को फैक्ट्री में जाने से रोक्ने में लगे हुए हैं। फैक्ट्री में श्रमिकों की सुरक्षा गारंटी के मुद्दे पर डीएम यह कहते हुए आश्चर्य व्यक्त करते हैं कि काम की सुरक्षा तो सरकारी नौकरियों में नहीं है यह तो एक प्राइवेट कंपनी है। श्रमिक यदि काम करना चाहते हैं तो करें नहीं तो वे अपनी इच्छानुसार जा सकते हैं।

रिपोर्ट में श्रमायुक्त के बारे में कहा गया है कि उन्होंने श्रमिकों की परेशानी तो समझी लेकिन कुछ करने के लिए बेबसी दर्शाते हुए कहते हैं कि प्रबंधन किसी किस्म का श्रम कानून का उल्लंघन नहीं कर रहा है।

श्रमायुक्त का कहना है कि एल्युमिनियम शॉप को आज नहीं तो कल शिफ्ट होना ही है यदि श्रमिक समस्या खड़ी करेंगे तो प्रबंधन इस फैक्ट्री को बंद कर देगा। रिपोर्ट में कहा गया है कि बीती तीन अप्रैल को प्रदेश के श्रम सचिव की अध्यक्षता में समझौता वार्ता में भी शासन प्रशासन ने प्रबंधन की ही रटी रटाई भाषा का इस्तेमाल किया है।

रिपोर्ट में तालाबंदी तथा श्रमिकों की सेवाओं की समाप्ति को पूरी तरह अवैध बताते हुए श्रमिकों का चारों तरफ से उत्पीड़न होने का आरोप लगाया गया है। शासन प्रशासन पर पूरी तरह प्रबंधन का पक्ष लेने और येन केन प्रकारेण श्रमिकों को धमकाने का भी आरोप लगाया गया है। संगठन ने एल्युमिनियम शॉप को रोकने, सेवा मुक्त श्रमिकों को बहाल करने तथा अवैध घोषणा पत्र को वापस लेने जैसी मांग अपनी रिपोर्ट में उठाई है।

(दैनिक जागरण, 26 अप्रैल 2002 साभार)

लेनिन के साथ दस महीने

एल्बर्ट रीस विलियम्स उन पांच अमेरिकी जनों में से एक थे जो अक्टूबर क्रान्ति के तूफानी दिनों के साक्षी थे। वे 1917 के वसंत में रूस पहुंचे। उस समय से लेकर अक्टूबर क्रान्ति तक, वे तूफान के साक्षी ही नहीं बल्कि भागीदार भी रहे। इस दौरान उन्होंने व्यापक जनता के शौर्य एवं सृजनशीलता के साथ ही बोल्शेविक योद्धाओं के जीवन को भी निकट से देखा। लम्बे समय तक वे लेनिन के साथ-साथ रहे। क्रान्ति के बाद जुलाई, 1918 तक उन्होंने दुनिया भर की प्रतिक्रियावादी ताकतों से जूझती पहली सर्वहारा सत्ता के जीवन-संघर्ष को निकट से देखा।

स्वदेश लौटकर रीस विलियम्स ने दो किताबें लिखीं – 'लेनिनः व्यक्ति और उनके कार्य' तथा 'रूसी क्रान्ति के दौरान'। ये दोनों पुस्तकें एक जिल्द में 'अक्टूबर क्रान्ति और लेनिन' नाम से राहुल फाउण्डेशन, लखनऊ से प्रकाशित हो चुकी हैं।

हम रीस विलियम्स की पूर्वोक्त पहली पुस्तक का एक हिस्सा 'बिगुल' के पिछले कई अंकों से हम पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे थे। इस अंक से हम इसका समापन कर रहे हैं।

– संपादक

(पिछले अंक से आगे)

18. रूसी क्रान्ति में लेनिन की भूमिका

ज्यों ही रूस में लेनिन का उन्नयन विश्व-मंच के अग्रणी नेता बनने के रूप में हुआ, उनके संबंध में तरह-तरह के मतों का तूफान उठ खड़ा हुआ है।

भयग्रस्त पूंजीपतियों ने उन्हें दैवी आपत्ति, प्रकृति का भयानक अपशकुन, प्रलयकारी आपदा बताया।

रहस्यात्मक प्रवृत्ति रखने वाले व्यक्तियों ने उन्हें "मंगोलियाई स्लाव" मानते हुए युद्धपूर्व की उस अनोखी भविष्यवाणी की पूर्ति बतायी, जिसे तोल्स्तोय के नाम के साथ जोड़ा गया था। महायुद्ध के शुरू होने, इसके कारणों और स्थान के बारे में भविष्यवाणी करने के बाद उसमें कहा गया था, "मैं सारे यूरोप को आग की लपटों में झुलसते और रक्तरंजित होते देख रहा हूं। मैं विशाल युद्ध क्षेत्रों की आहें-कराहें सुन रहा हूं। परन्तु करीब 1915 में उत्तर से एक विलक्षण व्यक्ति – एक नया नेपोलियन – इस खूनी नाटक के रंगमंच पर आता है। वह बहुत कम फौजी प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति है, एक लेखक या पत्रकार है, परन्तु अधिकांश यूरोप 1925 तक उसकी मुट्ठी में रहेगा।"

प्रतिक्रियावादी चर्च के लिए लेनिन ईसा-विरोधी थे। पादरियों ने धार्मिक झण्डों एवं देव-मूर्तियों के साये में किसानों को जमा करने और उन्हें लाल सेना के विरुद्ध उभाड़ने की कोशिश की। मगर किसानों ने उनसे कहा, "हो सकता है कि वे ईसा-विरोधी हों, परन्तु उन्होंने हमें जमीन और स्वतंत्रता दी है तब हम उनसे लड़ाई मोल क्यों लें?"

साधारण व्यक्तियों के लिए लेनिन अलौकिक महत्व रखते थे। वे रूसी क्रान्ति के जनक, सोवियतों के संस्थापक, नये रूस के स्रोत थे। वे मानते थे कि "लेनिन और त्रोत्स्की को मार डालो और तुम क्रान्ति तथा सोवियतों को खत्म कर दोगे।" इतिहास के प्रति यह वह दृष्टिकोण है, जिसके अनुसार यह माना जाता है कि मानो महान पुरुष ही उसका निर्माण करते हैं, मानो महान नेता ही महान घटनाओं और महान युगों का निर्धारण करते हैं। यह संभव है कि एक ही व्यक्तित्व द्वारा सम्पूर्ण युग अभिव्यक्त हो जाये और एक ही व्यक्ति महान जन-आंदोलन का केन्द्र-बिन्दु हो। कार्लाइल के दृष्टिकोण से अधिक से अधिक इसी सीमा तक सहमत होना संभव है।

रूसी क्रान्ति को एक व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के समूह पर निर्भर मानने वाली इतिहास की कोई भी व्याख्या निश्चित रूप से भ्रामक होगी। स्वयं लेनिन ही सबसे पहले इस विचार का मजाक उड़ाते कि वे अथवा उनके सहकर्मी रूसी क्रान्ति के भाग्य-विधाता थे। रूसी क्रान्ति की भवितव्यता उस मूल स्रोत – जन समुदाय के अन्तस्तल और कर्मशक्ति में निहित थी, जहां से वह उदित हुई थी। यह उन आर्थिक शक्तियों में निहित थी, जिनके दबाव से रूसी जन-समुदाय संघर्ष के लिए उद्यत हो गया था। सदियों तक रूसी जनता सुप्त, सहनशील और बहुत कष्ट भोगती रही। रूस के विशाल आयाम के आर-पार, रूसी मैदानों और उक्रइनी स्तेपी में और साइबेरिया की बड़ी-बड़ी नदियों के किनारे-किनारे गरीबी की असहनीय पीड़ा सहन करते हुए और अन्धविश्वासों में जकड़े हुए जन-साधारण घोर परिश्रम करते रहे। जानवरों से उनकी किस्मत कुछ ही बेहतर थी। परन्तु सभी बातों की, यहां तक कि गरीब के धैर्य की भी सीमा होती है।

1917 के फरवरी में रूसी नगरों की जनता ने जोरदार झटके से अपनी बेड़ियां तोड़ डालीं, जिसकी आवाज सारी दुनिया में गूंज गई। सैनिकों के एक के बाद एक दस्ते ने उनके आदर्श का अनुसरण किया और विद्रोह कर दिया। उसके बाद क्रान्ति गांवों में फैली, इसकी जड़ें और गहरी होती गईं और जब तक फ्रांसीसी क्रान्ति की तुलना में सात गुना अधिक लोगों वाला – 16,00,00,000 व्यक्तियों का – राष्ट्र पूर्णतया आलोड़ित न हो गया, तब तक सर्वाधिक पिछड़े हुए जन-समुदाय में क्रान्ति की भावना उभरती रही।

महान लक्ष्य अपनाकर सारा राष्ट्र संघर्ष के मैदान में उतर पड़ा और नयी व्यवस्था की रचना की ओर अग्रसर हो गया। सदियों में मानवीय भावना का यह सबसे जबर्दस्त स्पन्दन था। जन-समुदाय के आर्थिक हितों के मूल सिद्धांत पर आधारित यह इतिहास में न्याय के लिए सर्वाधिक निर्भीक संघर्ष था। एक महान राष्ट्र न्याय के लिए योद्धा के रूप में सामने आया और नये विश्व के आदर्श के प्रति निष्ठावान रहकर भूख, युद्ध, नाकेबन्दी और मौत का सामना करते हुए लक्ष्य की ओर अग्रसर होता जा रहा था। जो नेता साथ नहीं दे पाते, वह उन्हें एक ओर हटाकर उन नेताओं का अनुसरण कर रहा था, जो लोगों की आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं के अनुरूप कार्य कर रहे थे। रूसी क्रान्ति की नियति स्वयं जन-समुदाय में – उनकी अनुशासन की भावना और निष्ठा में निहित थी। सचमुच भाग्य की उन पर बड़ी कृपा रही थी। संयोग से उन्हें अपने पथ-प्रदर्शन और अपनी भावनाओं एवं विचारों की अभिव्यक्ति के लिए ऐसा व्यक्ति मिला, जो महान, प्रतिभासम्पन्न, दृढ़ संकल्पी, प्रकाण्ड विद्वान, निर्भीक कर्तव्यपरायण तथा उच्चतम आदर्शवादी, नितान्त अनुशासनप्रिय और अत्यधिकव्यावहारिक समझ-बूझ रखने वाला था। – समाप्त

1857 के शहीदों की याद में एक माह का जुझारू जन-एकजुटता अभियान

छः जन संगठनों द्वारा छः राज्यों में साम्प्रदायिक फासीवाद के विरुद्ध मुहिम चलाने का निर्णय

लखनऊ, 12 मई, नगर के विभिन्न जनसंगठनों ने एक आपात बैठक में फैजाबाद में आयोजित होने वाले 'शहीद मेला' को सरकार द्वारा अकारण रोक देने, कार्यकर्ताओं पर लाठी चार्ज करने एवं हजारों लोगों को गिरफ्तार करने की तीव्र भर्त्सना करते हुए चेतावनी दी कि यदि 'शहीद मेला' पर लगे प्रतिबध को तत्काल हटाया व गिरफ्तार लोगों को रिहा नहीं किया गया तो हम आंदोलन करने को बाध्य होंगे। ज्ञातव्य है कि यह शहीद मेला 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम की 145वीं वर्षगांठ के अवसर पर फैजाबाद में होने वाला था। राहुल फाउण्डेशन की कात्यायनी ने सरकार के निरंकुश रवैये की तीव्र आलोचना करते हुए कहा कि एक ओर समाज में द्वेष व नफरत का जहर बोने वाले व फासिज्म का नंगा नाच करने वाले तत्वों को खुला छोड़ दिया गया है दूसरी ओर अपने शहीदों को याद करने वालों को जेल में डाला जा रहा है। संयुक्त मजदूर संघर्ष मोर्चा के ओम प्रकाश ने बताया के एक हजार गिरफ्तार लोगों में दो सौ से अधिक महिलाएं हैं और छोटे-छोटे बच्चे हैं। इन्हें अभी भी जेल में रखा गया है। उन्होंने सरकार से इन कार्यकर्ताओं को बिना शर्त तुरंत रिहा करने की मांग की है। दिशा छात्र संगठन के देवेन्द्र का कहना था कि जिन क्रान्तिकारियों की शहादत से देश आजाद हुआ आज उन्हीं को याद करना अपराध हो गया है। उन्होंने छात्रों-नौजवानों से आगे बढ़कर इस अन्याय का विरोध करने की अपील की। बैठक में राम बाबू, प्रदीप, आशीष, मु. मसूद, ए.एच. परवेज एवं कई मजदूर संगठनों के प्रतिनिधियों ने भी अपने विचार रखते हुए इस घटना को सभी प्रगतिशील ताकतों के लिए खतरनाक संकेत बताया सभी वक्ताओं व संगठनों ने सरकार को चेतावनी देते हुए शहीद मेला पर लगे प्रतिबन्ध तुरंत हटाने की मांग करते हुए कहा कि अन्यथा हम आंदोलन के लिए बाध्य होंगे।

- ओ.पी.सिन्हा

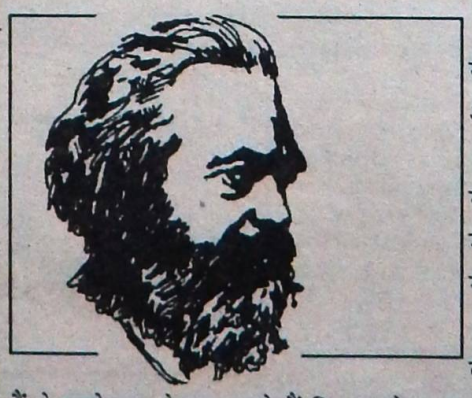

दुनिया के मज़दूरों के महान नेता और शिक्षक कार्ल मार्क्स की जन्मतिथि (5 मई) के अवसर पर

"... कम्युनिस्ट सर्वत्र मौजूद सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था के खिलाफ हर क्रान्तिकारी आन्दोलन का समर्थन करते हैं।

इन तमाम आन्दोलनों में वे प्रमुख प्रश्न के रूप में स्वामित्व के प्रश्न को, चाहे उस समय उसका जिस अंश में भी विकास हुआ हो, सर्वोपरि स्थान देते हैं।

... कम्युनिस्ट अपने विचारों और उद्देश्यों को छिपाना अपनी शान के खिलाफ समझते हैं वे खुलेआम ऐलान करते हैं कि उनके लक्ष्य पूरी वर्तमान सामाजिक व्यवस्था को बलपूर्वक उलटने से ही सिद्ध किये जा सकते हैं। कम्युनिस्ट क्रान्ति के भय से शासक वर्ग कांपा करे। सर्वहारा के पास खोने के लिए अपनी बेड़ियों के सिवा कुछ नहीं है। जीतने के लिए सारी दुनिया है।

दुनिया के मज़दूरों एक हो!

(मार्क्स-एंगेल्स की अमर कृति 'कम्युनिस्ट घोषणा पत्र की आखिरी पंक्तियां)

पंजीयन संख्या - 71980/99 डाक पंजीयन संख्या - LW-NP.349.2009

16 अप्रैल की देशव्यापी आम हड़ताल

आखिर यह टोकेनिज़्म कब तक? ट्रेड यूनियन नेतृत्व से मजदूरों का सवाल

मजदूर आन्दोलन के फरेबी, मौकापरस्त नेतृत्व ने बूंदी का नकली किला फतह करने की रस्म एक बार फिर पूरी कर ली। विगत 16 अप्रैल के देशव्यापी आम हड़ताल का अनुष्ठान भी निपट गया। यह पता चल गया कि मजदूर आन्दोलन का नेतृत्व एकदम सोया नहीं है और सरकार को कोई फर्क पड़ना नहीं था, सो वह भी नहीं पड़ा।

इस आम हड़ताल का आह्वान उदारीकरण निजीकरण की आर्थिक नीतियों और घोर मजदूर विरोधी श्रम नीतियों के खिलाफ किया गया था। हालत यह है कि अब सरकार ने इन नीतियों को और अधिक जोर-शोर से लागू करने की घोषणा की है। इधर राष्ट्रीय ट्रेड यूनियनों के पास आगे के संघर्ष का कोई प्रोग्राम नहीं है। आम मजदूरों का यह सवाल है कि आखिर इन टोकेन हड़तालों और प्रतीकात्मक विरोधों का सिलसिला कब तक चलता रहेगा और इससे मजदूर वर्ग को हासिल क्या हो रहा है? यह समझने में अब कोई कोर कसर नहीं रह गयी है कि ट्रेड यूनियनों का शीर्ष नेतृत्व सिर्फ रस्म अदायगी और फरेब कर रहा है। नई आर्थिक नीतिंयों के नाम पर मजदूरों और कर्मचारियों पर सबसे विनाशकारी हमले का दौर शुरू हुए बारह वर्ष बीत चुके हैं। मजदूरों के सभी जनवादी अधिकारों को छीन लेने और उन्हें ज्यादा से ज्यादा निचोड़ने की पूंजीपतियों और सरकार को एकदम खुली छूट देने के लिए ढांचागत बदलावों का सिलसिला लगातार जारी हैं इसके भयंकर नतीजें भी सामने आ चुके हैं। लेकिन भारत के मजदूर आन्दोलन का नेतृत्व आज तक इन नीतियों के खिलाफ लम्बे और फैसलाकुन संघर्ष का कोई कार्यक्रम नहीं पेश कर सकता है। जब जिस सेक्टर या कारखाना विशेष के मजदूरों पर तबाही का कहर बरपा होता है तब तब उस सेक्टर या कारखाने में नेतृत्व चेहरा बचाने के लिए आन्दोलन या हड़ताल की कुछ रस्म अदायगी कर लेता है, जिसका नतीजा लाजिमी तौर पर हार के रूप में ही सामने आता है। कभी-कभार ही कई सेक्टरों के मजदूरों कर्मचारियों को इकट्ठे कोई कॉल दिया गया और वह भी रस्मी विरोध की कवायद मात्र ही हुआ करता था।

यदि हम 16 अप्रैल की हड़ताल की तैयारी से लेकर हड़ताल के दिन तक के तथ्यों पर सिलसिलेवार निगाह डालें तो यह बात दिन के उजाले की तरह साफ हो जाती है कि ट्रेड यूनियन नेतृत्व आर्थिक नीतियां और श्रम नीतियों के विरोध के नाम पर केवल मजदूरों की आंखों में धूल झोंकने का काम कर रहा है।

रस्मी लड़ाई लड़ने वालों को बेनकाब करो
असली लड़ाई की जुझारू शुरुआत करो!

मजदूरों के जबर्दस्त आक्रोश और दबाव के कारण राष्ट्रीय स्तर के सभी प्रमुख ट्रेड यूनियन संगठनों द्वारा फरवरी 2002 में नई आर्थिक नीतियों और श्रम नीतियों के खिलाफ व्यापक संघर्ष का कार्यक्रम लिये जाने का फैसला हुआ। इसमें सीटू, एटक, बीएमएस, इण्टक, एचएमएस इफ्टू और अन्य कई छोटे संगठन शामिल थे। 14 मार्च को इन सभी संगठनों ने पूरे देश में लामबन्दी दिवस (मोबिलाइजेशन डे) मनाया जो एक निहायत ठण्डा अनुष्ठान मात्र रहा। उसी दिन तय किया गया कि 16 अप्रैल को पूरे देश में टोकेन हड़ताल की जायेगी।

खुली गद्दारी के मामले में कांग्रेस से सम्बद्ध इण्टक की बेशर्मी कतो पहले से ही प्रसिद्ध रही है। इस बार भी उसने अपना रंग दिखाया और हड़ताल के निर्णय से खुद को अलग कर लिया। अब जो हड़ताल करने वाले थे-उनकी हालत देखिए।

16 अप्रैल की आम हड़ताल के फैसले को अचानक अकारण ट्रेड यूनियनों ने सिर्फ एक हिस्से बैंकिंग और बीमा सेक्टर की हड़ताल में तबदील किया गया। सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों के मजदूर विनिवेश नीति, स्वैच्छिक अवकाश और छंटनी का कहर सबसे अधिक झेल रहे हैं, लेकिन उन्हें कोई काल नहीं दिया गया। टेलीकाम विभाग के मजदूरों कर्मचारियों को भी छोड़ दिया गया। राज्य सरकार के कर्मचारी फैसले में शामिल थे, लेकिन उन्हें भी कोई काल नहीं दिया गया। रेल सार्वजनिक क्षेत्र का सबसे बड़ा उद्योग है, जहां एक दिन की हड़ताल भी हुकूमत की नींद हराम कर सकती है। पिछले दस वर्षों में रेल कर्मचारियों की संख्या घटाकर आधी की जा चुकी है। कर्मचारियों मजदूरों में पांचवे वेतन आयोग की रिपोर्ट के समय से ही भयंकर गुस्सा है। लेकिन गद्दार और बुजदिल नेताओं ने रेल विभाग में सिर्फ धरने का आह्वान किया।

इससे भी अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि प्राइवेट सेक्टर के मजदूर जो नई श्रम नीतियों तथा छंटनी तालाबन्दी के सबसे अधिक शिकार हैं, उन्हें इन सभी मजदूर संघों ने इस हड़ताल से एकदम अलग रखा जबकि लगभग सभी प्रमुख उद्योगों ने इनसे सम्बद्ध मजदूर यूनियने हैं।

तैयारी का आलम यह था कि कोई तैयारी ही नहीं थी। बीमा सेक्टर में ग्रास रूट स्तर पर हड़ताल की काल 10 अप्रैल को आई। बैंकों में भी यही स्थिति थी रिजर्व बैंक में ग्रास रूट पर काल 7 अप्रैल को आई यूनियनों के केन्द्रीय नेतृत्व ठे स्थानीय केन्द्रों का कोई दौरा नहीं किया। मोबिलाइजेशन का कोई प्रोग्राम नहीं लिया गया।

लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही कि नेतृत्व की इतनी आपराधिक ढिलाई के बावजूद, पूरे देश में, अधिकांशतः स्वतंत्र स्थानीय पहलकदमी और तालमेल के आधार पर मजदूरों कर्मचारियों ने हड़ताल में बढ़चढ़कर हिस्सा लिया। लगभग एक करोड़ लोग हड़ताल में शामिल हुए। कई जगहों पर निजी क्षेत्र के कारखानों के मजदूरों ने और राज्य कर्मचारी ने बिना किसी आह्वान के अपनी पहल पर हड़ताल में शामिल हुए। बंगाल में पूरी हड़ताल रही। उत्तर प्रदेशके शहरों में भी हड़ताल काफी प्रभावी रही। लखनऊ में बैंक, बीमा रिजर्व बैंक और स्कूटर्स इण्डिया में शत प्रतिशत हड़ताल रही।

नेतृत्व द्वारा "चेहरा-बचाऊ" रस्म अदायगी का एक बड़ा प्रमाण यह भी है कि इस हड़ताल में आम विरोध के अतिरिक्त न तो कोई विशिष्ट मांग रखी गयी थी न ही कोई चार्टर पेश किया गया। दूसरा बड़ा प्रमाण यह है कि अब इस हड़ताल के बाद आगे के संघर्ष की कोई योजना नहीं है।

जाहिर है कि जब मजदूरों का दबाव फिर बहुत बढ़ जायेगा तो फिर एकाध 'भारत बन्द', एकाध 'दिल्ली चलो' एकाध देशव्यापी हड़ताल या कुछ धरना प्रदर्शन आदि का प्रोग्राम ले लिया जायेगा।

इस नंगी सच्चाई से मुंह मोड़ना मजदूर वर्ग के लिए अब अपनी टांग में कुल्हाड़ी मारने के समान होगा कि मजदूर यूनियनों का शीर्ष नेतृत्व वास्तव में नई आर्थिक नीतियों के खिलाफ न तो लड़ सकता है, न ही लड़ना चाहता है। दरअसल ये सभी मजदूर यूनियनों के संघ और महासंघ भिन्न चुनावी दलों से सम्बद्ध हैं, वे सभी के सभी नई आर्थिक नीतियों और श्रम सुधारों के प्रश्न पर एकमत हैं। विपक्ष में बैठने वाले दल विरोध की रस्म अदायगी भले करें, लेकिन कांग्रेस सरकार तीसरे मोर्चे की सरकारें और अब भाजपा सरकार इन सभी ने समान नीतियों पर बराबर मुस्तैदी के साथ अमल किया है। राज्यों में जहां कांग्रेस की क्षेत्रीय दलों की या भाकपा-माकपा जैसे चुनावी वामपंथियों की सरकारें है, वे मजदूर विरोधी नीतियों को लागू करने में केन्द्र सरकार से एक कदम भी पीछे नहीं हैं। इसलिए तय है कि इन्हीं दलों के पुछल्ले ट्रेड यूनियन नेताओं से नई आर्थिक नीतियों के विरोध में संघर्ष की उम्मीदकरना कुत्ते से मांस की हांडी की चौकीदारी की उमीद करना होगा और इनमें नकली वामपंथी तो और गये गुजरे हैं जो मजदूर क्रांति की जुगाली करते हुए इस व्यवस्था की दूसरी सुरक्षा पंक्ति की भूमिका निभाते हैं।

यही ट्रेड यूनियन नेता हैं जिन्होंने पिछले पचास वर्षों में मजदूर आन्दोलन को खण्ड-खण्ड में तोड़कर कमजोर किया है तथा महज वेतन भत्ते बोनस की लड़ाई लड़वाते-लड़वाते मजदूर वर्ग की राजनीतिक चेतना और शक्ति को चाट गये हैं। उदारीकरण निजीकरण की नीतियां पूंजीवादी व्यवस्था का आखिरी विकल्प हैं और इनके खिलाफ लड़ाई महज कुछ अधिकारों मांगों की लड़ाई नहीं है। इन नीतियों के खिलाफ लड़ाई इस पूरे पूंजीवादी ढांचे की बुनियाद पर चोट करने वाली लड़ाई है। पूंजीपति वर्ग के अस्तित्व की शर्त है कि वह इन नीतियों को लागू करे और मजदूर वर्ग यदि पशुवत गुलाम बनना और भुखमरी का शिकार होकर जीना नहीं चाहता तो उसे इन नीतियों के खिलाफ एक लम्बी, फैसलाकुन लड़ाई में उतरना ही होगा दूसरा कोई रास्ता नहीं हैं। श्रम और पूंजी की फौजें एक बार फिर आमने-सामने खड़ी हो रही हैं। कारगर ढंग से लड़ने के लिए जरूरी है कि नकली फौजियों और भितरघातियों को लतियाकर किनारे धकेल दिया जाये।

मजदूर वर्ग को अपने कन्धे पर अरसे से लदे ट्रेड यूनियन नौकरशाहों को नीचे पटक देना होगा। अपना स्वतंत्र क्रांतिकारी नेतृत्व तैयार करना होगा। सभी सेक्टरों सभी कारखानों सभी विभागों के मजदूरों कर्मचारियों को फौलादी एकता बनानी होगी। मालिक एक हैं पूरी राज्यसत्ता उनकी है अतः मजदूर तभी लड़ और जीत सकते हैं जब वे एकजुट हों।

वैसी स्थिति में यदि एक दिन की टोकन हड़ताल भी होगी तो पूरी व्यवस्था ठप्प हो जायेगी।

टोकेनिज्म से काम नहीं चलने वाला हैं यह अब बहुत घातक होगा। वास्तव में लड़ना होगा। फैसले तक लड़ना होगा। जीतने के लिए लड़ना होगा।

दुनिया भर के मजदूरों ने जज्ञारू ढंग से मनाया मई दिवस

फिर से जूझने की तैयारी कर रहा है पूरी दुनिया का सर्वहारा वर्ग

मई दिवस वह दिन है जब दुनिया भर का मेहनतकश अवाम मुनाफे की लूट, इंसानों द्वारा इंसानों के शोषण औरजुल्म के खिलाफ अपनी जुझारू एकजुटता का इजहार करता है, भूख, गरीबी और बेरोजगारी की जिंदगी से मुक्ति के सपनों को फिर से जीवित करता है और उन्हें सच बनाने का संकल्प लेता है। ऐसे दौर में जब दुनिया भर में मजदूर क्रान्तियों की पराजय का दौर अभी जारी है। भूमण्डलीकरण के दौर की उदारीकृत नीतियों ने मजदूरों को काफी पीछे ठेल दिया है और दुनिया भर के लुटेरे एक होकर मजदूर वर्ग पर हमला बोल रहे हैं, तब मई-दिवस पर जबर्दस्त एकताबद्ध प्रदर्शनों- रैलियों ने नकेवल दुनियाभर में मजदूरों की असीम शक्ति का एहसास कराया है, बल्कि लेनिन की उन पंक्तियों की पुष्टि की है कि **'पैरों से रौंदे जाते हैं आजादी के फूल, फिर से और चटख रंगों में खिलने के लिए।'**

पूरी दुनिया में मजदूरों के तूफानी प्रदर्शनों ने इस पहली मई को हुक्मरानों को एक बार फिर दहला दिया। इनमें से सबसे जबर्दस्त था पेरिस में होने वाला मई दिवस का प्रदर्शन। इसमें धुर दक्षिणपंथी नेता और राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार ली पेन के खिलाफ लगभग सवा आठ लाख लोगों ने पेरिस में प्रदर्शन किया और अपने गगनभेदी नारों के जरिये फासीवादी उभार और भूमण्डलीकरण का विरोध किया। करीब दो मील लम्बा यह जुलूस पेरिस में 30 सालों में सबसे बड़ा प्रदर्शन था। 34 साल पहले हुआ छात्र विद्रोह ही इससे बड़ा था। पेरिस के अलावा फ्रांस भर में करीबन 12 लाख लोगों ने अलग-अलग शहरों में प्रदर्शन किया। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि मुक्ति दिवस के बाद इतनी भीड़ कभी सड़कों पर नहीं उतरी।

लंदन में हुआ प्रदर्शन उतना विशाल तो नहीं था जितना पेरिस का,लेकिन यह बेहद जुझारू था। लगभग हजार लोगों के साथ प्रदर्शन शुरू हुआ। जब पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को रोकने की कोशिश की तो प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच तनाव की स्थिति पैदा हो गई। जब पुलिस ने धमकियां दीं तो प्रदर्शनकारियों ने डिब्बे और बोतल पुलिस पर फेंकना शुरू कर दिया। उधर ट्रेफल्गर स्क्वायर में लगभग 6000 मजदूरों ने जुलूस निकाला।

क्रोएशिया में 5000 मजदूरों ने जागरेब नामक शहर से होते हुए एक जुलूस निकाला। इसमें सरकार की मजदूरों के अधिकारों को घटाने की योजना के खिलाफ नारे लगाए गए। बेल्जियम में भी मजदूरों ने देश भर में रैलियां निकालीऔर विरोध-प्रदर्शन किए। उन्होंने फासीवादी राजनीति के उभार के विरुद्ध संघर्ष का एलान किया।

जर्मनी में मजदूरों ने काफी उग्र प्रदर्शन किया। मजदूरों ने आंसू गैस फेंक रही पुलिस पर पत्थर फेंके और वाहनों में आग लगा दी। उन्होंने एक सुपर मार्केट पर भी धावा बोल दिया। हजारों की संख्या में सड़कों पर उतर आए मजदूरों

को किसी भी तरह पुलिस प्रदर्शन करने से रोकना चाहती थी। वहीं दूसरी ओर 700 फासीवादी और नस्लवादी सनकियों के छोटे से जुलूस को 2000 की संख्या में पुलिस कर्मियों का संरक्षण दिया गया। **यूनान** में मजदूरों ने **अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश और इज़राइली प्रधानमंत्री एरियल शैरोन** के पुतले जलाए और सरकार की भूमण्डलीकरण की नीतियों का बहिष्कार किया।

इटली के बोलोना शहर में भी मजदूरों ने जबर्दस्त प्रदर्शन किया। करीब 75000 मजदूरों ने लाल झण्डे और लाल बैनरों के साथ जुलूस निकाला। इन बैनरों पर लिखा था- "शान्ति, रोजगार और अधिकार के लिए"। स्पेन के मैड्रिड शहर में विभिन्न श्रमिक संगठनों के 60,000 सदस्यों ने प्रदर्शन किया और सरकार को अल्टीमेटम दिया कि अगर **प्रधानमंत्री जोस मारिया अज़नार** अपनी उदारीकरण और विनिवेश की नीतियों पर रोक नहीं लगाते तो राष्ट्रव्यापी हड़ताल की जाएगी।

रूस में भी मजदूरों नेशानदार प्रदर्शन किया। मास्कों में लगभग 1,50,000 मजदूर **लेनिन और स्टालिन** की आदमकद तस्वीरों, सोवियत रूस के झण्डे और समाजवादी रूस के अन्य प्रतीकों के साथ सड़क पर उतर आए। इस प्रदर्शन ने रूसी जनता कि दिलो-दिमाग में पुराने गौरवशाली दिनों की यादें ताजा कर दीं।

ऑस्ट्रेलिया में पुलिस ने मजदूरों के प्रदर्शन के दमन का प्रयास किया। वहां पांच सौ मजदूरों ने एक कम्पनी के दफ्तर पर कब्जा कर लिया।

क्यूबा में दस लाख लोगों ने अमेरिका की साम्राज्यवादी नीति और लातिन अमेरिका में बैठे उसके लग्गू-भग्गुओं के विरोध में जुलूस निकाला। हांगकांग में 500 पाइलटों और फिलिपीनो घरेलू नौकरानियों ने न्यूनतम तनख्वाह तय किये जाने की मांग करते हुए रैली निकाली। उन्होंने अमीर और गरीब के बीच की खाई को खत्म करने की मांग की।

इण्डोनेशिया में हजारों मजदूरों ने मई दिवस को राष्ट्रीय अवकाश घोषित करने की मांग करते हुए रैली निकाली। उन्होंने मांग की कि निम्नतम वेतन को बढ़ाया जाए। अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष के ईंधन और बिजली पर से सब्सिडी हटाने के सुझाव का उन्होंने विरोध किया।

मलेशिया में पुलिस ने बर्बरता के साथ दमन किया और सैकड़ों मजदूरों को रैली करने से पहले ही गिरफ्तार कर लिया। **फिलिप्पीन्स** में हजारों प्रदर्शनकारी तख्तापलट की अफवाहों के बीच पुलिस से टकराए। **सिंगापुर** में दो सरकार विरोधी नेताओं को राष्ट्रपति भवन के बाहर गरीबी-विरोधी भाषण देने के प्रयास में गिरफ्तार कर लिया गया। **टर्की** में चालीस से पचास हजार मजदूर हस्ताम्बुल की सड़कों पर मई दिवस मनाने उतर आए। कुछ फिलिस्तीनी छात्र-युवा आन्दोलन के समर्थन में फिलिस्तीनी झण्डा लहरा रहे थे तो कुछ सरकार की आई.एम.एफ. और विश्व बैंक द्वारा संचालित मजदूर-विरोधी नीतियों के खिलाफ तख्तियां हाथ में लिए थे। पुलिस को प्रदर्शन तोड़ने के असफल प्रयास में बख्तरबन्द गाड़ियों तक का इस्तेमाल करना पड़ा।

मुद्रक, प्रकाशक और स्वामी डा. दूधनाथ द्वारा 69, बाबा का पुरवा, निशातगंज, लखनऊ से प्रकाशित एवं उन्हीं के द्वारा वाणी ग्राफिक्स, अलीगंज, लखनऊ से मुद्रित। कम्पोजिंग : कम्प्यूटर प्रधान, राहुल फाउण्डेशन, लखनऊ।
संपादक मण्डल : डा. दूधनाथ, मुकुल। सम्पादकीय पता : 69, बाबा का पुरवा, पेपर मिल रोड, निशातगंज, लखनऊ-226006, सम्पादकीय उपकार्यालय : जनगण होम्यो सेवासदन, मर्यादपुर, मऊ।